नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

# परिवहन विशेष

वर्ष 04, अंक 212, नई दिल्ली, मंगलवार 10 नवम्बर 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र




● 03 संयुक्त अंक 13 – जिम्मेदारी, संघर्ष और परिवर्तन का कर्मिक अंकः
● 06 मृत्यु के बाद के सात मिनटः क्या इंसान अपने प्रियजनों की आवाज़ें सुन
● 08 गोवर्धन पूजा - जब गोबर में भगवान दिखे और अन्न में आशीर्वाद मिला

परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक - विशेष संपादकीय / दिल्ली प्रदूषण विशेष / परिवहन एवं पर्यावरण

# दिल्ली में अब हर साल सर्दियों में बाहरी BS-IV और उससे नीचे के वाहनों पर रोक - 1 नवंबर से 31 जनवरी तक नो एंट्री, BS-VI से नीचे के वाहन दिल्ली में नहीं चलेंगे

## दिल्ली सरकार का विंटर एक्शन प्लान - हर साल 1 नवंबर से 31 जनवरी तक दूसरे राज्यों के BS-IV और नीचे के वाहनों पर प्रतिबंध I GRAP-3 लागू, 250 प्रवर्तनकर्मी बॉर्डर पर तैनात, CNG और इलेक्ट्रिक वाहनों को छूट

परिवहन विशेष न्यूज

**नई दिल्ली** - दिल्ली की जहरीली हवा से लड़ने के लिए दिल्ली सरकार ने बड़ा और स्थायी फैसला लिया है। अब यह रोक सिर्फ इस साल के लिए नहीं होगी।

दिल्ली सरकार ने शनिवार को कहा कि वह हर साल 1 नवंबर से 31 जनवरी तक दूसरे राज्यों / केंद्र शासित प्रदेशों में रजिस्टर्ड BS-VI से नीचे के उत्सर्जन मानक वाले वाहनों पर प्रतिबंध लागू करेगी।

यह वह समय होता है, जब दिल्ली की हवा सबसे ज्यादा खराब होती है। सर्दियों में धुंध, पराली का धुआं, वाहनों का धुआं और धूल मिलकर दिल्ली को गैस चैंबर बना देते हैं। इसी को रोकने के लिए सरकार ने अपने विंटर एक्शन प्लान के तहत यह कदम उठाया है।

**तथ्य एक नज़र में - बिंदु - विवरण**

| | |
|---|---|
| **घोषणा** | दिल्ली परिवहन विभाग की सार्वजनिक अधिसूचना, शनिवार को जारी |
| **प्रतिबंध अवधि** | हर साल 1 नवंबर से 31 जनवरी तक |
| **किस पर रोक** | दूसरे राज्यों में रजिस्टर्ड BS-IV और उससे नीचे के वाहन |
| **लागू कब से** | 1 नवंबर 2026 से प्रभावी |
| **किस पर लागू** | कमर्शियल मालवाहक वाहन - LGV, MGV, HGV और बसें |
| | शामिल ऑल इंडिया टूरिस्ट परमिट और अन्य सेवा व्यवस्था के तहत चलने वाली बसें भी |
| **प्रवर्तन** | लगभग 250 प्रवर्तनकर्मी प्रमुख एंट्री पॉइंट, टोल प्लाजा और प्रदूषण हॉटस्पॉट पर तैनात |
| **छूट** | CNG और इलेक्ट्रिक वाहनों को छूट |
| | साथ में CAQM ने दिल्ली-NCR में GRAP का स्टेज-3 लागू किया |
| **उद्देश्य** | vehicular emission घटाना, सड़कों पर धूल रोकना, सर्दियों में प्रदूषण पर लगाम |

**मुख्य बिंदु**

1. हर साल का नियमः अब हर साल 1 नवंबर से 31 जनवरी तक दूसरे राज्यों के BS-IV और नीचे के वाहन दिल्ली में नहीं चल सकेंगे।

2. मालवाहक और बसों पर सख्तीः LGV, MGV, HGV और बसों पर विशेष रोक। टूरिस्ट परमिट वाली बसें भी इसमें शामिल हैं।

3. बॉर्डर पर कड़ा पहराः DND, राजोकरी-NH 48, गाजीपुर, सिंघु बॉर्डर, टिकरी, बदरपुर सहित प्रमुख टोल प्लाजा पर 250 प्रवर्तनकर्मी तैनात।

4. CNG और इलेक्ट्रिक को छूटः CNG या इलेक्ट्रिक से चलने वाले वाहन इस प्रतिबंध से बाहर हैं।

5. पड़ोसी राज्यों को पत्रः दिल्ली ने पंजाब, उत्तर प्रदेश और हिमाचल प्रदेश को पत्र लिखकर डीजल से BS-6 / इलेक्ट्रिक पर शिफ्ट होने का आग्रह किया है।

6. GRAP-3 लागूः वायु गुणवत्ता बिगड़ने पर वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM) ने दिल्ली-NCR में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान का स्टेज-3 लागू किया है।

**भाग 1 - क्या है नया नियम? आसान भाषा में समझिए दिल्ली परिवहन विभाग की अधिसूचना के अनुसार:**

>"हर साल, 1 नवंबर से 31 जनवरी तक, दूसरे राज्य में रजिस्टर्ड BS-IV और नीचे के वाहन दिल्ली में नहीं चल सकेंगे।"

**1 नवंबर 2026 से:**

- कमर्शियल गुड्स वाहन - लार्ज गुड्स वाहन (LGV), मीडियम गुड्स वाहन (MGV), हैवी गुड्स वाहन (HGV)
- बसें - चाहे वे किसी भी सेवा व्यवस्था में चल रही हों
- ऑल इंडिया टूरिस्ट परमिट (AITP) वाली बसें भी

इन सभी को दिल्ली में प्रवेश की अनुमति नहीं होगी, अगर वे BS-IV या उससे नीचे के मानक वाले हैं।

**किस पर रोक नहीं है?**

- दिल्ली में रजिस्टर्ड वाहन - इस अधिसूचना में विशेष रूप से बाहरी राज्यों के वाहनों की बात है
- CNG वाहन - छूट
- इलेक्ट्रिक वाहन - छूट
- BS-VI वाहन - चल सकते हैं

**संपादकीय टिपः** अगर आप ट्रांसपोर्टर हैं, टूर ऑपरेटर हैं या दूसरे राज्य से दिल्ली में सामान लेकर आते हैं, तो पहले अपने वाहन का BS मानक जांच लें। RC पर BS-VI लिखा है या नहीं, यह देख लें।

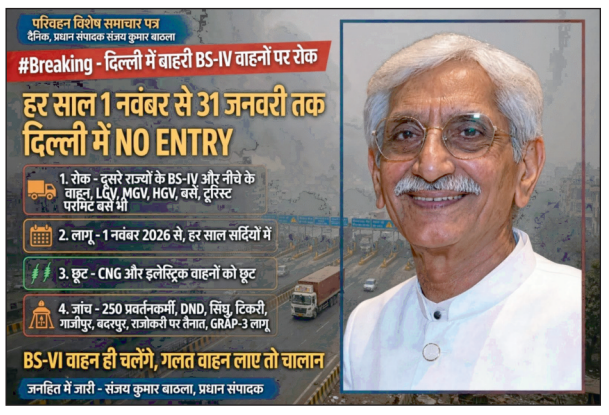
भाग 2 - BS-IV और BS-VI में क्या फर्क है? क्यों जरूरी है यह रोक? BS का मतलब है - भारत स्टेज (Bharat Stage)। यह वाहन से निकलने वाले प्रदूषण का मानक है।

**मानक क्या है**

BS-IV पुराना मानक, ज्यादा सल्फर, ज्यादा NOx और PM (कण) छोड़ता है

BS-VI नया, सख्त मानक, BS-IV के मुकाबले प्रदूषण में 70-80% तक कमी

BS-IV डीजल वाहन से निकलने वाला धुआं दिल्ली की सर्दियों की हवा को




और ज्यादा जहरीला बनाता है। BS-VI वाहन में एडवांस फिल्टर, बेहतर इंजन और कम सल्फर वाला ईंधन होता है, जिससे धुआं काफी कम निकलता है।

दिल्ली सरकार का तर्क है - जब दिल्ली के अपने वाहन BS-VI की ओर बढ़ रहे हैं, तो बाहर से आने वाले पुराने, ज्यादा प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों को भी रोकना जरूरी है।

भाग 3 - बॉर्डर पर कैसे होगी जांच? अधिकारियों के अनुसार, परिवहन विभाग ने राष्ट्रीय राजधानी में प्रमुख एंट्री पॉइंट, टोल प्लाजा और प्रदूषण हॉटस्पॉट पर लगभग 250 प्रवर्तनकर्मी तैनात किए हैं।

**प्रमुख तैनाती स्थलः**

- DND - दिल्ली-नोएडा डायरेक्ट फ्लाईवे
- राजोकरी - NH 48 - गुरुग्राम की ओर से आने वाला मुख्य मार्ग
- गाजीपुर - यूपी बॉर्डर
- सिंघु बॉर्डर - हरियाणा-पंजाब की ओर से आने वाला मार्ग
- टिकरी - हरियाणा बॉर्डर
- बदरपुर - फरीदाबाद की ओर से आने वाला मार्ग
- अन्य टोल प्लाजा और हॉटस्पॉट

यहां वाहन के RC, परमिट, PUC और BS मानक की जांच की जाएगी। नियम तोड़ने पर चालान, वाहन जब्ती और दिल्ली में प्रवेश से रोक - तीनों हो सकते हैं।

भाग 4 - GRAP-3 क्या है? क्यों लागू हुआ? वायु गुणवत्ता बिगड़ने के साथ, वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM) ने दिल्ली-NCR में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (GRAP) के तहत स्टेज-3 के आपातकालीन उपाय लागू किए हैं।

**GRAP का मतलब है - प्रदूषण के स्तर के हिसाब से कदम उठाना।**

**स्टेज-3 में आम तौर पर:**

- निर्माण और तोड़फोड़ पर रोक
- BS-III पेट्रोल और BS-IV डीजल (LMV) पर प्रतिबंध
- कूड़ा जलाने पर सख्ती
- सड़कों पर पानी का छिड़काव बढ़ाना
- स्कूलों में ऑनलाइन कक्षा पर विचार

दिल्ली सरकार का BS-IV बाहरी वाहनों पर प्रतिबंध इसी GRAP-3 की भावना के अनुरूप है - सर्दियों में प्रदूषण को और बिगड़ने से रोकना।

**भाग 5 - ट्रांसपोर्टरों, व्यापारियों और आम लोगों पर क्या असर पड़ेगा?**

1. ट्रांसपोर्टर और ट्रक मालिकः दूसरे राज्यों से दिल्ली आने वाले पुराने ट्रकों को दिल्ली बॉर्डर पर रोका जाएगा। उन्हें या तो BS-VI वाहन पर शिफ्ट होना होगा, या CNG / इलेक्ट्रिक में बदलना होगा, या दिल्ली के बाहर ही माल उतारकर छोटे BS-VI / CNG वाहन से दिल्ली में भेजना होगा।

2. टूरिस्ट बस ऑपरेटरः ऑल इंडिया टूरिस्ट परमिट वाली BS-IV बसें भी दिल्ली में नहीं आ सकेंगी। शादी, पर्यटन और स्कूल ट्रिप के लिए बस बुक करने से पहले BS मानक जरूर पूछें।

3. व्यापारी और दुकानदारः सामान की ढुलाई महंगी हो सकती है। समय पर डिलीवरी के लिए पहले से योजना बनाएं।

4. आम यात्रीः अगर आप दूसरे राज्य से अपनी पुरानी BS-IV कार से दिल्ली आ रहे हैं, तो 1 नवंबर से 31 जनवरी तक दिल्ली में प्रवेश पर रोक लग सकती है। मेट्रो, बस, CNG टैक्सी या BS-VI वाहन का उपयोग करें।

5. दिल्ली के लोगों के लिए फायदाः बाहरी पुराने वाहनों के धुएं में कमी से दिल्ली की हवा में थोड़ी राहत मिलेगी। यह स्थायी समाधान नहीं है, लेकिन सर्दियों में प्रदूषण के पीक को कम करने में मदद करेगा।

**भाग 6** - पड़ोसी राज्यों को दिल्ली का पत्र परिवहन विभाग ने पड़ोसी राज्यों - पंजाब, उत्तर प्रदेश और हिमाचल प्रदेश - को पत्र लिखकर आग्रह किया है कि वे इलेक्ट्रिक वाहनों की ओर शिफ्ट हों या डीजल से BS-6 में बदलें।

इसका मतलब है - दिल्ली अकेले प्रदूषण नहीं रोक सकती। दिल्ली की हवा पंजाब, हरियाणा, यूपी से भी आती है। इसलिए क्षेत्रीय सहयोग जरूरी है।

**भाग 7 - क्या करें?** आम जनता और वाहन मालिकों के लिए गाइड

अगर आपका वाहन BS-IV या नीचे का है और दूसरे राज्य में रजिस्टर्ड हैः

- 1 नवंबर से 31 जनवरी तक दिल्ली में प्रवेश न करें
- CNG / इलेक्ट्रिक / BS-VI वाहन का उपयोग करें
- दिल्ली के बाहर ट्रांसशिपमेंट (माल बदलना) की व्यवस्था करें

**अगर आप ट्रांसपोर्टर हैंः**

- अपने फ्लीट का ऑडिट करें - कितने वाहन BS-IV हैं, कितने BS-VI
- BS-VI / CNG / EV में अपग्रेड की योजना बनाएं
- दिल्ली के ग्राहकों को पहले से सूचित करें

अगर आप दिल्ली के निवासी हैंः

- अपने वाहन का PUC समय पर कराएं
- सर्दियों में सार्वजनिक परिवहन का अधिक उपयोग करें
- कूड़ा न जलाएं, निर्माण धूल पर पानी का छिड़काव कराएं

**संपादकीय निष्कर्ष** दिल्ली का प्रदूषण सिर्फ दिल्ली की समस्या नहीं है। यह पूरे NCR की, पूरे उत्तर भारत की समस्या है।

सरकार का यह फैसला कड़ा है, लेकिन जरूरी है। हर साल सर्दियों में दिल्ली के अस्पतालों में अस्थमा, सांस और दिल के मरीज बढ़ जाते हैं। बच्चों और बुजुर्गों को सबसे ज्यादा तकलीफ होती है।

लेकिन सिर्फ रोक से काम नहीं चलेगा। जरूरत हैः

- सस्ते BS-VI / CNG / EV वाहनों की उपलब्धता की
- ट्रांसपोर्टरों को सहायता और स्क्रैप नीति की
- पड़ोसी राज्यों के साथ मिलकर पराली, कूड़ा जलाने और धूल पर रोक की
- सार्वजनिक परिवहन - मेट्रो, बस को और मजबूत करने की

**परिवहन विशेष की अपीलः** वाहन मालिक नियमों का पालन करें, प्रवर्तनकर्मियों से सहयोग करें और सर्दियों में दिल्ली की हवा को साफ रखने में अपना योगदान दें।

**स्रोतः** दिल्ली परिवहन विभाग की सार्वजनिक अधिसूचना, दिल्ली सरकार का विंटर एक्शन प्लान, CAQM द्वारा GRAP स्टेज-3 की घोषणा, अधिकारियों के बयान के आधार पर।

***- संजय कुमार बाठला, प्रधान संपादक, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक***

परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक - विशेष रिपोर्ट / दिल्ली / दीपावली विशेष

# दीपावली की रात दिल्ली में 257 इमरजेंसी कॉल - 214 आग की घटनाएं, 24 पटाखों से जुड़ीं, दमकलकर्मी रातभर फ्रंटलाइन पर डटे रहे




DFS चीफ अभिलाष कुमार मलिक ने दिए आंकड़े | 6 आम नागरिक और 5 दमकलकर्मी घायल | आग की घटनाओं में कोई मौत नहीं | एक अलग मामले में सड़ी-गली लाश मिलने की सूचना

रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

**नई दिल्ली** - दीपावली की रात जब पूरा दिल्ली रोशनी और पटाखों में डूबा था, तब दिल्ली दमकल सेवा के जवान जान हथेली पर लेकर शहर को बचा रहे थे। दीपावली के दिन से आधी रात तक दिल्ली फायर सर्विसेज को कुल 257 इमरजेंसी कॉल मिलीं।

यह रात दमकलकर्मियों के लिए सबसे चुनौतीपूर्ण रातों में से एक रही।

**तथ्य एक नज़र में - बिंदु - विवरण**

| | |
|---|---|
| कुल इमरजेंसी कॉल | 257 |
| आग से जुड़ी घटनाएं | 214 |
| पटाखों से जुड़ी कॉल | 24 |
| घायल आम नागरिक | 6 |
| घायल दमकलकर्मी | 5 |
| **आग से मौत** | 0 - कोई मौत नहीं |
| **अलग मामला** | एक जगह सड़ी-गली लाश मिलने की सूचना |
| **स्रोत** | DFS चीफ अभिलाष कुमार मलिक |

**मुख्य बिंदु**

**1. 257 कॉल - मतलब हर कुछ मिनट में एक कॉलः** दीपावली के दिन से आधी रात तक कंट्रोल रूम में फोन बजता रहा। 257 कॉल में से 214 सिर्फ आग की थीं।

**2. 24 कॉल पटाखों की वजह सेः**

पटाखों की वजह से 24 जगह आग लगी। यही बताता है कि पटाखे सिर्फ प्रदूषण नहीं करते, जान-माल के लिए भी खतरा हैं।

**3. 6 नागरिक घायलः** आग की घटनाओं में 6 आम नागरिक घायल हुए। समय पर दमकल पहुंचने से बड़ी अनहोनी टल गई।

**4. 5 दमकलकर्मी भी घायलः**

अपनी जान बचाकर दूसरों की जान बचाने वाले 5 दमकलकर्मी भी इस दौरान घायल हुए। ये ही असली हीरो हैं।

**5. आग से कोई मौत नहीं** - ये बड़ी राहतः सबसे बड़ी राहत की बात ये है कि आग की किसी भी घटना में सीधे तौर पर कोई मौत नहीं हुई। ये दमकल विभाग की तत्परता का सबूत है।

भाग 1 - दीपावली की रात क्या हुआ? दीपावली की रात दिल्ली में दो तस्वीरें थीं।

एक तरफ घरों में दीये, मिठाई, खुशियां।

दूसरी तरफ सड़कों पर आग की लपटें, धुआं, और सायरन की आवाज।

DFS चीफ अभिलाष कुमार मलिक के अनुसार, दीपावली के दिन से आधी रात तक कुल 257 इमरजेंसी कॉल आईं। इनमें से 214 आग से जुड़ी थीं।

मतलब, हर 2-3 मिनट में कहीं न कहीं आग लगने की सूचना आ रही थी।

भाग 2 - पटाखे कितने खतरनाक साबित हुए? 24 कॉल सीधे तौर पर पटाखों से जुड़ी थीं।

पटाखा छोटा लगता है, लेकिन जब वो कूड़े में, कपड़े में, दुकान में या घर की बालकनी में गिरता है तो बड़ी आग बन जाता है।

इस बार भी यही हुआ। कई जगहों पर पटाखों से आग लगी, लेकिन दमकलकर्मियों ने समय रहते काबू पा लिया।

भाग 3 - एक अलग दुखद मामला भी सामने आया इसी रात एक अलग मामले में एक जगह सड़ी-गली लाश मिलने की सूचना भी मिली।

यह मामला आग की घटनाओं से सीधे तौर पर जुड़ा नहीं था। पुलिस इस मामले की अलग से जांच कर रही है।

इसलिए यह कहना गलत होगा कि दीपावली की आग में किसी की मौत हुई। आग से कोई मौत नहीं हुई, यह आधिकारिक आंकड़ा है।

भाग 4 - असली हीरो कौन? दीपावली की रात जब लोग अपने परिवार के साथ थे, तब दमकलकर्मी अपनी जान जोखिम में डालकर दूसरों के घर बचा रहे थे।

5 दमकलकर्मी घायल हुए, फिर भी पीछे नहीं हटे।

वे रातभर फ्रंटलाइन पर डटे रहे - जान और माल की रक्षा के लिए।

दिल्ली को उन पर गर्व होना चाहिए।

**संपादकीय टिप्पणी** - सम्मान दिल्ली फायर सर्विसेज को परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक का मानना है कि दीपावली सिर्फ दीये जलाने का त्योहार नहीं है, जिम्मेदारी निभाने का भी त्योहार है।

**आज संकल्प लें -**

- पटाखे ऐसी जगह न चलाएं जहां आग लगने का खतरा हो
- बच्चों को अकेले पटाखे न चलाने दें
- घर में पानी / बालू / फायर एक्सटिंग्विशर रखें
- आग लगते ही 101 / 112 पर कॉल करें, वीडियो बनाने में समय न गंवाएं

दिल्ली फायर सर्विसेज के बहादुर जवानों को सलाम।

आपकी सेवा और समर्पण को नमन।

**- संजय कुमार बाठला, प्रधान संपादक, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक**

# फुटपाथ कब्जे में 'राइट टू वॉक' सिर्फ कागज पर जमीन पर नहीं। सड़क पर पैदल चलना भीख नहीं, संविधान प्रदत्त मौलिक अधिकार है

संविधान, सुप्रीम कोर्ट जवाब दे :- फुटपाथ पर हक किसका ?

पिंकी कुंडू, सह-संपादक परिवहन विशेष

जब फुटपाथ पर चलना ही जान जोखिम में डालना बन जाए, तो समझिए शहर कारों के लिए बना है, इंसानों के लिए नहीं। अब इस बहस को माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने 19 जून 2026 के ऐतिहासिक फैसले से खत्म कर दिया है।

**भाग-1:** संविधान आपको क्या अधिकार देता है? पैदल चलने का अधिकार किसी सरकारी योजना की देन नहीं, भारत के संविधान की आत्मा में लिखा है।

**1. अनुच्छेद 19(1)(d) - सर्वत्र भ्रमण का अधिकार**

* संविधान कहता है - सभी नागरिकों को भारत के राज्यक्षेत्र में सर्वत्र अबाध रूप से भ्रमण करने का अधिकार होगा।

* सुप्रीम कोर्ट ने इसकी व्याख्या करते हुए कहा है कि भ्रमण का अर्थ केवल एक शहर से दूसरे शहर जाना नहीं है। अपनी गली, अपनी सड़क पर सुरक्षित चलना भी इसी में शामिल है। अगर फुटपाथ नहीं है, तो आपका 19(1)(d) का अधिकार अधूरा है।

**2. अनुच्छेद 21** - प्राण और दैहिक स्वतंत्रता का अधिकार यह सबसे बड़ा आधार है। अनुच्छेद 21 कहता है - किसी व्यक्ति को उसके प्राण या दैहिक स्वतंत्रता से विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया के बिना वंचित नहीं किया जाएगा। सुप्रीम कोर्ट ने अनेक फैसलों में 21 का विस्तार किया हैः

- जीवन का अर्थ केवल सांस लेना नहीं, गरिमापूर्ण और सुरक्षित जीवन है।
- जब नगर निगम टूटा फुटपाथ, अंधेरा रास्ता और बिना क्रॉसिंग की सड़क देता है, तो वह आपको रोज मौत के मुंह में धकेल रहा है। यह सीधे अनुच्छेद 21 का उल्लंघन है।

**3. अनुच्छेद 19(1)(a) और 19(1)(g)** से जुड़ाव पैदल चलना ही आपको बाजार, स्कूल, काम और सार्वजनिक स्थलों तक पहुंचाता है। फुटपाथ नहीं होगा तो आपकी आजीविका [19(1)(g)] और अभिव्यक्ति व आवागमन [19(1)(a)] दोनों बाधित होंगे।

**4. राज्य के नीति निदेशक तत्व और 12वीं अनुसूची**

- अनुच्छेद 38: राज्य ऐसी सामाजिक व्यवस्था बनाएगा जिससे असमानता घटे। कार वाले के लिए 6 लेन और पैदल वाले के लिए 0 लेन - यह सबसे बड़ी असमानता है।
- अनुच्छेद 243(W) और 12वीं अनुसूचीः सड़कें, फुटपाथ, लोक निर्माण, सार्वजनिक सुविधा - यह सीधे नगरपालिकाओं का संवैधानिक कर्तव्य है। यह वैकल्पिक काम नहीं है।

**भाग-2: न्यायपालिका ने क्या-क्या कहा है? - केस दर केस**

**क. आधार बनाने वाले पुराने फैसलेः**

1. ओल्गा टेलिस बनाम बॉम्बे म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन (1985) - फुटपाथ पर रहने वालों के मामले में भी कोर्ट ने कहा था, फुटपाथ सार्वजनिक संपत्ति है, लेकिन उसका मूल उद्देश्य पैदल यात्रियों का अधिकार है।

2. फ्रांसिस कोराली मुल्लिन बनाम दिल्ली प्रशासन (1981) - जस्टिस पी.एन. भगवती ने कहा - अनुच्छेद 21 में गरिमा के साथ जीने का अधिकार शामिल है, जिसमें सुरक्षित आवागमन भी है।

3. कंज्यूमर एजुकेशन एंड रिसर्च सेंटर केस (1995) - कोर्ट ने सड़कों को आर्टिकल 21 के तहत जीवन रेखा माना।

ख. निर्णायक फैसला - 19 जून 2026 यह मामला हरियाणा के एक 5 वर्षीय बच्चे की मौत से जुड़ा था। जांच में पाया गया - न फुटपाथ था, न स्पीड ब्रेकर, न जेब्रा क्रॉसिंग। ट्रक ने सड़क किनारे चल रहे बच्चे को कुचल दिया।

इस पर जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस के.वी. विश्वनाथन की पीठ ने जो आदेश दिया, वह भारत में 'राइट टू वॉक' का नया संविधान बन गया:




**मुख्य बिंदुः**

**1. अधिकार की घोषणाः** "सुरक्षित, बाधारहित, छायादार और सर्वसुलभ फुटपाथ पर चलना अनुच्छेद 19(1)(d) और 21 के तहत मौलिक अधिकार है।"

**2. सरकार की जिम्मेदारी तयः**

* फुटपाथ बनाना सुविधा नहीं, वैधानिक दायित्व है।

* भारतीय सड़क कांग्रेस (IRC) के मानक IRC:103-2012 के अनुसार न्यूनतम 1.8 मीटर चौड़ा, दिव्यांग-अनुकूल फुटपाथ हर शहरी सड़क पर अनिवार्य होगा।

3. अतिक्रमण को अपराध मानाः फुटपाथ पर स्थायी/अस्थायी अतिक्रमण, अवैध पार्किंग को नागरिक के मौलिक अधिकार का हनन माना जाएगा और संबंधित अधिकारी [JE, EO, ट्रैफिक पुलिस] व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार होंगे।

4. राष्ट्रीय दिशा-निर्देशः कोर्ट ने केंद्र को 6 महीने में National Pedestrian Policy और सभी राज्यों को Right to Walk Rules बनाने का आदेश दिया।

5. दिल्ली मास्टर प्लान-2047 को मॉडल बनायाः कोर्ट ने कहा - दिल्ली का प्रस्तावित सिटीवाइड वॉक नेटवर्क, पेलिकन क्रॉसिंग, मल्टी-यूटिलिटी जोन [पेयजल, शौचालय, बैठने की जगह, वेंडर जोन] और 24 घंटे सक्रिय क्षेत्रों में पैदल-केवल सड़कें, पूरे देश में लागू हों।

**भाग-3: आपका अधिकार छीना जाए तो आप क्या कर सकते हैं? यह जानकारी जनहित में है:**

1. अनुच्छेद 226 / 32 के तहत रिटः हाईकोर्ट/सुप्रीम कोर्ट में जनहित याचिका दायर कर सकते हैं। फुटपाथ पर कब्जा मौलिक अधिकार के हनन के आधार पर चुनौती योग्य है।

2. नगर निगम अधिनियम के तहत शिकायतः दिल्ली नगर निगम अधिनियम 1957 की धारा 317-325, या आपके राज्य के नगरपालिका अधिनियम में फुटपाथ को सार्वजनिक सड़क का हिस्सा माना गया है। अतिक्रमण हटाना निगम का बाध्यकारी कर्तव्य है।

3. मोटर यान अधिनियम 1988, धारा 138 और 184: फुटपाथ पर वाहन चलाना या पार्क करना दंडनीय अपराध है।

4. दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016, धारा 40-46: सभी फुटपाथों पर रैंप, टेक्टाइल पाथ, रेलिंग अनिवार्य है। न होना कानून का उल्लंघन है।

**निष्कर्षः** फुटपाथ बचाना ही संविधान बचाना है सुप्रीम कोर्ट ने साफ कर दिया है - विकास का अर्थ फ्लाईओवर गिनना नहीं है। विकास वह है जहाँ एक स्कूली बच्चा, एक व्हीलचेयर पर बैठा व्यक्ति, एक बुजुर्ग महिला बिना किसी से रास्ता मांगे, बिना सड़क पर उतरे, अपने गंतव्य तक पहुंच सके।

**इसलिए**

- हर सड़क परियोजना के बजट का न्यूनतम 25% पैदल अवसंरचना के लिए आरक्षित हो।
- फुटपाथ का थर्ड पार्टी ऑडिट हो।
- हर वार्ड में नागरिक वॉक-ऑडिट कमेटी बने।

क्योंकि जब तक फुटपाथ कब्जे में हैं, तब तक 'राइट टू वॉक' सिर्फ कागज पर है, जमीन पर नहीं।




# उत्तर और पूर्व से आगे घर चुनते समय वास्तव में क्या महत्वपूर्ण है : पहला लेख: नवंबर श्रृंखला – खरीदने से पहले

## "क्या घर उत्तरमुखी है या पूर्वमुखी?"

कई परिवारों के लिए घर की तलाश करते समय यही पहला प्रश्न होता है। मनचाहा उत्तर मिलते ही उनकी रुचि बढ़ जाती है। यदि संपत्ति दक्षिणमुखी या पश्चिममुखी हो, तो अक्सर झिझक पैदा हो जाती है—इससे पहले कि कोई कमरों को देखे, नक्शे को समझे या आसपास के वातावरण पर ध्यान दे।

यह पसंद इतनी प्रचलित है कि कभी-कभी केवल दिशा का नाम ही खरीदने के निर्णय पर संपत्ति की वास्तविक विशेषताओं से अधिक प्रभाव डाल देता है। लेकिन क्या उत्तरमुखी प्रवेश द्वार होने से कोई घर अपने आप उपयुक्त हो जाता है? क्या पश्चिममुखी अपार्टमेंट को अधिक जाँच किए बिना ही अस्वीकार कर देना चाहिए?

पारंपरिक वास्तु किसी संपत्ति के भीतर विभिन्न हिस्सों के आपसी संबंधों का अध्ययन करता है। मुख की दिशा इस आकलन का एक पहलू है। किसी घर को सही अर्थों में समझने के लिए उसके प्रवेश द्वार, समग्र आकार, आंतरिक व्यवस्था, खुले स्थानों और आसपास के वातावरण को एक साथ देखना आवश्यक है।

अपनी नवंबर श्रृंखला की शुरुआत करते हुए आइए, प्रचलित धारणाओं से आगे बढ़ें और एक अधिक उपयोगी प्रश्न पूछें। किसी संपत्ति को अपना घर चुनने से पहले हमें उसके बारे में वास्तव में क्या समझना चाहिए?

**मुख की दिशा का वास्तविक अर्थ क्या है**

किसी दिशा की उपयुक्तता तय करने से पहले यह स्पष्ट करना जरूरी है कि उस विवरण में किस हिस्से की दिशा बताई जा रही है।

कोई बिल्डर किसी अपार्टमेंट को पूर्वमुखी इसलिए कह सकता है क्योंकि उसकी मुख्य बालकनी पूर्व की ओर खुलती है। कोई ब्रोकर यही शब्द ऐसे फ्लैट के लिए इस्तेमाल कर सकता है जिसका प्रवेश द्वार पूर्व की ओर है। वहीं कोई अन्य व्यक्ति इमारत के बाहर की सड़क की दिशा बता रहा हो सकता है।

**ये सभी अलग-अलग विशेषताएँ हैं।**

इमारत का मुख्य द्वार, अपार्टमेंट का प्रवेश द्वार और उसकी प्रमुख बालकनी अलग-अलग दिशाओं की ओर हो सकते हैं। स्पष्ट आकलन में इन सभी को अलग-अलग दर्ज किया जाता है।

प्रवेश द्वार के मुख की दिशा बताते समय एक प्रचलित तरीका यह है कि व्यक्ति घर के भीतर खड़ा होकर उस द्वार से बाहर की ओर देखे। जिस दिशा की ओर उसका मुख हो, उसे प्रवेश द्वार की दिशा माना जाता है। फिर भी आकलन करने वाले व्यक्ति से अपनाई गई पद्धति और संपत्ति के विवरण का अर्थ स्पष्ट कर लेना चाहिए।

इस स्पष्टता के बिना खरीदार अलग-अलग मानकों पर आधारित जानकारी से संपत्तियों की तुलना कर सकते हैं।

**केवल दिशा पूरे घर का परिचय नहीं दे सकती**

कल्पना कीजिए कि दो अपार्टमेंट के विज्ञापन में दोनों को उत्तरमुखी बताया गया है।

पहले में संतुलित आकार के कमरे, सुविधाजनक आवाजाही, उपयोगी खिड़कियाँ और ऐसा प्रवेश द्वार है जो एक स्वागतपूर्ण बैठक में खुलता है। दूसरे में संकरे रास्ते, असुविधाजनक कोने, सीमित वेंटिलेशन और ऐसे कमरे हैं जिनमें आवश्यक फर्नीचर भी आराम से नहीं रखा जा सकता।

दोनों की दिशा एक ही बताई गई है, लेकिन उनकी आंतरिक योजना और रोजमर्रा के जीवन का अनुभव काफी अलग है।

पारंपरिक वास्तु में प्रवेश द्वार की स्थिति को अन्य महत्वपूर्ण स्थानों की व्यवस्था के साथ देखा जाता है। उत्तरमुखी प्रवेश द्वार होने से रसोई, शयनकक्ष, शौचालय, केंद्रीय भाग और पूरी संपत्ति की सीमाओं को समझने की आवश्यकता समाप्त नहीं होती।

यही तर्क दक्षिणमुखी और पश्चिममुखी घरों पर भी लागू होता है। उनका आकलन सटीक नक्शे और वास्तविक परिस्थितियों से शुरू होना चाहिए। सभी को एक साथ अस्वीकार कर देने से किसी विशेष संपत्ति की वास्तविक समझ नहीं बनती।




**प्रवेश द्वार को ध्यान से समझिए**

वास्तु में प्रवेश द्वार को विशेष महत्व दिया जाता है, क्योंकि यह बाहरी वातावरण और घर के उपयोग में आने वाले आंतरिक स्थान के बीच का संपर्क बिंदु है।

लेकिन विस्तृत पारंपरिक आकलन के लिए किसी प्रवेश द्वार को केवल 'उत्तर की ओर' कहना पर्याप्त रूप से सटीक नहीं हो सकता। कुछ वास्तु पद्धतियों में संपत्ति की परिधि को छोटे भागों में बाँटा जाता है, जिन्हें प्रायः पद कहा जाता है। प्रवेश द्वार की स्थिति की व्याख्या इन्हीं के अनुसार की जाती है। अलग-अलग विशेषज्ञों की पद्धतियों और व्याख्याओं में भिन्नता हो सकती है।

खरीदार के लिए व्यावहारिक सीख यह है कि वास्तविक नक्शे के आधार पर स्पष्ट व्याख्या माँगी जाए।

द्वार तक पहुँचने का रास्ता भी महत्वपूर्ण है। क्या वहाँ आसानी से पहुँचा जा सकता है? क्या दरवाजा पूरा खुलता है? क्या रास्ते में पर्याप्त रोशनी है? क्या परिवार का कोई बुजुर्ग सदस्य आराम से प्रवेश कर सकता है?

प्रवेश द्वार का दैनिक उपयोग सुविधाजनक होना चाहिए। उसकी पारंपरिक व्याख्या के साथ इन बातों को भी देखा जाना चाहिए।

**आकार और सीमाओं को समझिए**

संपत्ति का आकार इस बात को प्रभावित करता है कि उसके स्थानों की योजना कैसे बनेगी और उनका उपयोग किस प्रकार किया जा सकेगा।

पारंपरिक वास्तु सामान्यतः नियमित आकारों को प्राथमिकता देता है। वहीं स्पष्ट रूप से बाहर निकले हिस्सों, भीतर धँसे भागों या अनियमित सीमाओं का अधिक ध्यान से आकलन आवश्यक होता है। लेकिन खरीदारों को ब्रोशर में बनी अनुमानित तस्वीर के आधार पर संपत्ति का निर्णय नहीं करना चाहिए।

बालकनी, सेवा संबंधी पाइपों के लिए बना शाफ्ट या साझा गलियारा अपार्टमेंट की वास्तविक सीमा को लेकर भ्रम पैदा कर सकता है। माप और विश्वसनीय नक्शा यह स्पष्ट करने में मदद करते हैं कि कौन-सा हिस्सा घर में शामिल है।

स्वतंत्र भूखंड के मामले में आकार भवन द्वारा घिरे भूभाग, पहुँच मार्ग और उपयोग योग्य बाहरी स्थान को भी प्रभावित करता है। अपार्टमेंट में असुविधाजनक बाहरी रूपरेखा के कारण फर्नीचर रखना कठिन हो सकता है या आवाजाही बाधित हो सकती है।

उद्देश्य आकार के प्रभाव को समझना है, हर अनियमितता को भय पैदा करने वाला दोष घोषित करना नहीं।

**कमरों के आपसी संबंध को समझिए**

घर अपने विभिन्न हिस्सों के आपसी संबंधों के माध्यम से काम करता है।

प्रवेश द्वार कहाँ ले जाता है? किराने का सामान रसोई तक कितनी आसानी से पहुँच सकता है? क्या शयनकक्ष तक जाने के लिए किसी अन्य निजी कमरे से होकर गुजरना पड़ता है? क्या रात में स्नानघर तक जाने का रास्ता सुविधाजनक है?

पारंपरिक वास्तु में विभिन्न गतिविधियों को दिशात्मक क्षेत्रों में रखने का महत्व बताया गया है। उदाहरण के लिए, आग्नेय अर्थात दक्षिण-पूर्व दिशा को सामान्यतः अग्नि से जोड़ा जाता है, जबकि नैऋत्य अर्थात दक्षिण-पश्चिम दिशा को पारंपरिक रूप से स्थिरता से जोड़ा जाता है।

ये संबंध एक पारंपरिक ढाँचे का हिस्सा हैं। इन्हें लागू करने के लिए सटीक आंतरिक योजना और संपत्ति की समझ आवश्यक है।

इसलिए खरीदार को यह पूछना चाहिए कि अलग-अलग कमरे मिलकर किस प्रकार काम करते हैं। यदि आवाजाही, निजता और उपयोगिता पर पर्याप्त ध्यान न दिया जाए, तो प्रत्येक स्थान के लिए अलग-अलग पसंदीदा दिशा चुन लेने के बावजूद घर असुविधाजनक हो सकता है।

**घर के केंद्र पर उचित ध्यान दीजिए**

केंद्रीय भाग, जिसे पारंपरिक रूप से ब्रह्मस्थान कहा जाता है, वास्तु की व्याख्या में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

आधुनिक घरों, विशेषकर अपार्टमेंट में, इसे मौजूदा स्थापत्य व्यवस्था के संदर्भ में समझना चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं है कि हर घर में बीच में खाली आँगन होना आवश्यक है।

देखिए कि केंद्रीय हिस्से का उपयोग किस प्रकार हो रहा है। क्या वहाँ से आना-जाना सहज है? क्या अनावश्यक सामान रखने से रास्ता संकरा हो गया है? क्या जरूरत से बड़े फर्नीचर के कारण घर भरा हुआ लगता है?

स्थान के सोच-समझकर उपयोग से कुछ समस्याओं को दूर किया जा सकता है। अन्य विषय स्थायी निर्माण से जुड़े होते हैं। संरचनात्मक स्तंभों, बीम और दीवारों में किसी भी बदलाव पर विचार करने से पहले योग्य विशेषज्ञों से जाँच करानी चाहिए। किसी भी सुझाव में यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि इमारत के भीतर वास्तव में क्या संभव है।

**प्रकाश, हवा और आसपास के वातावरण को देखिए**

घर का आराम केवल उसके नक्शे पर निर्भर नहीं करता।

दिन के समय संपत्ति देखने जाइए। ध्यान दीजिए कि कमरों में प्राकृतिक प्रकाश आता है या नहीं, खिड़कियाँ उपयोगी ढंग से खुलती हैं या नहीं और पड़ोस की इमारतें निजता या हवा की आवाजाही को बाधित तो नहीं करतीं।

बाहर भी देखिए। व्यस्त सड़क, बार-बार होने वाला शोर, बाधित पहुँच मार्ग या खराब जल निकासी प्रवेश द्वार की दिशा चाहे जो हो, दैनिक जीवन को प्रभावित कर सकते हैं।

पारंपरिक वास्तु में व्यापक स्थल और परिवेश पर भी विचार किया जाता है, लेकिन स्वयं निरीक्षण करना आवश्यक है। हर कमरे में खड़े हों, खिड़कियाँ खोलें और आसपास की आवाजें सुनें।

जहाँ संभव हो, किसी दूसरे समय दोबारा जाएँ। कार्यदिवस की दोपहर में शांत लगने वाला अपार्टमेंट शाम के यातायात के दौरान अलग अनुभव दे सकता है।

वहाँ रहने वाले लोगों के अनुसार घर चुनिए

घर को उसमें रहने वालों की आवश्यकताएँ पूरी करनी चाहिए।

बुजुर्ग माता-पिता वाले परिवार के लिए सहज आवाजाही और स्नानघर तक सुविधाजनक पहुँच प्राथमिकता हो सकती है। किसी विद्यार्थी को पढ़ने के लिए शांत स्थान चाहिए हो सकता है। घर से काम करने वाले व्यक्ति को बातचीत या कॉल के दौरान निजता की जरूरत हो सकती है।

किसी कमरे की दिशा संबंधी पारंपरिक प्राथमिकता पर इन आवश्यकताओं के साथ विचार किया जाना चाहिए।

पूछिए कि उपलब्ध जगह आपके परिवार की दिनचर्या के अनुकूल है या नहीं। क्या सभी उसका आराम से उपयोग कर सकते हैं? क्या बदलती जरूरतों के लिए भी गुंजाइश है?

रोजमर्रा के उपयोग से ही कोई संपत्ति घर बनती है। उसमें रहने वाले लोगों को समझने से आकलन अधिक प्रासंगिक और व्यावहारिक बनता है।

**समझदारी के साथ निर्णय लीजिए**

घर चुनते समय विभिन्न प्राथमिकताओं के बीच संतुलन बनाना पड़ता है। स्थान, बजट के अनुकूल कीमत, निर्माण की गुणवत्ता, दस्तावेज, रखरखाव और परिवार की आवश्यकताएँ—सभी पर ध्यान देना चाहिए।

वास्तु को महत्व देने वाले पाठक इसके पारंपरिक सिद्धांतों को इस मूल्यांकन का हिस्सा बना सकते हैं। स्पष्ट तर्क, व्यावहारिक सुझाव और पूरी संपत्ति का आकलन माँगिए।

किसी घर को केवल उत्तरमुखी होने के कारण स्वीकार करने या दक्षिणमुखी होने के कारण अस्वीकार करने से पहले ठहरिए और उसे अधिक ध्यान से देखिए।

सही शुरुआत उस घर की सटीक समझ से होती है जिसे आप खरीदने पर विचार कर रहे हैं।

अगले लेख में हम घर के नक्शे को समझेंगे और जानेंगे कि आकर्षक आंतरिक सजावट मन मोह ले, उससे पहले खरीदारों को किन बातों पर ध्यान देना चाहिए।

# स्वस्थ दाँत और मजबूत मसूड़े – अच्छे पाचन एवं स्वस्थ जीवन की नींव




आजकल अनेक लोग 45–50 वर्ष की उम्र तक पहुँचते-पहुँचते दाँतों में कैविटी (सड़न), दाँतों की कमजोरी, मसूड़ों में संक्रमण और अन्य मौखिक समस्याओं से परेशान होने लगते हैं। परिणामस्वरूप उन्हें भोजन चबाने में कठिनाई होती है।

यह केवल मुँह या दाँतों की समस्या नहीं है, बल्कि धीरे-धीरे उनके पोषण, पाचन और संपूर्ण स्वास्थ्य को भी प्रभावित कर सकती है।

भोजन को अच्छी तरह चबाना पाचन प्रक्रिया का पहला और अत्यंत महत्वपूर्ण चरण है।

दाँत भोजन को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ते हैं और लार उसमें मौजूद एंजाइमों की सहायता से पाचन की प्रक्रिया शुरू करती है।

जब व्यक्ति दाँतों की समस्या के कारण भोजन ठीक से नहीं चबा पाता, तो वह कई बार नरम, आसानी से निगले जाने वाले लेकिन पोषण की दृष्टि से सीमित खाद्य पदार्थों पर निर्भर हो जाता है। इससे फाइबर, प्रोटीन, विटामिन और अन्य आवश्यक पोषक तत्वों का सेवन कम हो सकता है।

लंबे समय तक ऐसी स्थिति रहने पर निम्न समस्याओं का जोखिम बढ़ सकता है:

1. भोजन चबाने और निगलने में कठिनाई।
2. पौष्टिक एवं रेशेदार खाद्य पदार्थों का सेवन कम होना।
3. संतुलित आहार और पर्याप्त पोषण प्राप्त करने में परेशानी।
4. पाचन संबंधी असुविधाएँ और कब्ज की समस्या।
5. वजन कम होना तथा मांसपेशियों की कमजोरी।
6. जीवन की गुणवत्ता और आत्मविश्वास में कमी।

**मसूड़ों की बीमारी (Gum Disease या Periodontitis)**

भी गंभीरता से लेने योग्य समस्या है। इसमें मसूड़ों में सूजन, रक्तस्राव, संक्रमण और धीरे-धीरे दाँतों को सहारा देने वाली हड्डी को नुकसान हो सकता है। समय पर उपचार न मिलने पर दाँत हिलने और गिरने तक की नौबत आ सकती है।

क्या करें? बचाव ही सबसे अच्छा उपचार है।

* दिन में कम से कम दो बार फ्लोराइड युक्त टूथपेस्ट से लगभग दो मिनट तक ब्रश करें।
* रोजाना दाँतों के बीच की सफाई के लिए डेंटल फ्लॉस या इंटरडेंटल ब्रश का उपयोग करें।
* अत्यधिक मीठी चीजों, चॉकलेट, टॉफी, मिठाइयों और मीठे कोल्ड ड्रिंक्स का सेवन सीमित करें।
* तंबाकू, गुटखा और धूम्रपान से पूरी तरह दूर रहें।
* नियमित रूप से डेंटिस्ट से दाँतों और मसूड़ों की जाँच करवाएँ।
* दाँतों में दर्द, कैविटी, मसूड़ों से खून आना, मुँह से दुर्गंध या दाँत हिलने जैसी समस्याओं को नजरअंदाज न करें।
* यदि दाँत टूट गए हैं या निकलवाने पड़े हैं, तो डेंटिस्ट की सलाह से उपयुक्त डेंटल इम्प्लांट, ब्रिज या डेंचर का विकल्प अपनाएँ।

**एक महत्वपूर्ण संदेश**

दाँत केवल मुस्कुराने और सुंदर दिखने के लिए नहीं हैं। वे भोजन चबाने, उचित पोषण प्राप्त करने और स्वस्थ जीवन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

दाँतों और मसूड़ों की देखभाल केवल 60–70 वर्ष की उम्र में शुरू नहीं करनी चाहिए। इसकी शुरुआत बचपन से ही होनी चाहिए और जीवनभर जारी रहनी चाहिए।

**याद रखिए:**

स्वस्थ मुँह ⟶ अच्छी तरह चबाया हुआ भोजन ⟶ बेहतर पोषण ⟶ स्वस्थ शरीर ⟶ बेहतर जीवन।

अपने दाँतों की देखभाल कीजिए, क्योंकि स्वस्थ जीवन की शुरुआत स्वस्थ मुँह से होती है।

स्वास्थ्य जागरूकता के लिए। किसी भी मौखिक समस्या के निदान एवं उपचार के लिए योग्य डेंटिस्ट से व्यक्ति।




## धन और रिश्तों का दैनिक अंक ज्योतिष भविष्यफल

*जानिए दिन की ऊर्जा • संभालिए धन • मजबूत बनाइए रिश्ते*

**10 नवंबर 2026 | दिन का अंक: 4 — व्यवस्था, अनुशासन, स्थिरता और व्यावहारिक प्रगति**

### मूलांक 1

**धन व करियर: दिन 4 आपकी नेतृत्व क्षमता में अनुशासन जोड़ता है। नई पहल का व्यावहारिक बजट बनाएं और काम सौंपने से पहले जिम्मेदारियां स्पष्ट करें।**
**रिश्ते: बड़े वादों से अधिक निरंतर व्यवहार महत्वपूर्ण रहेगा। बिना अनुमान लगाए पूछें कि आप कैसे सहयोग कर सकते हैं।**
**सावधानी: चिढ़कर आदेश देने और अनिश्चित परिणाम जल्दी पाने के लिए खर्च करने से बचें।**
**दिन बेहतर बनाएं: सबसे महत्वपूर्ण योजना का पहला मापने योग्य कदम पूरा करें।**

### मूलांक 2

**धन व करियर: दिन 4 आपके सहयोगी स्वभाव को स्थिरता देता है। प्रतिबद्धता से पहले भुगतान की तारीख, साझा खर्च और लिखित शर्तें जांचें।**
**रिश्ते: छोटा लेकिन भरोसेमंद कदम आश्वासन देगा। सामने वाले को परखने के बजाय अपनी जरूरत सीधे बताएं।**
**सावधानी: असहज लगने के कारण धन संबंधी बातचीत टालने से बचें।**
**दिन बेहतर बनाएं: एक साझा जिम्मेदारी स्पष्ट करें और सहमति लिख लें।**

### मूलांक 3

**धन व करियर: अपने विचारों को समयसीमा और अनुमानित खर्च से जोड़ें। दिन 4 कई नए विचारों के बजाय एक उपयोगी काम पूरा करने को महत्व देता है।**
**रिश्ते: हंसी-मजाक बनाए रखें, लेकिन किसी अपने से किया महत्वपूर्ण वादा जरूर निभाएं।**
**सावधानी: ध्यान भटकने पर खर्च और काम किए बिना परिणाम का वादा करने से बचें।**
**दिन बेहतर बनाएं: एक रचनात्मक काम पूरा करके उसका व्यावहारिक लाभ दिखाएं।**

### मूलांक 4

**धन व करियर: आपके मूलांक 4 और दिन 4 का मेल व्यवस्था, धैर्य और आर्थिक आधार को मजबूत करता है। नियमित खर्च या काम में रुकावट की समीक्षा करें।**
**रिश्ते: विश्वसनीयता अच्छी है, लेकिन दूसरे व्यक्ति को अपने तरीके से काम करने की जगह भी दें।**
**सावधानी: पूर्णता की जिद, कठोर अपेक्षाओं और सलाह के नाम पर आलोचना से बचें।**
**दिन बेहतर बनाएं: एक दिनचर्या सुधारें और एक उचित अपवाद स्वीकार करें।**

### मूलांक 5

**धन व करियर: दिन 4 आपकी बदलती ऊर्जा को थोड़ा धीमा करता है। दिशा बदलने से पहले प्रस्तावों की तुलना करें, कॉन्ट्रैक्ट जांचें और पुरानी जिम्मेदारी पूरी करें।**
**रिश्ते: योजना बदले तो समय पर बताएं; स्पष्ट अपेक्षाएं स्वतंत्रता को सहज बनाती हैं।**
**सावधानी: अचानक खरीदारी और हर दिनचर्या को बेकार बंधन मानने से बचें।**
**दिन बेहतर बनाएं: ऐसी सरल समय-सारणी बनाएं जिसमें लचीलापन भी हो।**

### मूलांक 6

**धन व करियर: घर के बजट, क्लाइंट सेवा और टिकाऊ खर्च पर ध्यान दें। व्यावहारिक देखभाल आराम के साथ बचत भी सुरक्षित रख सकती है।**
**रिश्ते: महंगे उपहार के बजाय अपनों की वास्तविक जरूरत के अनुसार सहयोग करें।**
**सावधानी: सबकी जिम्मेदारी उठाने या उपहारों से शांति खरीदने से बचें।**
**दिन बेहतर बनाएं: एक स्वस्थ सीमा तय करें और घर का एक उपयोगी काम पूरा करें।**

### मूलांक 7

**धन व करियर: अपने शोध को लागू करने योग्य योजना में बदलें। दिन 4 तथ्य जांचने, निर्णय लिखने और व्यावहारिक लक्ष्य तय करने में सहयोग देता है।**
**रिश्ते: एकांत चाहिए तो बिना बताए दूर होने के बजाय नरमी से समझाएं।**
**सावधानी: एक ही निर्णय का अंतहीन विश्लेषण और भावनाओं को अव्यावहारिक मानने से बचें।**
**दिन बेहतर बनाएं: एक स्पष्ट अगला कदम लिखें और उसे साझा करें।**

### मूलांक 8

**धन व करियर: दिन 4 का अनुशासन आपकी महत्वाकांक्षा को आधार देता है। नकदी प्रवाह, कॉन्ट्रैक्ट या दीर्घकालिक संपत्ति की समीक्षा करके कमजोर व्यवस्था सुधारें।**
**रिश्ते: काम का दबाव अधिक हो सकता है; अपनों को समय दें और ध्यान से सुनें।**
**सावधानी: साझा धन पर नियंत्रण या सबके आपकी गति से चलने की अपेक्षा से बचें।**
**दिन बेहतर बनाएं: एक आर्थिक व्यवस्था मजबूत करें और रिश्ते के लिए समय सुरक्षित रखें।**

### मूलांक 9

**धन व करियर: दिन 4 आपकी उदारता को व्यावहारिक दिशा देता है। बकाया सुलझाएं, संसाधन व्यवस्थित करें और मापने योग्य परिणाम वाले काम में प्रयास लगाएं।**
**रिश्ते: व्यावहारिक मदद करें, लेकिन अपनों को अपने फैसलों की जिम्मेदारी लेने दें।**
**सावधानी: अपराधबोध में उधार देने या क्षमता से अधिक दायित्व उठाने से बचें।**
**दिन बेहतर बनाएं: एक अधूरा काम पूरा करें और स्पष्ट सीमा के भीतर सहयोग दें।**

**कॉल / व्हाट्सऐप: 8750075550 | वेबसाइट: www.vediccodes.in | @vediccodes**

*Vediccodes - Your vibrations... our solutions*

साप्ताहिकी अंकशास्त्र

# संयुक्त अंक 13 – जिम्मेदारी, संघर्ष और परिवर्तन का कर्मिक अंक: सूर्य, गुरु और राहु का प्रभाव:



डॉ. पूजाप्रसुन एन गोल्ड मेडलिस्ट Shivoham Shastrshivohamshastr.com 07303855446

अंक ज्योतिष में संयुक्त अंक 13 अध्ययन करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण अंकों में से एक है, क्योंकि इसका गहरा कर्मिक महत्व माना जाता है। इसे परंपरागत रूप से चार कर्मिक ऋण अंकों में शामिल किया जाता है: 13, 14, 16 और 19।

अंक ज्योतिष के अपने अध्ययन में मैं अंक 13 को एक अनुकूल अंक नहीं मानती, विशेषकर जब इसे नामांक के रूप में चुना जाता है। यह ऐसा अंक है जो व्यक्ति से जिम्मेदारी, अनुशासन, धैर्य और निरंतर कठिन परिश्रम की अपेक्षा करता है। इस अंक से प्रभावित लोगों को अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन, दोनों में बार-बार चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। सफलता का मार्ग प्रायः आसान नहीं होता।

हालाँकि, मैं एक बात बिल्कुल स्पष्ट करना चाहती हूँ: अंक 13 का अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति सफल नहीं हो सकता। वास्तव में, इस अंक से प्रभावित व्यक्ति उल्लेखनीय सफलता प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन समान स्थान या उपलब्धि तक पहुँचने के लिए उन्हें दूसरों की तुलना में कहीं अधिक मेहनत करनी पड़ सकती है। उनकी उपलब्धियाँ सामान्यतः संघर्ष, अनुभव, जिम्मेदारी और दृढ़ता के माध्यम से प्राप्त होती हैं।

अंक 13 की मुख्य शिक्षा यह है कि सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता। व्यक्ति को जिम्मेदारी लेना, ईमानदार रहना, निरंतर मेहनत करना और जो कार्य अपने हाथ में लिया है उसे पूरा करना सीखना चाहिए।

इस अंक को सही ढंग से समझने के लिए हमें 13 के कर्मिक अर्थ, इसके अलग-अलग अंकों 1 और 3 तथा इनके योगफल 4 का अध्ययन करना होगा।

अंक 13 का ग्रहों से संबंध

अंक ज्योतिष में अंक 13 का निर्माण 1 और 3 के संयोग से होता है।

अंक 1 सूर्य का प्रतिनिधित्व करता है।

अंक 3 गुरु का प्रतिनिधित्व करता है।

जब हम 1 और 3 को जोड़ते हैं, तो हमें 4 प्राप्त होता है।

मेरी कार्यप्रणाली में अंक 4 राहु का प्रतिनिधित्व करता है।

इसलिए अंक 13 पर सूर्य, गुरु और राहु का संयुक्त प्रभाव होता है।

इनमें से प्रत्येक ग्रह का प्रभाव अंक 13 से प्रभावित व्यक्ति के व्यक्तित्व और जीवन के अनुभवों में अलग-अलग गुण जोड़ता है।

सूर्य अधिकार, आत्मविश्वास, नेतृत्व, व्यक्तित्व, महत्वाकांक्षा और स्वयं को स्थापित करने की इच्छा का प्रतिनिधित्व करता है।

गुरु ज्ञान, बुद्धिमत्ता, नैतिकता, मार्गदर्शन, शिक्षा, विस्तार और उच्च समझ का प्रतिनिधित्व करता है।

राहु अपरंपरागत सोच, अचानक होने वाले परिवर्तन, महत्वाकांक्षा, भौतिक इच्छाएँ, असामान्य परिस्थितियाँ, भ्रम और अप्रत्याशित घटनाओं का प्रतिनिधित्व करता है।

यह संयोग विशेष रूप से रोचक है, क्योंकि सूर्य और गुरु ज्ञान, आत्मविश्वास तथा जीवन में आगे बढ़ने की क्षमता प्रदान कर सकते हैं, जबकि राहु अप्रत्याशित परिस्थितियाँ, जटिलताएँ और बाधाएँ ला सकता है।

मेरी व्याख्या में अंक 13 और इसका मूलांक 4 जीवन के अनेक क्षेत्रों पर प्रभावी हो सकते हैं। व्यक्ति को बार-बार ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है, जिनमें अधिक प्रयास, सावधानीपूर्वक निर्णय और व्यक्तिगत जिम्मेदारी की आवश्यकता होती है।

इसके साथ ही सूर्य और गुरु महत्वपूर्ण सकारात्मक गुण प्रदान करते हैं। ये व्यक्ति को सही दिशा खोजने, कठिन परिस्थितियों से बाहर निकलने तथा अपने ज्ञान और अनुभव के माध्यम से चुनौतियों पर विजय प्राप्त करने में सहायता कर सकते हैं।

इसीलिए मैं अंक 13 को संघर्ष का अंक मानती हूँ, लेकिन साथ ही यह ऐसा अंक भी है जो व्यक्ति के चरित्र में असाधारण मजबूती विकसित कर सकता है।

अंक 13 को कर्मिक ऋण अंक क्यों कहा जाता है

आधुनिक अंक ज्योतिष में 13, 14, 16 और 19 को सामान्यतः कर्मिक ऋण अंक कहा जाता है।

इसके पीछे यह मान्यता है कि ये अंक कुछ ऐसे सबक या कर्मिक शिक्षाएँ दर्शाते हैं, जिन्हें व्यक्ति को वर्तमान जीवन में सीखना होता है, ताकि वह अतीत से जुड़े व्यवहारों या कर्मों के पैटर्न को सुधार सके।

इस व्याख्या के अनुसार, कर्मिक ऋण केवल दंड नहीं है। यह अपने व्यवहार को सुधारने, परिपक्वता विकसित करने और जीवन में अधिक संतुलन लाने का एक अवसर है।

अंक 13 विशेष रूप से जिम्मेदारी और कठिन परिश्रम की शिक्षा से जुड़ा हुआ है।

परंपरागत रूप से इसकी व्याख्या यह बताती है कि संभव है कि व्यक्ति ने किसी पिछले कर्मिक चक्र में अपनी जिम्मेदारियों से बचने का प्रयास किया हो, अपने कर्तव्यों की उपेक्षा की हो, आसान रास्ता अपनाया हो या महत्वपूर्ण कार्यों में उचित प्रयास न किया हो।

इसलिए वर्तमान जीवन में इसकी शिक्षा है कि व्यक्ति अपना कार्य सही ढंग से करे, जिम्मेदारी स्वीकार करे और अनुशासन विकसित करे।

व्यक्ति को बार-बार ऐसा अनुभव हो सकता है कि चीजें उसकी अपेक्षा के अनुसार आसानी से नहीं हो रही हैं। जीवन में देरी, बाधाएँ, अतिरिक्त जिम्मेदारियाँ और ऐसी परिस्थितियाँ आ सकती हैं, जिनमें व्यक्ति को दूसरों की तुलना में अधिक मेहनत करनी पड़ती है।

कर्मिक व्याख्या के अनुसार, इन अनुभवों का उद्देश्य धैर्य, ईमानदारी, अनुशासन और दृढ़ता विकसित करना है।

मैं इस बात पर विशेष जोर देना चाहती हूँ कि यह कर्म के संबंध में एक अंक ज्योतिषीय और आध्यात्मिक व्याख्या है। यह किसी व्यक्ति के पिछले जन्मों के कर्मों की पहचान करने की वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित विधि नहीं है।

मेरे शोध का सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष: जिम्मेदारी और कठिन परिश्रम

अपने शोध में मैंने अंक 13 का एक विशेष रूप से महत्वपूर्ण गुण पाया है।

अंक 13 से प्रभावित व्यक्तियों को अक्सर अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन, दोनों में काफी अधिक जिम्मेदारियाँ उठानी पड़ती हैं।

वे स्वयं को ऐसी परिस्थितियों में पा सकते हैं, जहाँ दूसरे लोग उन पर निर्भर होते हैं। उन्हें पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, व्यावसायिक प्रतिबद्धताएँ, आर्थिक दायित्व और कठिन परिस्थितियाँ एक साथ संभालनी पड़ सकती हैं।

उनकी जीवन यात्रा में निरंतर प्रयास शामिल हो सकता है। यहाँ तक कि जब उनके पास आवश्यक बुद्धिमत्ता, अनुभव और क्षमता होती है, तब भी मनचाहे परिणाम आसानी से प्राप्त नहीं होते।

उन्हें बार-बार प्रयास करने पड़ सकते हैं, गलतियों को सुधारना पड़ सकता है, बाधाओं को पार करना पड़ सकता है और जो कार्य सफल नहीं हुआ है उसे दोबारा नए सिरे से बनाना पड़ सकता है।

उदाहरण के लिए, कोई दूसरा व्यक्ति किसी विशेष कार्य को अपेक्षाकृत कम मेहनत में पूरा कर सकता है, जबकि अंक 13 से प्रभावित व्यक्ति को उसी परिणाम तक पहुँचने से पहले कई जटिलताओं का सामना करना पड़ सकता है।

कभी-कभी इससे निराशा भी उत्पन्न हो सकती है। व्यक्ति सोच सकता है कि जब वह दूसरों जितना सक्षम है या उनसे अधिक जानकार है, तो उसे इतना अधिक संघर्ष क्यों करना पड़ता है।

लेकिन अंक 13 की महत्वपूर्ण शिक्षा यह है कि व्यक्ति को इस अंतर के कारण निराश नहीं होना चाहिए।

मेरे अनुभव में, ऐसे व्यक्तियों को जिम्मेदारियों से बचने के बजाय उन्हें स्वीकार करना सीखना चाहिए। उन्हें समझना चाहिए कि उनकी प्रगति काफी हद तक निरंतरता, धैर्य और उनके प्रयासों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है।

किसी भी चीज को हल्के में नहीं लेना चाहिए।

उन्हें जो कार्य शुरू किया है उसे पूरा करना, अपनी प्रतिबद्धताओं का सम्मान करना और परिणाम मिलने में देरी होने पर भी दृढ़ रहना सीखना चाहिए।

यही अंक 13 की केंद्रीय कर्मिक शिक्षा है।

राहु का प्रभाव: अप्रत्याशित बाधाएँ और असामान्य परिस्थितियाँ

अंक 13 का योग 4 होता है, जो मेरी अंक ज्योतिषीय प्रणाली में राहु का प्रतिनिधित्व करता है।

राहु एक अपरंपरागत और अप्रत्याशित प्रभाव है। इसका संबंध असामान्य परिस्थितियों, अचानक होने वाली घटनाओं, महत्वाकांक्षा, भौतिक इच्छाओं और ऐसी स्थितियों से है, जो सामान्य ढर्रे पर नहीं चलतीं।

जब किसी संयुक्त अंक का मूल प्रभाव राहु होता है, तो उसके परिणामों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करना आवश्यक है।

अंक 13 में राहु व्यक्ति की जीवन यात्रा में अप्रत्याशित जटिलताएँ ला सकता है। योजनाएँ अचानक बदल सकती हैं। जो परिस्थिति शुरुआत में सरल दिखाई देती है, वह जटिल हो सकती है। व्यक्ति को देरी, गलतफहमियों, विवादों या ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है, जिनमें अतिरिक्त प्रयास की आवश्यकता होती है।

कभी-कभी व्यक्ति बहुत मेहनत करता है, लेकिन फिर भी अंतिम परिणाम वैसा नहीं होता जैसा उसने शुरुआत में सोचा था।

परिणाम मिलने में देरी होने पर बेचैनी या अधीरता की प्रवृत्ति भी हो सकती है। व्यक्ति किसी तेज तरीके या वैकल्पिक रास्ते की तलाश करने लग सकता है।

लेकिन यहीं अंक 13 की कर्मिक शिक्षा महत्वपूर्ण हो जाती है।

राहु शीघ्र उपलब्धि प्राप्त करने की इच्छा पैदा कर सकता है, लेकिन अंक 13 धैर्य और व्यवस्थित प्रयास की माँग करता है।

व्यक्ति को शॉर्टकट, छल-कपट, बेईमानी और अवास्तविक अपेक्षाओं से बचना चाहिए। उसे अपनी महत्वाकांक्षा को नैतिकता से अधिक शक्तिशाली नहीं बनने देना चाहिए।

मेरी व्याख्या में, व्यक्ति को ईमानदारी, पारदर्शिता और सीधे-सच्चे व्यवहार के माध्यम से राहु के प्रभाव को संभालना सीखना चाहिए।

सूर्य और गुरु का संरक्षण देने वाला प्रभाव

हालाँकि अंक 13 में राहु का प्रभाव है, लेकिन हमें इसमें सूर्य और गुरु की उपस्थिति को अनदेखा नहीं करना चाहिए।

अंक 1 सूर्य का प्रतिनिधित्व करता है और अंक 3 गुरु का। इस संयोग में दोनों के प्रभाव महत्वपूर्ण हैं।

सूर्य आत्मविश्वास, अधिकार, साहस और जिम्मेदारी उठाने की क्षमता प्रदान करता है।

गुरु बुद्धिमत्ता, ज्ञान, विवेक, नैतिकता और अनुभव से सीखने की क्षमता प्रदान करता है।

मेरी व्याख्या में, जब व्यक्ति कठिन परिस्थितियों का सामना करता है, तब ये दोनों ग्रह उसे पर्याप्त सहयोग प्रदान कर सकते हैं।

सूर्य व्यक्ति को आत्मविश्वास बनाए रखने और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में मजबूती से खड़े रहने में सहायता कर सकता है।

अपने शोध में मैंने अंक 13 का एक विशेष रूप से महत्वपूर्ण गुण पाया है।

गुरु व्यक्ति को परिस्थिति समझने, अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय लेने और आवश्यकता पड़ने पर उचित मार्गदर्शन प्राप्त करने में सहायता कर सकता है।

यह अंक 13 का एक महत्वपूर्ण पहलू है। हालाँकि राहु अप्रत्याशित कठिनाइयाँ उत्पन्न कर सकता है, लेकिन सूर्य और गुरु व्यक्ति को आगे बढ़ने का रास्ता खोजने में सहायता कर सकते हैं।

इसलिए उन्हें अपनी क्षमताओं पर विश्वास कभी नहीं खोना चाहिए।

उन्हें भय या निराशा को अपने निर्णयों पर हावी होने देने के बजाय अपने ज्ञान, विवेक और अनुभव का उपयोग करना चाहिए।

यह संयोग ऐसा व्यक्ति बना सकता है, जो कठिन अनुभवों से गुजरकर अधिक मजबूत और समझदार बनता है।

अंक 13 का स्वभाव: दृढ़, संकल्पवान और अपने विचारों में मजबूत

अंक 13 व्यक्ति को दृढ़ और स्थिर स्वभाव प्रदान कर सकता है।

इस अंक से प्रभावित लोगों के विचार मजबूत हो सकते हैं और उन्हें अपने ज्ञान पर काफी विश्वास हो सकता है। विशेषकर जब उन्हें लगता है कि उनकी समझ सही है, तब वे अपनी राय आसानी से नहीं बदलते।

वे दृढ़ निश्चयी, व्यावहारिक और लगातार प्रयास करने वाले हो सकते हैं।

एक बार किसी कार्य को पूरा करने का निर्णय लेने के बाद वे बार-बार कठिनाइयाँ आने पर भी उस दिशा में काम करते रह सकते हैं।

हालाँकि, यही दृढ़ता कभी-कभी जिद में भी बदल सकती है।

कभी-कभी वे अपने विचारों को लेकर बहुत अधिक आश्वस्त हो सकते हैं और दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण को स्वीकार करना उनके लिए कठिन हो सकता है।

चुनौती यह समझने की है कि दृढ़ निश्चय और हठ में क्या अंतर है।

मजबूत चरित्र एक मूल्यवान गुण है, लेकिन इसके साथ विनम्रता, लचीलापन और सीखने की इच्छा भी होनी चाहिए।

अंक 13 का सकारात्मक स्वरूप ऐसा व्यक्ति है, जो सही बात के लिए दृढ़ता से खड़ा होता है, ईमानदारी से काम करता है और अपनी जिम्मेदारियाँ पूरी करता है।

इसका नकारात्मक स्वरूप ऐसा व्यक्ति हो सकता है, जो कठोर, निराश, शंकालु या अपनी गलती स्वीकार करने के लिए तैयार न हो।

इसलिए व्यक्ति को शक्ति के साथ-साथ विवेक भी विकसित करना चाहिए।

अंक 13 के लिए ईमानदारी ही सर्वोत्तम नीति है

अंक 13 के साथ मैं जो सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा जोड़ती हूँ, उनमें से एक है ईमानदारी।

क्योंकि इसका मूलांक 4 है, जो मेरी प्रणाली में राहु का प्रतिनिधित्व करता है, इसलिए मेरा मानना है कि अंक 13 से प्रभावित व्यक्तियों को अपने व्यवहार और लेन-देन में विशेष सावधानी रखनी चाहिए।

उन्हें बेईमानी, छल-कपट, झूठे वादों, भ्रामक बातों और अनावश्यक जटिलताओं से बचना चाहिए।

उन्हें आर्थिक मामलों, व्यावसायिक समझौतों, साझेदारी और व्यक्तिगत प्रतिबद्धताओं में पारदर्शिता बनाए रखनी चाहिए।

यदि वे किसी कार्य के लिए जिम्मेदार हैं, तो उन्हें उसे सही ढंग से पूरा करना चाहिए। यदि वे कोई वादा करते हैं, तो उन्हें अपनी पूरी कोशिश करनी चाहिए कि उसे निभाएँ। यदि उनसे कोई गलती होती है, तो उन्हें उसका दोष किसी दूसरे पर डालने के बजाय उसे स्वीकार करना चाहिए।

सूर्य और गुरु का संयोग सिद्धांतों, नैतिकता और सत्यनिष्ठा को समर्थन देता है। राहु का नकारात्मक स्वरूप भ्रम और



जटिलताएँ उत्पन्न कर सकता है।

इसलिए अंक 13 के चुनौतीपूर्ण पक्ष को संभालने का सबसे अच्छा तरीका ईमानदार और स्पष्ट व्यवहार बनाए रखना है।

मेरी व्याख्या में, अंक 13 के व्यक्तियों के लिए ईमानदारी केवल एक नैतिक सुझाव नहीं है। यह इस संयुक्त अंक से जुड़ी सबसे महत्वपूर्ण शिक्षाओं में से एक है।

यदि व्यक्ति अपनी सत्यनिष्ठा बनाए रखता है और निरंतर मेहनत करता है, तो सूर्य और गुरु के सकारात्मक गुण अधिक प्रभावशाली हो सकते हैं।

दृढ़ता का महत्व: बीच में कभी हार न मानें

कर्मिक ऋण अंक 13 वाले लोगों को किसी कार्य को पूरा करने से पहले बार-बार आने वाली बाधाओं से गुजरना पड़ सकता है।

वे किसी परियोजना की शुरुआत बहुत उत्साह से कर सकते हैं, लेकिन जैसे-जैसे कठिनाइयाँ बढ़ती हैं, वे निराश हो सकते हैं।

कभी-कभी काम का बोझ इतना अधिक दिखाई दे सकता है कि उनका मन हार मान लेने का हो सकता है।

वे सोच सकते हैं कि उन्होंने पहले ही पर्याप्त मेहनत कर ली है और अब आगे प्रयास करना उचित नहीं है।

लेकिन यहीं उन्हें मजबूत बने रहना सीखना चाहिए।

अंक 13 यह सिखाता है कि सफलता के लिए अक्सर तब भी काम करते रहने की क्षमता आवश्यक होती है, जब तुरंत परिणाम दिखाई नहीं देते।

व्यक्ति को बीच में काम छोड़ने के बजाय पूरी प्रक्रिया को समाप्त करने का धैर्य विकसित करना चाहिए।

उन्हें समझना चाहिए कि केवल परिणाम में देरी होने से उनका प्रयास व्यर्थ नहीं हो जाता।

हर अनुभव ज्ञान, कौशल और परिपक्वता प्रदान कर सकता है। असफलता भी व्यक्ति को यह सिखा सकती है कि अगली बार अधिक प्रभावी तरीके से प्रयास कैसे करना है।

अंक 13 के लिए सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं है।

व्यक्ति को लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित रखना चाहिए, साहस बनाए रखना चाहिए और अपने उद्देश्य की दिशा में निरंतर काम करते रहना चाहिए।

आलस्य, नकारात्मकता, आत्म-दया और बार-बार अपनी जिम्मेदारियाँ छोड़ देना चुनौतियों को और कठिन बना सकता है।

इस अंक का सकारात्मक स्वरूप अनुशासन, दृढ़ता और शुरू किए गए कार्य को पूरा करने के संकल्प की माँग करता है।

चुनौती यह समझने की है कि दृढ़ निश्चय और हठ में क्या अंतर है।

अंक 13 का प्रतीकः मृत्यु, विनाश और पुनर्जन्म

संयुक्त अंकों की कीरो की पारंपरिक व्याख्या में अंक 13 को एक कंकाल या दरांती लिए हुए मृत्यु के प्रतीक से जोड़ा गया है। यह चित्र परिवर्तन, उथल-पुथल और विनाश का प्रतिनिधित्व करता है।

इस प्रतीक का अर्थ शारीरिक मृत्यु की भविष्यवाणी के रूप में नहीं समझना चाहिए।

इसे किसी मौजूदा व्यवस्था के समाप्त होने और एक नए चरण की शुरुआत के प्रतीकात्मक रूप में समझना अधिक उचित है।

अंक 13 योजनाओं, परिस्थितियों, आसपास के वातावरण या जीवन की दिशा में बदलाव का संकेत दे सकता है।

जो चीज पहले स्थिर दिखाई देती थी, उस पर दोबारा विचार करने की आवश्यकता हो सकती है। कोई पुरानी व्यवस्था अब काम नहीं कर सकती। व्यक्ति को किसी पुराने दृष्टिकोण को छोड़कर कुछ नया और अधिक मजबूत बनाने की आवश्यकता पड़ सकती है।

यह असहज हो सकता है, क्योंकि मनुष्य स्वाभाविक रूप से परिचित परिस्थितियों से जुड़ जाता है।

लेकिन इस प्रतीक की गहरी शिक्षा परिवर्तन है।

व्यक्ति को यह स्वीकार करना सीखना चाहिए कि कभी-कभी कुछ चीजों का समाप्त होना आवश्यक होता है, ताकि एक अधिक मजबूत आधार तैयार किया जा सके।

इस अर्थ में अंक 13 केवल विनाश से जुड़ा हुआ नहीं है। यह पुनर्निर्माण और नवसृजन से भी जुड़ा हुआ है।

कीरो की व्याख्या अंक 13 को परिवर्तन और उथल-पुथल का अंक बताती है। साथ ही यह चेतावनी भी देती है कि शक्ति का गलत उपयोग विनाशकारी हो सकता है। कीरो इसे ऐसा अंक नहीं मानते जो अपने आप में हमेशा दुर्भाग्यपूर्ण हो।

करियर और व्यावसायिक जीवन

अंक 13 से प्रभावित व्यक्तियों के लिए व्यावसायिक जीवन एक महत्वपूर्ण परीक्षा का क्षेत्र हो सकता है।

उनके पास पर्याप्त ज्ञान, महत्वाकांक्षा और जिम्मेदारी संभालने की क्षमता हो सकती है। हालाँकि, उनकी व्यावसायिक यात्रा में बार-बार बाधाएँ, अतिरिक्त कर्तव्य और अप्रत्याशित परिवर्तन आ सकते हैं।

उन्हें स्वयं को स्थापित करने और पहचान प्राप्त करने के लिए अधिक मेहनत करनी पड़ सकती है।

कुछ मामलों में पदोन्नति में देरी, व्यावसायिक विवाद, नौकरी में बदलाव या बड़ी परियोजनाओं को पूरा करने में कठिनाइयाँ आ सकती हैं।

वे स्वयं को ऐसी जिम्मेदारियाँ निभाते हुए भी पा सकते हैं, जो उनके आधिकारिक पद या पदनाम से कहीं अधिक हों।

इसका सकारात्मक पक्ष यह है कि ऐसे अनुभव व्यावहारिक ज्ञान, सहनशीलता और समस्याओं को हल करने की क्षमता विकसित कर सकते हैं।

कठिन परिस्थितियों को अपने अनुभव से संभालना सीखने के कारण वे कुशल पेशेवर बन सकते हैं।

ऐसे कार्यक्षेत्र, जिनमें अनुशासन, तकनीकी ज्ञान, जाँच-पड़ताल, योजना बनाना, प्रबंधन और समस्याओं का समाधान करना आवश्यक हो, उनकी क्षमताओं के अनुकूल हो सकते हैं।

वे शोध, तकनीक, प्रशासन, इंजीनियरिंग, विश्लेषण या विशेष ज्ञान से जुड़े कार्यों में भी अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं।

हालाँकि, व्यक्ति की वास्तविक व्यावसायिक उपयुक्तता का आकलन हमेशा उसकी पूरी अंक ज्योतिषीय प्रोफाइल, योग्यता, कौशल और परिस्थितियों के आधार पर ही किया जाना चाहिए।

महत्वपूर्ण शिक्षा यह है कि अंक 13 से प्रभावित व्यक्तियों को निरंतर प्रयास के बिना व्यावसायिक पहचान और सम्मान की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

उन्हें अपने काम की गुणवत्ता के माध्यम से अपनी प्रतिष्ठा बनानी चाहिए।

आर्थिक मामले और सावधानी का महत्व

अंक 13 का अध्ययन करते समय आर्थिक मामलों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

अपने शोध में मैंने देखा है कि यह अंक आर्थिक चुनौतियाँ ला सकता है, विशेषकर तब जब व्यक्ति पर्याप्त योजना बनाए बिना निर्णय लेता है या अनावश्यक जोखिम उठाता है।

अचानक खर्च, भुगतान में देरी, आर्थिक जिम्मेदारियाँ या ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं, जिनमें पैसा विवादों में फँस जाए।

राहु का प्रभाव अत्यधिक महत्वाकांक्षा या जल्दी आर्थिक परिणाम प्राप्त करने की इच्छा को भी बढ़ा सकता है।

यदि व्यक्ति सावधानी नहीं बरतता, तो इसके कारण गलत निर्णय लिए जा सकते हैं।

इसलिए अंक 13 से प्रभावित व्यक्तियों को सट्टा आधारित निवेश, अस्पष्ट आर्थिक व्यवस्थाओं, मौखिक वादों और उचित दस्तावेजों के बिना की गई साझेदारी के मामले में सावधान रहना चाहिए।

उन्हें सही हिसाब-किताब रखना चाहिए, प्रत्येक समझौते की शर्तों को समझना चाहिए और दबाव में आकर आर्थिक प्रतिबद्धताएँ नहीं करनी चाहिए।

सूर्य और गुरु का सकारात्मक प्रभाव जिम्मेदारीपूर्ण विवेक को समर्थन दे सकता है, लेकिन व्यक्ति को इन गुणों का सचेत रूप से उपयोग करना होगा।

मेरी व्याख्या में, अंक 13 के लिए आर्थिक स्थिरता शॉर्टकट के बजाय अनुशासन, पारदर्शिता, धैर्य और सावधानीपूर्वक योजना बनाने से आती है।

पिनेकल में अंक 13: आर्थिक नुकसान और मुकदमेबाजी

मैं अपने शोध के इस बिंदु को विशेष रूप से महत्वपूर्ण मानती हूँ।

यदि किसी व्यक्ति के पिनेकल में अंक 13 आता है, तो इस पर सावधानीपूर्वक ध्यान देना चाहिए।

पिनेकल अंक ज्योतिषीय चार्ट में जीवन के एक विशेष चरण का प्रतिनिधित्व करता है। इसका अध्ययन अन्य पिनेकल, चैलेंज, जन्मांक, भाग्यांक और पूरे चार्ट के साथ किया जाना चाहिए।

मेरे अवलोकन में, जब अंक 13 पिनेकल के रूप में आता है, तो यह ऐसा समय ला सकता है जिसमें व्यक्ति को अतिरिक्त जिम्मेदारियाँ उठानी पड़ें और कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़े।

आर्थिक नुकसान या मुकदमेबाजी भी इसके चुनौतीपूर्ण प्रभावों के संभावित रूप हो सकते हैं।

धन, संपत्ति, अनुबंध, व्यावसायिक व्यवस्थाओं या व्यावसायिक जिम्मेदारियों से जुड़े विवाद हो सकते हैं।

हालाँकि, मैं प्रत्येक अंक 13 वाले पिनेकल को निश्चित आर्थिक नुकसान या मुकदमे का संकेत नहीं मानूँगी। यह एक ऐसी चेतावनी है, जिसे मैं अपने अभ्यास में महत्वपूर्ण मानती हूँ। वास्तविक परिणाम का निर्णय पूरे अंक ज्योतिषीय चार्ट और व्यक्ति की परिस्थितियों के आधार पर ही किया जाना चाहिए।

ऐसे समय में व्यक्ति को दस्तावेजों, कानूनी समझौतों, आर्थिक लेन-देन और व्यावसायिक प्रतिबद्धताओं के मामले में विशेष सावधानी रखनी चाहिए।

उसे अनावश्यक विवादों से बचना चाहिए और जहाँ आवश्यकता हो, उचित पेशेवर सलाह लेनी चाहिए।

सबसे महत्वपूर्ण दृष्टिकोण यह है कि व्यक्ति भयभीत होने के बजाय अनुशासित और तैयार रहे।

रिश्तों और व्यक्तिगत जीवन में अंक 13

अंक 13 का कर्मिक प्रभाव व्यक्तिगत संबंधों के माध्यम से भी अनुभव किया जा सकता है।

इस अंक से प्रभावित व्यक्तियों को परिवार की महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ उठानी पड़ सकती हैं।

वे ऐसे व्यक्ति बन सकते हैं, जिन पर दूसरे लोग निर्भर रहते हैं, या उन्हें ऐसा महसूस हो सकता है कि पर्याप्त सहयोग प्राप्त किए बिना उन्हें अनेक कर्तव्य संभालने पड़ रहे हैं।

इससे भावनात्मक दबाव उत्पन्न हो सकता है।

जब कोई व्यक्ति लगातार जिम्मेदारियों, व्यावसायिक माँगों और आर्थिक चिंताओं से जूझ रहा होता है, तो उसके पास व्यक्तिगत संबंधों के लिए समय और ऊर्जा कम बच सकती है।

वे गंभीर, व्यावहारिक या भावनात्मक रूप से संकोची हो सकते हैं।

उनके मजबूत विचार और दृढ़ स्वभाव भी मतभेद पैदा कर सकते हैं, विशेषकर तब जब वे समझौता करने के लिए तैयार न हों।

अंक 13 का सकारात्मक स्वरूप निष्ठा, जिम्मेदारी और प्रतिबद्धता है।

इसका चुनौतीपूर्ण स्वरूप कठोरता, निराशा और यह महसूस करना हो सकता है कि जिम्मेदारियों का पूरा बोझ केवल उनके कंधों पर है।

उन्हें यह सीखना चाहिए कि जिम्मेदारी स्वीकार करने का अर्थ यह नहीं है कि हर बोझ अकेले उठाया जाए।

स्वस्थ संबंधों के लिए संवाद, सहयोग और जिम्मेदारियों को साझा करने की इच्छा आवश्यक है।

उन्हें अपनी भावनाएँ व्यक्त करना भी सीखना चाहिए, ताकि तनाव और निराशा मन में जमा न होती रहे।

स्वास्थ्य और व्यक्तिगत कल्याण

अंक 13 की कर्मिक व्याख्या व्यक्तियों को अपने व्यक्तिगत स्वास्थ्य और कल्याण पर ध्यान देने के लिए भी प्रेरित करती है।

जब कोई व्यक्ति लगातार दबाव में काम करता है, अनेक जिम्मेदारियाँ उठाता है और परिणामों में देरी से निराश होता है, तो तनाव उसके जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है।

वे आराम, मनोरंजन और अपने व्यक्तिगत समय की उपेक्षा कर सकते हैं, क्योंकि उन्हें ऐसा महसूस होता है कि हमेशा कोई न कोई काम बाकी है।

इसलिए संतुलित दिनचर्या बनाए रखना महत्वपूर्ण है।

उन्हें अपनी व्यावसायिक जिम्मेदारियों को अपने पूरे जीवन पर हावी नहीं होने देना चाहिए।

पर्याप्त आराम, नियमित शारीरिक गतिविधि, संतुलित आहार और समय पर चिकित्सकीय सलाह सभी के लिए महत्वपूर्ण हैं, जिनमें अंक 13 से प्रभावित व्यक्ति भी शामिल हैं।

अंक ज्योतिष किसी बीमारी का निदान नहीं कर सकता और न ही यह स्थापित कर सकता है कि किसी विशेष अंक के कारण कोई स्वास्थ्य समस्या उत्पन्न होती है। स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं का आकलन हमेशा उचित चिकित्सकीय सलाह के माध्यम से किया जाना चाहिए।

यहाँ महत्वपूर्ण शिक्षा यह है कि अनुशासन केवल काम के लिए ही नहीं, बल्कि व्यक्तिगत स्वास्थ्य और कल्याण के लिए भी होना चाहिए।

अंतर्ज्ञान और आध्यात्मिक मार्गदर्शन

अपनी चुनौतीपूर्ण कर्मिक मान्यताओं के बावजूद, अंक 13 का अंतर्ज्ञान और आध्यात्मिक विकास से भी एक रोचक संबंध हो सकता है।

राहु का प्रभाव व्यक्ति को असामान्य विषयों, छिपे हुए पैटर्न और ऐसी बातों के प्रति जिज्ञासु बना सकता है, जो तुरंत दिखाई नहीं देतीं।

सूर्य जागरूकता और व्यक्तित्व प्रदान करता है, जबकि गुरु बुद्धिमत्ता और उच्च ज्ञान की खोज को बढ़ावा देता है।

ये प्रभाव मिलकर दर्शन, आध्यात्मिकता, शोध, ज्योतिष, अंक ज्योतिष और ऐसे अन्य विषयों में रुचि उत्पन्न कर सकते हैं, जिनमें गहन अवलोकन की आवश्यकता होती है।

कुछ व्यक्ति मानव व्यवहार, घटनाओं के पीछे के कारणों और अपने अनुभवों के गहरे अर्थ को समझने में विशेष रुचि विकसित कर सकते हैं।

जीवन के कठिन चरणों से गुजरने के बाद वे अधिक चिंतनशील बन सकते हैं।

हालाँकि, अंतर्ज्ञान को व्यावहारिक विवेक का समर्थन प्राप्त होना चाहिए।

जब राहु का प्रभाव नकारात्मक रूप में प्रकट होता है, तो वह भ्रम, संदेह और अवास्तविक अपेक्षाएँ भी उत्पन्न कर सकता है।

इसलिए अंक 13 से प्रभावित व्यक्तियों को प्रत्येक भावना या असामान्य विचार का आँख बंद करके अनुसरण नहीं करना चाहिए। उन्हें अंतर्ज्ञान के साथ ज्ञान, तथ्यों और सावधानीपूर्वक विचार-विमर्श का भी उपयोग करना चाहिए।

इस अंक का सकारात्मक स्वरूप अनुभव से सीखने और गहरी समझ विकसित करने की क्षमता है।

परिवर्तन: अंक 13 का वास्तविक उद्देश्य

अंक 13 को समझने का सबसे सार्थक तरीका परिवर्तन की अवधारणा के माध्यम से है।

यह अंक व्यक्ति को सिखाता है कि जीवन हमेशा किसी निश्चित योजना के अनुसार आगे नहीं बढ़ सकता।

अप्रत्याशित बदलाव, देरी, जिम्मेदारियाँ और ऐसी परिस्थितियाँ आ सकती हैं, जिनमें व्यक्ति को अपने दृष्टिकोण पर पूरी तरह से दोबारा विचार करना पड़ सकता है।

व्यक्ति को पुरानी आदतों, गलत तरीकों और अवास्तविक अपेक्षाओं को छोड़ना पड़ सकता है।

उसे अपने व्यावसायिक जीवन का पुनर्निर्माण करना पड़ सकता है, अपनी आर्थिक व्यवस्था को दोबारा व्यवस्थित करना पड़ सकता है या संबंधों को संभालने का तरीका बदलना पड़ सकता है।

ये अनुभव कठिन हो सकते हैं, लेकिन ये परिपक्वता भी प्रदान कर सकते हैं।

व्यक्ति धीरे-धीरे अधिक जिम्मेदार, अनुशासित और आत्मनिर्भर बनना सीखता है।

वह यह समझने लगता है कि वास्तविक सफलता केवल किसी लक्ष्य तक पहुँचने के बारे में नहीं है। यह उस चरित्र को विकसित करने के बारे में भी है, जो उस सफलता को बनाए रखने के लिए आवश्यक होता है।

इसलिए अंक 13 का परिवर्तन केवल बाहरी परिस्थितियों में बदलाव नहीं है। यह व्यक्ति के जीवन के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव है

**परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक - दिल्ली सरकार विशेष - संपादकीय**

- प्रस्तुति : संपादकीय विभाग, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

# दिल्ली में छठ पूजा पर छुट्टी का ऐलान - सोलह नवंबर को बंद रहेंगे सभी सरकारी दफ्तर

## उपराज्यपाल के आदेश पर सामान्य प्रशासन विभाग ने जारी की अधिसूचना - प्रतिहार षष्ठी अथवा सूर्य षष्ठी के अवसर पर सरकारी कार्यालय, स्वायत्त निकाय और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में अवकाश घोषित

**मुख्य तथ्य - एक दृष्टि में**

- अधिसूचना जारी करने वाला विभागः राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार, सामान्य प्रशासन विभाग, समन्वय शाखा, दिल्ली सचिवालय

- अधिसूचना दिनांकः नौ नवंबर दो हजार छब्बीस

- छुट्टी का दिनः सोलह नवंबर दो हजार छब्बीस, सोमवार

- अवसरः प्रतिहार षष्ठी अथवा सूर्य षष्ठी, छठ पूजा

- कहां लागूः राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के अंतर्गत सभी सरकारी कार्यालय, स्वायत्त निकाय तथा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम

- आदेश किसके नाम परः राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के उपराज्यपाल के आदेश व उनके नाम पर

- हस्ताक्षरकर्ताः प्रदीप तयाल, संयुक्त सचिव, सामान्य प्रशासन विभाग

- प्रकाशनः दिल्ली राजपत्र भाग-चार, असाधारण में प्रकाशनार्थ

1. अधिसूचना में क्या लिखा है? - पहले मूल आदेश समझिए दिल्ली सरकार के सामान्य प्रशासन विभाग ने एक अधिसूचना जारी की है।

**अधिसूचना में कहा गया है -**

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के उपराज्यपाल, दिनांक सोलह नवंबर दो हजार छब्बीस, सोमवार को प्रतिहार षष्ठी अथवा सूर्य षष्ठी, छठ पूजा के अवसर पर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के अंतर्गत सभी सरकारी कार्यालयों, स्वायत्त निकायों तथा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में अवकाश घोषित करते हैं।

यह आदेश उपराज्यपाल के आदेश व उनके नाम पर जारी हुआ है।

हस्ताक्षर हैं - प्रदीप तयाल, संयुक्त सचिव, सामान्य प्रशासन विभाग।

**2. छुट्टी किस-किस को मिलेगी? - दायरा समझिए**

यह छुट्टी केवल एक-दो दफ्तरों के लिए नहीं है।

यह छुट्टी दिल्ली सरकार के अंतर्गत आने वाले सभी संस्थानों पर लागू होगी -

क. सरकारी कार्यालयः दिल्ली सचिवालय सहित दिल्ली सरकार के सभी विभाग, सभी सरकारी कार्यालय।

ख. स्वायत्त निकायः दिल्ली सरकार के अधीन आने वाले सभी स्वायत्त निकाय, बोर्ड, आयोग, विश्वविद्यालय।

ग. सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमः दिल्ली सरकार के अंतर्गत सभी सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम, निगम, कंपनियां।

**जैसे -**

- दिल्ली नगर निगम
- नई दिल्ली नगरपालिका परिषद
- दिल्ली परिवहन निगम
- दिल्ली जल बोर्ड
- दिल्ली ट्रांसको
- दिल्ली विश्वविद्यालय, गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, दिल्ली कौशल और उद्यमिता विश्वविद्यालय
- दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
- दिल्ली अग्निशमन सेवा, दिल्ली छावनी बोर्ड

**सभी को इस दिन अवकाश मिलेगा।**

3. अधिसूचना किस-किस को भेजी गई? - पूरी सूची क्यों जरूरी है? अधिसूचना की प्रतिलिपि जानकारी और आवश्यक कार्रवाई हेतु चवालीस स्थानों पर भेजी गई है।

इस सूची से पता चलता है कि दिल्ली सरकार ने किसी भी विभाग को छोड़ा नहीं है।

**प्रमुख प्राप्तकर्ता -**

- उपराज्यपाल के सचिव, लोक निवास, दिल्ली
- मुख्यमंत्री के सचिव, दिल्ली सचिवालय
- विधानसभा अध्यक्ष के सचिव
- मंत्रिपरिषद के सचिव
- गृह मंत्रालय, भारत सरकार
- वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग
- मुख्य सचिव के स्टाफ अधिकारी
- सभी राज्यों के मुख्य सचिव
- सभी अतिरिक्त मुख्य सचिव, दिल्ली सरकार
- आयुक्त, दिल्ली नगर निगम
- अध्यक्ष, नई दिल्ली नगरपालिका परिषद
- सभी प्रधान सचिव, सचिव, विभागाध्यक्ष
- रजिस्ट्रार, दिल्ली उच्च न्यायालय
- रजिस्ट्रार, दिल्ली विश्वविद्यालय




[To be published in Delhi Gazette Part-IV (Extra-ordinary)]

**GOVERNMENT OF NATIONAL CAPITAL TERRITORY OF DELHI**
**GENERAL ADMINISTRATION DEPARTMENT**
**(CO-ORDINATION BRANCH)**
**DELHI SECRETARIAT, I.P. ESTATE, NEW DELHI-110002**

**F. No. 53/876/GAD/CN/2026/6376-6418** **Dated: 09.11.2026**

**NOTIFICATION**

The Lieutenant Governor of the National Capital Territory of Delhi is pleased to declare **16th November, 2026 (Monday)** to be a holiday in all Government Offices, Autonomous Bodies and Public Sector Undertakings under the Government of the National Capital Territory of Delhi, on account of **Pratihar Shashthi or Surya Shashthi (Chhath Puja)**.

**BY ORDER AND IN THE NAME OF THE LIEUTENANT GOVERNOR OF THE NATIONAL CAPITAL TERRITORY OF DELHI**

**(PRADEEP TAYAL)**
**JOINT SECRETARY (GAD)**

**F. No. 53/876/GAD/CN/2026/6376-6418** **Dated: 09.11.2026**

Copy forwarded for information and necessary action to:-

1. Secretary to Lieutenant Governor, Lok Niwas, Delhi.
2. Secretary(s) to Chief Minister, Govt. of NCT of Delhi, Delhi Secretariat, New Delhi.
3. Secretary to Speaker, Legislative Assembly of Delhi, Delhi.
4. Secretaries to Council of Ministers, Govt. of NCT of Delhi, Delhi Secretariat, New Delhi.
5. Secretary, Ministry of Home Affairs, Government of India, North Block, New Delhi.
6. Secretary, Department of Economic Affairs, Ministry of Finance, Government of India, New Delhi.
7. Staff Officer to Chief Secretary, Govt. of NCT of Delhi, Delhi Secretariat, New Delhi.
8. Staff Officers to Chief Secretaries to all State Governments/UT Administrations.
9. All Additional Chief Secretaries, Govt. of NCT of Delhi, New Delhi.
10. Commissioner, Municipal Corporation of Delhi, Delhi.
11. Chairperson, New Delhi Municipal Council, Palika Kendra, New Delhi.
12. All Principal Secretaries/Secretaries/HoDs, Govt. of NCT of Delhi.
13. Registrar, High Court of Delhi, New Delhi.
14. Chairperson, DSSSB, Vishwas Nagar, Shahdara, Delhi.
15. Chairperson, Delhi Transco Ltd., Shakti Sadan, Kotla Marg, New Delhi.

- निदेशक, सूचना एवं प्रचार निदेशालय

- मुख्य कार्यकारी अधिकारी, दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड, दिल्ली अग्निशमन सेवा

- अध्यक्ष, दिल्ली बाल अधिकार संरक्षण आयोग, दिल्ली महिला आयोग, दिल्ली सफाई कर्मचारी आयोग, लोक शिकायत आयोग, अन्य पिछड़ा वर्ग आयोग

- आयुक्त, दिल्ली राज्य निर्वाचन आयोग

- सहायक निदेशक, मुद्रण निदेशालय - अंग्रेजी व हिंदी दोनों में प्रतियों सहित

- महाप्रबंधक, भारतीय रिजर्व बैंक, भारतीय स्टेट बैंक

- गार्ड फाइल

इसका अर्थ है - आदेश की जानकारी हर स्तर तक पहुंचे, कोई विभाग यह न कहे कि हमें पता नहीं चला।

**4. छठ पूजा क्या है? - सूर्य षष्ठी का महत्व छठ पूजा को प्रतिहार षष्ठी और सूर्य षष्ठी भी कहा जाता है।**

यह पर्व सूर्य देव और छठी मैया की आराधना का पर्व है।

क. किसकी पूजा होती है?

सूर्य देव - जो जीवन, प्रकाश, ऊर्जा के देवता हैं।

छठी मैया - जो संतान, सुख, समृद्धि की देवी मानी जाती हैं।

ख. कैसे मनाया जाता है?

- व्रती छत्तीस घंटे का निर्जला व्रत रखते हैं

- डूबते सूर्य को अर्घ्य देते हैं

- उगते सूर्य को अर्घ्य देते हैं

- नदी, तालाब, घाट पर खड़े होकर पूजा करते हैं

- ठेकुआ, फल, गन्ना, नारियल का प्रसाद चढ़ाते हैं

ग. दिल्ली में छठ क्यों खास है?

दिल्ली में लाखों पूर्वांचली भाई-बहन रहते हैं - बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड से आए हुए लोग।

उनके लिए छठ केवल त्योहार नहीं, घर की याद है, माटी की खुशबू है, मां के हाथ के ठेकुए का स्वाद है।

दिल्ली के यमुना घाट, तालाब, पार्क, कृत्रिम घाट - हर जगह छठ की छटा दिखती है।

इसलिए दिल्ली सरकार द्वारा छठ पर छुट्टी घोषित करना केवल अवकाश नहीं है, यह सम्मान है।

यह सम्मान है पूर्वांचली संस्कृति का, सूर्य उपासना का, व्रती माताओं-बहनों का।

**5. इस छुट्टी का आम आदमी पर क्या असर होगा?**

क. सरकारी कामकाजः सोलह नवंबर, सोमवार को दिल्ली सरकार के सभी दफ्तर बंद रहेंगे। इसलिए जरूरी सरकारी काम पहले निपटा लें या अगले दिन के लिए रखें।

ख. स्कूल-कॉलेजः दिल्ली सरकार के अधीन आने वाले स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालयों में भी अवकाश का लाभ मिलेगा।

ग. परिवहनः दिल्ली परिवहन निगम को अधिसूचना भेजी गई है, इसलिए बसों के संचालन में त्योहार के अनुसार व्यवस्था की जाएगी। छठ घाटों पर विशेष बसों की व्यवस्था की उम्मीद है।

घ. छठ घाटों पर तैयारीः नगर निगम, नई दिल्ली नगरपालिका परिषद, दिल्ली जल बोर्ड, अग्निशमन सेवा - सभी को अधिसूचना मिली है, इसलिए घाटों की सफाई, पानी, प्रकाश, सुरक्षा की तैयारी समय पर होगी।

ङ. बैंक और केंद्र सरकार के दफ्तरः यह अधिसूचना दिल्ली सरकार के दफ्तरों के लिए है। भारतीय रिजर्व बैंक और भारतीय स्टेट बैंक को केवल जानकारी हेतु भेजी गई है। केंद्र सरकार के दफ्तरों के लिए अलग आदेश लागू होता है।

इसलिए नागरिकों से अपील है - सोलह नवंबर को सरकारी दफ्तर जाने से पहले छुट्टी का ध्यान रखें।

**6. संपादकीय टिप्पणी** - छुट्टी केवल अवकाश नहीं, संस्कृति का सम्मान है परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक का मानना है कि दिल्ली सरकार की यह अधिसूचना समय पर और स्वागत योग्य है।

नौ नवंबर को अधिसूचना जारी हुई, सोलह नवंबर को छुट्टी है - यानी लोगों को तैयारी के लिए पूरा समय मिला।

छठ पूजा केवल एक दिन का पर्व नहीं है।

यह चार दिन का पर्व है - नहाय-खाय, खरना, संध्या अर्घ्य, उषा अर्घ्य।

व्रती माताएं-बहनें छत्तीस घंटे भूखी-प्यासी रहकर सूर्य को अर्घ्य देती हैं।

उनके तप का सम्मान करना सरकार का कर्तव्य है।

**आज संकल्प लें -**

- हम छठ घाटों को साफ रखेंगे, प्लास्टिक नहीं फेंकेंगे

- हम व्रतियों का सम्मान करेंगे, शोर-शराबा नहीं करेंगे

- हम यमुना और तालाबों को गंदा नहीं करेंगे

- हम छठ को केवल पूर्वांचल का पर्व नहीं, दिल्ली का पर्व मानेंगे

क्योंकि सूर्य सबका है, छठ सबकी है।

जो सूर्य डूबते हुए को भी अर्घ्य देता है और उगते हुए को भी, वह हमें सिखाता है - अंधेरा कितना भी हो, उजाला फिर आएगा।

दिल्ली सरकार को इस निर्णय के लिए बधाई।

सभी व्रतियों को छठ पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं।

छठी मैया सबकी मनोकामना पूरी करें।

**- संजय कुमार बाठला, प्रधान संपादक**

---

**परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक - अर्थव्यवस्था व शेयर बाजार विशेष - संपादकीय विश्लेषण**

# दिवाली की महालक्ष्मी ने भारत पर बरसाया कुबेर का खजाना - डॉलर पस्त, रुपया सात महीने के शिखर पर, शेयर बाजार में पैंतीस साल का महा-रिकॉर्ड

ताइवान-कोरिया से निकली अरबों की पूंजी भारत में बरसी, सात दिनों में निवेशकों की दौलत में महा-इजाफा, ड्रैगन के पड़ोसी बाजारों में तबाही, भारत में विदेशी निवेश की सुनामी - दिवाली की रात भारत की किस्मत का महापलट

- प्रस्तुति : संपादकीय विभाग, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

- मूल लेख : एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी, गोंदिया महाराष्ट्र

**मुख्य तथ्य - एक दृष्टि में**

- पर्वः दीपावली दो हजार छब्बीस, संवत दो हजार तिरासी का आर्थिक आगाज

- रुपयाः अमेरिकी डॉलर के मुकाबले सात महीने के उच्चतम स्तर पर, शुरुआती कारोबार में मजबूती

- सेंसेक्स-निफ्टीः लगातार सात कारोबारी सत्रों तक बढ़त, अस्सी हजार और पच्चीस हजार के मनोवैज्ञानिक स्तर पार

- तेजी की रफ्तारः सात दिनों में सेंसेक्स में दस प्रतिशत से अधिक की बढ़त, निफ्टी में भी दस प्रतिशत से अधिक की बढ़त

- निवेशकों की दौलतः एक सप्ताह में बाजार पूंजीकरण में लाखों करोड़ रुपये का इजाफा, कुल पूंजीकरण पांच सौ लाख करोड़ रुपये से ऊपर

- विदेशी निवेशः पांच कारोबारी दिनों में विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों की भारी शुद्ध खरीदारी, अक्टूबर की बिकवाली के बाद बड़ी वापसी

- कच्चा तेलः ब्रेंट क्रूड अक्टूबर अंत के ऊंचे स्तर से गिरकर सौ डॉलर से नीचे, सत्तानवे-अट्ठानवे डॉलर के आसपास

- वैश्विक कारणः कृत्रिम बुद्धिमत्ता कंपनियों में बिकवाली, अमेरिका के मध्यावधि चुनाव, पश्चिम एशिया में तनाव कम होने की उम्मीद

- संदेशः यह लेख निवेश सलाह नहीं, आर्थिक घटनाक्रम का विश्लेषण है - असली लक्ष्मी तब, जब आम आदमी की आय, रोजगार और क्रयशक्ति बढ़े

1. दिवाली केवल दीपों की नहीं रही - अर्थव्यवस्था के लिए भी शुभ संदेश भारत की दीपावली इस वर्ष केवल दीपों, आतिशबाजी, खुशियों और मां लक्ष्मी की आराधना तक सीमित नहीं रही।

बल्कि देश की अर्थव्यवस्था के लिए भी एक बेहद शुभ आर्थिक संदेश लेकर आई है।

दीपावली के आसपास भारतीय शेयर बाजार में आई ऐतिहासिक तेजी, विदेशी निवेशकों की जबरदस्त वापसी, कच्चे तेल की कीमतों में भारी गिरावट और अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपये की मजबूत वापसी ने अंतरराष्ट्रीय आर्थिक जगत का ध्यान भारत की ओर आकर्षित किया है।

एक ओर एशिया के प्रमुख प्रौद्योगिकी बाजारों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़ी कंपनियों के शेयरों में भारी बिकवाली ने निवेशकों की चिंता बढ़ाई, वहीं दूसरी ओर भारतीय बाजार ने इस वैश्विक उथल-पुथल के बीच अपनी अलग पहचान बनाई।

लेखक एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी कहते हैं - विदेशी पूंजी का भारत की ओर रुख करना इस बात का संकेत है कि वैश्विक निवेशक अब भारत की विकास संभावनाओं, कंपनियों की कमाई और बाजार के मूल्यांकन को नए दृष्टिकोण से देख रहे हैं।

ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो दीपावली की शुभ रात्रि में मां महालक्ष्मी की कृपा ने भारतीय अर्थव्यवस्था को एक नई ऊर्जा प्रदान की हो। लेकिन इस तेजी को स्थायी आर्थिक विजय मानने के बजाय इसके पीछे काम कर रहे वास्तविक आर्थिक कारकों को समझना भी उतना ही आवश्यक है।

2. डॉलर की अकड़ कमजोर - रुपये ने लगाई सात महीने की छलांग दीपावली के बाद भारतीय मुद्रा बाजार से भी उत्साहजनक खबर सामने आई।

अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपये ने शुरुआती कारोबार में मजबूती हासिल करते हुए लगभग सात महीने का उच्चतम स्तर छू लिया।

इससे पहले वाले कारोबारी दिन में रुपया कुछ नीचे बंद हुआ था।

रुपया मजबूत क्यों हुआ?

क. डॉलर की कमजोरीः अमेरिका में राजनीतिक समीकरण और ब्याज दरों को लेकर अनिश्चितता से डॉलर पर दबाव आया।

ख. कच्चे तेल की कीमतों में गिरावटः तेल सस्ता हुआ, तो भारत का आयात बिल कम हुआ, रुपये पर दबाव घटा।

ग. विदेशी निवेशकों की वापसीः

विदेशी पैसा भारत में आया, तो रुपये की मांग बढ़ी, रुपया मजबूत हुआ।

घ. पश्चिम एशिया में तनाव कम होने की उम्मीदः युद्ध और तनाव की आशंका घटी, तो ऊर्जा बाजार में राहत मिली।

रुपये की मजबूती का अर्थ क्या है? भारत अपनी जरूरत का लगभग नब्बे प्रतिशत कच्चा तेल आयात करता है।

जब अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल महंगा होता है, तब भारत को आयात के लिए अधिक डॉलर खर्च करने पड़ते हैं। इससे विदेशी मुद्रा भंडार, चालू खाते के घाटे और रुपये पर दबाव बढ़ सकता है।

इसके विपरीत कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट से भारत का आयात बिल कम करने में सहायता मिलती है।

इसलिए रुपये की मौजूदा मजबूती को भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए सकारात्मक संकेत के रूप में देखा जा सकता है। फिर भी यह समझना आवश्यक है कि यह सुधार पिछले महीनों की तुलना में सुधार है, रुपये की ऐतिहासिक रूप से सबसे मजबूत स्थिति नहीं। असली चुनौती इस सुधार को लंबे समय तक बनाए रखने की होगी।

3. ड्रैगन के पड़ोसियों में बेचैनी - भारत में विदेशी पूंजी की बरसात इस आर्थिक घटनाक्रम का सबसे महत्वपूर्ण पहलू विदेशी निवेशकों की बदली हुई रणनीति है।

क. पहले पैसा कहां जा रहा था? पिछले कुछ समय से विदेशी निवेशकों की पूंजी का बड़ा हिस्सा अमेरिका तथा एशिया के प्रौद्योगिकी आधारित बाजारों की ओर जा रहा था।

दक्षिण कोरिया और ताइवान जैसे देशों के शेयर बाजार कृत्रिम बुद्धिमत्ता, चिप निर्माण और तकनीकी कंपनियों से जुड़े निवेश के प्रमुख केंद्र बने हुए थे।

ख. फिर क्या बदला? जब निवेशकों के मन में यह सवाल उठने लगा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में कंपनियां जितना विशाल निवेश कर रही हैं, उसके अनुपात में भविष्य में कमाई कितनी होगी, तब वैश्विक बाजारों में मुनाफावसूली और बिकवाली का दबाव बढ़ गया।

इसका असर दक्षिण कोरिया, ताइवान और जापान के बाजारों पर भी दिखाई दिया।

ग. भारत क्यों आकर्षक बना? इसी बदले हुए वातावरण में भारत विदेशी निवेशकों के लिए एक आकर्षक विकल्प बनकर उभरा।

विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने पांच कारोबारी दिनों में भारतीय शेयरों में भारी शुद्ध खरीदारी की। यह आंकड़ा अक्टूबर में विदेशी निवेशकों की भारी शुद्ध बिकवाली से भी अधिक महत्वपूर्ण वापसी को दर्शाता है।

एक ही दिन में भी विदेशी संस्थागत निवेशकों ने हजारों करोड़ रुपये की शुद्ध खरीदारी की।

इस घटनाक्रम का व्यापक संदेश यह है कि अंतरराष्ट्रीय पूंजी किसी एक देश की स्थायी संपत्ति नहीं होती, बल्कि वह बेहतर अवसर, संभावित लाभ और जोखिम के संतुलन की तलाश में लगातार अपना ठिकाना बदलती रहती है।

भारत को इस बदलाव का लाभ मिलता दिखाई दे रहा है।

4. संवत दो हजार तिरासी का आगाज - दलाल स्ट्रीट पर पैंतीस वर्षों का ऐतिहासिक धमाका भारतीय शेयर बाजार की दीपावली से पहले की तेजी ने इस बार इतिहास के पन्नों में अपना नाम दर्ज कराया है।




सेंसेक्स और निफ्टी लगातार सात कारोबारी सत्रों तक बढ़त के साथ बंद हुए।

इस सात दिवसीय तेजी में सेंसेक्स लगभग दस प्रतिशत से अधिक यानी हजारों अंक चढ़ा, जबकि निफ्टी में भी लगभग दस प्रतिशत से अधिक की बढ़त दर्ज की गई।

पिछले पैंतीस वर्षों में दीपावली से पहले इतनी बड़ी सात सत्रों की तेजी देखने को नहीं मिली थी।

दोनों प्रमुख सूचकांकों ने अस्सी हजार और पच्चीस हजार के महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक स्तरों को पार किया।

इस तेजी के दौरान बीएसई में सूचीबद्ध कंपनियों का कुल बाजार पूंजीकरण लाखों करोड़ रुपये बढ़कर पांच सौ लाख करोड़ रुपये से ऊपर पहुंच गया।

इसका अर्थ है कि निवेशकों की संपत्ति में एक सप्ताह के भीतर भारी वृद्धि हुई।

दीपावली के बाद वाले कारोबारी दिन को भी निफ्टी और सेंसेक्स फरवरी के बाद अपने सबसे ऊंचे स्तर पर पहुंचे।

इस प्रकार दीपावली के आसपास भारतीय बाजारों में उत्साह का वातावरण बना रहा।

5. भारत के पक्ष में काम कर रहे तीन बड़े आर्थिक महाफैक्टर

पहला महाफैक्टर - कच्चे तेल की कीमतों में भारी गिरावट पश्चिम एशिया में तनाव कम होने और अमेरिका-ईरान के बीच संभावित कूटनीतिक समाधान की उम्मीदों ने अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा बाजार में राहत पैदा की है।

ब्रेंट क्रूड की कीमत अक्टूबर के अंत में ऊंचे स्तर के आसपास पहुंचने के बाद गिरकर सौ डॉलर से नीचे आ गई।

यह भारत के लिए बड़ी राहत है, क्योंकि तेल की कीमतों में कमी से आयात बिल, महंगाई और विदेशी मुद्रा की मांग पर दबाव कम हो सकता है।

दूसरा महाफैक्टर - विदेशी निवेशकों की वापसी विदेशी संस्थागत निवेशकों की वापसी ने बाजार को नई ऊर्जा दी।

पूरे सप्ताह में विदेशी पूंजी का प्रवाह और भी अधिक रहा।

तीसरा महाफैक्टर - भारतीय कंपनियों का प्रदर्शन और निवेश अवसर बैंकिंग, वित्तीय सेवाओं और कई अन्य क्षेत्रों में शेयरों की तेजी ने बाजार को मजबूती प्रदान की।

निवेशकों को उम्मीद है कि यदि कंपनियों की कमाई में सुधार जारी रहता है और शेयरों का मूल्यांकन आकर्षक बना रहता है, तो भारतीय बाजार में विदेशी पूंजी का प्रवाह आगे भी जारी रह सकता है।

6. अमेरिका के मध्यावधि चुनाव और कृत्रिम बुद्धिमत्ता की चिंता ने बदला निवेश का वैश्विक गणित इस पूरी कहानी का एक महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय पहलू अमेरिका के मध्यावधि चुनावों और कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़ी कंपनियों में आई बिकवाली से भी जुड़ा है।

अमेरिका में राजनीतिक समीकरणों में बदलाव तथा राष्ट्रपति की नीतियों को लेकर निवेशकों की नई अपेक्षाओं ने वैश्विक बाजारों में अनिश्चितता बढ़ाई है।

दूसरी ओर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में अत्यधिक पूंजी निवेश, महंगे डेटा केंद्रों और भविष्य में संभावित कमाई को लेकर उठे सवालों ने तकनीकी कंपनियों के शेयरों पर दबाव बनाया।

दक्षिण कोरिया और ताइवान जैसे देशों के बाजार इस घटनाक्रम से प्रभावित हुए।

भारत को इस स्थिति में तुलनात्मक लाभ इसलिए मिला क्योंकि भारतीय शेयर बाजार का स्वरूप केवल तकनीकी कंपनियों पर निर्भर नहीं है।

यहां बैंकिंग, वित्तीय सेवाओं, दूरसंचार, वाहन, दवा, उपभोक्ता वस्तुओं और औद्योगिक कंपनियों की भी महत्वपूर्ण हिस्सेदारी है।

इस विविधता ने वैश्विक प्रौद्योगिकी क्षेत्र की बिकवाली के बीच भारतीय बाजार को अपेक्षाकृत बेहतर अवसर प्रदान किया।

हालांकि, इसका अर्थ यह नहीं है कि भारत वैश्विक आर्थिक संकट से पूरी तरह सुरक्षित है। अंतरराष्ट्रीय निवेश का वातावरण बदलने पर भारतीय बाजार भी प्रभावित हो सकता है।

7. क्या भारतीय अर्थव्यवस्था बनने जा रही है वैश्विक निवेशकों की पहली पसंद? आज अंतरराष्ट्रीय निवेशकों के सामने सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि आने वाले वर्षों में आर्थिक विकास, उपभोक्ता मांग, कंपनियों की कमाई और राजनीतिक स्थिरता के लिहाज से कौन-सा देश बेहतर अवसर प्रदान करेगा।

भारत के पक्ष में ताकतें -

- विशाल घरेलू बाजार
- युवा आबादी
- बढ़ता मध्यम वर्ग
- डिजिटल भुगतान व्यवस्था
- बुनियादी ढांचे में निवेश
- सेवा क्षेत्र की मजबूती

भारतीय अर्थव्यवस्था में उपभोग की व्यापक संभावनाएं हैं और देश की विकास यात्रा को केवल विदेशी मांग पर निर्भर नहीं रहना पड़ता।

यही कारण है कि वैश्विक अनिश्चितता के बीच भी भारत निवेशकों की निगाहों में महत्वपूर्ण बना हुआ है।

लेकिन केवल शेयर बाजार का चढ़ना पर्याप्त नहीं है।

आर्थिक महाशक्ति बनने के लिए -

- रोजगार सृजन
- औद्योगिक उत्पादन
- निर्यात में वृद्धि
- किसानों की आय
- महंगाई पर नियंत्रण
- आम नागरिकों की क्रयशक्ति में सुधार

भी उतने ही आवश्यक हैं।

भारत को अपनी आर्थिक मजबूती का लाभ समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाना होगा।

8. आगे क्या? - लक्ष्मी की कृपा जारी रहेगी या मुनाफावसूली का तूफान आएगा? अब सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या संवत दो हजार तिरासी में भारतीय शेयर बाजार की यह तेजी लगातार जारी रहेगी?

बाजार की दिशा तय करने वाले कारक -

- विदेशी निवेशकों की खरीदारी में निरंतरता
- कच्चे तेल की कीमतों का स्तर
- अमेरिकी डॉलर की चाल
- अमेरिकी फेडरल रिजर्व की ब्याज दर संबंधी नीतियां
- पश्चिम एशिया की परिस्थितियां
- भारतीय कंपनियों के तिमाही नतीजे

सात कारोबारी सत्रों की जबरदस्त तेजी के बाद कुछ निवेशक मुनाफा वसूली कर सकते हैं, जिससे बाजार में उतार-चढ़ाव आना स्वाभाविक है।

इसके अतिरिक्त यदि कच्चे तेल की कीमतें फिर बढ़ती हैं अथवा विदेशी निवेशक दोबारा भारतीय बाजार से पूंजी निकालने लगते हैं, तो रुपये और शेयर बाजार दोनों पर दबाव भी अधिक बढ़ सकता है।

इसलिए निवेशकों को केवल तेजी देखकर उत्साहित होने के बजाय आर्थिक बुनियाद, कंपनियों के वास्तविक प्रदर्शन और जोखिम का आकलन करना चाहिए।

**9. संपादकीय टिप्पणी** - असली लक्ष्मी शेयर बाजार में नहीं, आम आदमी की जेब में है परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक का मानना है कि दीपावली दो हजार छब्बीस के आसपास भारतीय अर्थव्यवस्था को अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों से एक महत्वपूर्ण सकारात्मक अवसर मिला है।

दक्षिण कोरिया और ताइवान के बाजारों में तकनीकी शेयरों की बिकवाली, विदेशी निवेशकों का भारतीय बाजार की ओर लौटना, कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट, रुपये की सात महीने की ऊंचाई और सेंसेक्स-निफ्टी की पैंतीस वर्षों की रिकॉर्ड प्री-दिवाली तेजी ने भारत की आर्थिक संभावनाओं को वैश्विक चर्चा के केंद्र में ला दिया है।

यह निश्चित रूप से भारत के लिए उत्साहजनक समय है।

मां लक्ष्मी की आराधना के पर्व पर भारतीय अर्थव्यवस्था को मिले इन सकारात्मक संकेतों को आर्थिक समृद्धि की शुभ शुरुआत के रूप में देखा जा सकता है।

लेकिन वास्तविक आर्थिक लक्ष्मी तभी मानी जाएगी, जब -

- शेयर बाजार की बढ़ती संपत्ति के साथ आम आदमी की आय बढ़े
- रोजगार के अवसर पैदा हों
- महंगाई नियंत्रित रहे
- देश का उत्पादन तथा निर्यात मजबूत हो

भारत के पास वैश्विक आर्थिक नेतृत्व की दिशा में आगे बढ़ने का अवसर अवश्य है।

अब चुनौती इस अवसर को स्थायी आर्थिक शक्ति में बदलने की है।

दिवाली के दीपों से जगमगाते भारत के लिए संवत दो हजार तिरासी आर्थिक आत्मविश्वास, निवेश और समृद्धि का नया अध्याय लिख सकता है।

शेयर बाजार की लक्ष्मी को घर-घर की लक्ष्मी बनाना ही असली दिवाली होगी।

**- संजय कुमार बाठला, प्रधान संपादक**

# परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक - मानवता व साहस विशेष - संपादकीय विश्लेषण

## आग के बीच फरिश्ते बन गए आम लोग - साकेत में जब सीढ़ी छोटी पड़ गई, तो इंसानियत बड़ी हो गई

# दिल्ली के एमजी रोड पर कार शोरूम में लगी भीषण आग, फायर ब्रिगेड की सीढ़ी नहीं पहुंची तो भीड़ ने गद्दों की सीढ़ी बनाकर फंसे लोगों को उतारा, धुएं और लपटों के बीच दिल्ली ने फिर दिखाया - हम एक हैं

- प्रस्तुति : संपादकीय विभाग, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

**मुख्य तथ्य - एक दृष्टि में**

**- स्थान:** दिल्ली का एमजी रोड, साकेत क्षेत्र में स्थित एक कार शोरूम वाली इमारत

- घटना: इमारत में भीषण आग लगी, ऊपरी मंजिलों से घना काला धुआं निकलने लगा

- संकट: कई लोग इमारत के अंदर ऊपरी मंजिलों पर फंसे हुए थे

- चुनौती: आग बुझाने वाली गाड़ी की सीढ़ी इतनी बड़ी नहीं थी कि ऊपरी मंजिल तक पहुंच सके

- समाधान: दमकल कर्मियों और आम लोगों ने मिलकर सीढ़ी लगाई, नीचे गद्दे बिछाए, और एक-एक करके फंसे लोगों को नीचे उतारा

- संपादकीय संदेश: यह केवल आग की खबर नहीं है, यह दिल्ली की इंसानियत की खबर है।

1. वह दृश्य जो देखकर सांस रुक जाए ऊपर से घना काला धुआं निकल रहा है। नीचे आग की लपटें दिखाई दे रही हैं। इमारत के ऊपरी हिस्से में कई लोग फंसे हुए हैं, मदद के लिए पुकार रहे हैं।

नीचे सड़क पर दमकल की गाड़ियां हैं, दमकल कर्मी आग बुझाने में लगे हैं। लेकिन आग इतनी ऊपर है कि सीढ़ी वहां तक पहुंच नहीं पा रही है।

तभी कुछ ऐसा होता है, जो दिल्ली को दिल्ली बनाता है। भीड़ तमाशा देखने नहीं रुकती, मदद करने के लिए आगे आ जाती है।

1. कोई सीढ़ी लेकर आता है।

2. कोई गद्दे लेकर आता है।

3. कोई नीचे खड़ा होकर गद्दे पकड़ता है, ताकि यदि कोई कूदे तो उसे चोट न लगे।

4. कोई दमकल कर्मी के साथ मिलकर सीढ़ी को पकड़ता है, ताकि वह हिले नहीं।

धुएं और लपटों के बीच,

1. एक-एक करके फंसे लोग नीचे उतरते हैं।

2. हर व्यक्ति के नीचे उतरते ही भीड़ में तालियां नहीं, राहत की सांस सुनाई देती है।

यह घटना साकेत में कार शोरूम वाली इमारत में हुई।

2. जब व्यवस्था छोटी पड़ जाए, तब जनता बड़ी हो जाती है इस घटना में दो सच्चाइयां एक साथ सामने आईं।

पहली सच्चाई - व्यवस्था की कमी: दमकल की गाड़ी की सीढ़ी इतनी बड़ी नहीं थी कि वह ऊपरी मंजिल तक पहुंच सके। यह एक गंभीर प्रश्न है।

दिल्ली जैसे बड़े शहर में जहां ऊंची-ऊंची इमारतें हैं,

1. वहां क्या हमारे पास हर ऊंचाई तक पहुंचने वाले उपकरण हैं?

2. क्या हर शोरूम, हर मॉल, हर ऊंची इमारत के लिए आग से बचने की व्यवस्था की जांच होती है?

3. क्या इमारतों में आग से बचने के लिए पर्याप्त निकास द्वार, सीढ़ियां और अलार्म हैं?

यह प्रश्न सरकार, नगर निगम, दमकल विभाग और भवन मालिकों से पूछा जाना चाहिए।

दूसरी सच्चाई - जनता की महानता: जब व्यवस्था छोटी पड़ गई, तो जनता बड़ी हो गई।

आम लोगों ने डर के मारे भागने के बजाय, जान जोखिम में डालकर दूसरों की जान बचाई।

दमकल कर्मियों ने भी हार नहीं मानी। उन्होंने जनता के साथ मिलकर काम किया। वर्दी और आम कपड़ों का भेद मिट गया। सबका एक ही लक्ष्य था - किसी की जान न जाए।

यही भारत है। जहां जब मुसीबत आती है, तो हम जाति, धर्म, अमीर-गरीब भूलकर एक हो जाते हैं।

3. गद्दों की सीढ़ी - जुगाड़ नहीं, जज्बा था कई लोग इसे जुगाड़ कह रहे हैं लेकिन संपादकीय विभाग का मानना है कि यह जुगाड़ नहीं, जज्बा था।

- सीढ़ी: इमारत के सहारे लगाई गई, ताकि फंसे लोग नीचे आ सकें

- गद्दे: नीचे बिछाए गए, ताकि यदि कोई संतुलन खोकर गिरे, तो उसे गंभीर चोट न लगे

- हाथ: कई हाथों ने सीढ़ी को पकड़ा, ताकि वह हिले नहीं

- आवाज: नीचे से लोग चिल्ला-चिल्लाकर फंसे लोगों को हिम्मत दे रहे थे - घबराओ मत, धीरे-धीरे आओ, हम यहीं हैं

धुएं में सांस लेना कठिन होता है। आंखों में जलन होती है। डर से पैर कांपते हैं।

ऐसे में नीचे से मिली एक आवाज - हम यहीं हैं - किसी के लिए जीवन की डोर बन जाती है।

जिन लोगों ने गद्दे पकड़े, उन्होंने किसी की जान नहीं बचाई, उन्होंने किसी के परिवार को टूटने से बचाया।

4. कार शोरूम में आग क्यों खतरनाक होती है? - समझिए खतरा कार शोरूम में आग सामान्य आग से अधिक खतरनाक होती है, क्योंकि -

क. पेट्रोल, डीजल और तेल: शोरूम में वाहनों में ईंधन और तेल होता है, जो आग को तेजी से फैलाता है।

ख. टायर और प्लास्टिक: टायर, सीट, प्लास्टिक के सामान जलने पर बहुत अधिक काला धुआं और जहरीली गैस छोड़ते हैं।

ग. कांच और बंद जगह: शोरूम में कांच के दरवाजे और बंद एयर कंडीशन वाली जगह होती है, जिससे धुआं बाहर नहीं निकलता, अंदर ही भर जाता है।

घ. ऊपरी मंजिलों पर फंसना: आग नीचे लगती है, धुआं ऊपर जाता है। इसलिए ऊपरी मंजिलों पर फंसे लोगों को सबसे अधिक खतरा होता है।इसीलिए ऐसी इमारतों में आग से बचने की व्यवस्था सबसे अधिक जरूरी है।

**5. आग लगने पर क्या करें, क्या न करें? - जीवन बचाने वाली जानकारी**




यदि आप आग वाली इमारत में फंस जाएं तो -

- घबराएं नहीं, शांत रहें, मदद के लिए आवाज लगाएं

- धुएं से बचने के लिए नाक और मुंह को गीले कपड़े से ढकें

- नीचे झुककर चलें, क्योंकि धुआं ऊपर उठता है, नीचे हवा साफ रहती है

- लिफ्ट का उपयोग कभी न करें, सीढ़ियों का उपयोग करें

- यदि बाहर निकलना संभव न हो, तो खिड़की के पास जाएं, मदद के लिए संकेत दें

- आग वाले कमरे का दरवाजा बंद कर दें, ताकि आग और धुआं न फैले

यदि आप नीचे खड़े हैं और मदद करना चाहते हैं तो -

- भीड़ न लगाएं, दमकल की गाड़ियों को रास्ता दें

- दमकल कर्मियों के निर्देशों का पालन करें, अपनी मनमानी न करें

- अफवाह न फैलाएं, वीडियो बनाने से अधिक मदद करने को प्राथमिकता दें

- घायलों को तुरंत अस्पताल पहुंचाने में मदद करें

- आग बुझाने का सामान हो तो प्रशिक्षित व्यक्ति ही उसका उपयोग करे

**संपादकीय अपील:** हर विद्यालय, हर कार्यालय, हर शोरूम में आग से बचने का प्रशिक्षण होना चाहिए। हर परिवार को यह पता होना चाहिए कि आग लगने पर सबसे पहले क्या करना है।

6. प्रश्न जो अब पूछे जाने चाहिए - केवल तारीफ से काम नहीं चलेगा हम उन बहादुर लोगों को सलाम करते हैं, जिन्होंने जान बचाई। लेकिन केवल सलाम से काम नहीं चलेगा।

**प्रश्न एक** - ऊंची इमारतों के लिए उपकरण कहां हैं?

1. क्या दिल्ली के हर दमकल केंद्र के पास ऊंची इमारतों तक पहुंचने वाली सीढ़ी है?

2. यदि नहीं, तो कब तक आएगी?

प्रश्न दो - शोरूमों की जांच होती है या नहीं?

1. क्या इस शोरूम में आग से बचने के सभी नियमों का पालन हो रहा था?

2. फायर सेफ्टी का प्रमाणपत्र कब जांचा गया था?

**प्रश्न तीन -**

1. निकास द्वार कहां थे?

2. फंसे लोगों को सीढ़ी से क्यों उतारना पड़ा?

3. क्या इमारत में आपातकालीन निकास द्वार नहीं था, या वह बंद था?

**प्रश्न चार** - आम लोगों को प्रशिक्षण कौन देगा? आज जनता ने बिना प्रशिक्षण के जान बचाई। यदि उन्हें थोड़ा प्रशिक्षण दिया जाए, तो वे और अधिक जान बचा सकते हैं।

**प्रश्न पांच** - वीडियो बनाने वाले से अधिक मदद करने वाले कब बनेंगे?

इस घटना में मदद करने वाले अधिक थे, यह अच्छी बात है। लेकिन कई घटनाओं में लोग केवल वीडियो बनाते हैं। हमें वीडियो बनाने वाली संस्कृति से मदद करने वाली संस्कृति की ओर जाना होगा।

**7. संपादकीय टिप्पणी** - दिल्ली की असली पहचान क्या है? दिल्ली को अक्सर प्रदूषण, ट्रैफिक जाम, भीड़ और गुस्से के लिए जाना जाता है लेकिन इस घटना ने दिल्ली की असली पहचान दिखा दी।

1. दिल्ली की असली पहचान वह भीड़ नहीं है, जो जाम में फंसी है।

2. दिल्ली की असली पहचान वह भीड़ है, जो आग में फंसे लोगों के लिए गद्दे लेकर खड़ी हो गई।

दमकल कर्मी और आम लोग - दोनों ने मिलकर दिखाया कि जब इंसानियत जागती है, तो सीढ़ी की लंबाई मायने नहीं रखती।

सीढ़ी छोटी थी, लेकिन हौसला बड़ा था।

धुआं घना था, लेकिन इरादा उससे अधिक मजबूत था।

आग बड़ी थी, लेकिन इंसानियत उससे भी बड़ी थी।

परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक उन सभी अनजान नायकों को सलाम करता है, जिनके नाम हम नहीं जानते, लेकिन जिनके कारण आज कई परिवारों में दीया जल रहा है।

आज संकल्प लें -

1. हम केवल दर्शक नहीं बनेंगे, मददगार बनेंगे।

2. हम केवल वीडियो नहीं बनाएंगे, हाथ बढ़ाएंगे।

3. हम अपनी इमारत की आग सुरक्षा जांचेंगे, ताकि कल किसी को गद्दों की सीढ़ी न बनानी पड़े।

क्योंकि एक जान बचाना, पूरी मानवता को बचाने जैसा है।

**- संजय कुमार बाठला,**
**प्रधान संपादक**

## परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक - जनहित में जानकारी / लोकसभा / सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय

# गाड़ी चलाते समय हैंड-फ्री पर बात करना अपराध नहीं - हाथ में मोबाइल पकड़कर बात करना ही दंडनीय है, संसद में सरकार ने साफ किया

लोकसभा अतारांकित प्रश्न संख्या 1837, उत्तर - 29 जुलाई 2021 | सवाल सांसद श्री हिबी ईडन का | जवाब केंद्रीय मंत्री श्री नितिन जयराम गडकरी का | मोटर वाहन (संशोधन) अधिनियम, 2019 की धारा 184(c) पर भ्रम दूर

रिपोर्ट केके छाबड़ा प्रस्तुतकर्ता सह संपादक: पिंकी कुंडू

**नई दिल्ली** - गाड़ी चलाते समय मोबाइल पर बात करने को लेकर चालकों में सबसे बड़ा भ्रम यही रहता है - क्या ब्लूटूथ / हैंड-फ्री पर बात करना भी चालान का कारण है?

इस भ्रम को संसद में ही दूर कर दिया गया था। सरकार ने लोकसभा में लिखित में स्पष्ट किया है कि हैंड-फ्री का इस्तेमाल दंडनीय नहीं है, हाथ में पकड़े हुए - हैंड-हेल्ड - डिवाइस का इस्तेमाल दंडनीय है।

परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक जनहित में यह जानकारी फिर से प्रकाशित कर रहा है ताकि किसी चालक का गलत चालान न हो और कोई चालक कानून को गलत समझकर जान जोखिम में न डाले।

**तथ्य एक नज़र में - बिंदु - विवरण**

सदन लोकसभा

प्रश्न संख्या अतारांकित प्रश्न संख्या 1837

उत्तर की तारीख 29 जुलाई, 2021

विषय मोटर वाहन (संशोधन) अधिनियम, 2019

संबंधित धारा धारा 184(c)

प्रश्न पूछने वाले श्री हिबी ईडन, सांसद

जवाब देने वाले श्री नितिन जयराम गडकरी, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री

मंत्रालय भारत सरकार, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय

**मुख्य बिंदु**

1. सवाल क्या था? क्या मोटर वाहन (संशोधन) अधिनियम, 2019 की धारा 184(c) मोटर वाहनों में हैंड-फ्री कम्युनिकेशन फीचर के इस्तेमाल को दंडित करती है? और यदि हां, तो उसका विवरण क्या है?

2. सरकार का जवाब क्या था?

No Sir - नहीं, श्रीमान।

धारा 184(c) मोटर वाहन चलाते समय हैंड-हेल्ड कम्युनिकेशन डिवाइस के इस्तेमाल को दंडित करती है।

**3. सीधा मतलब क्या हुआ?**

- हाथ में मोबाइल पकड़कर बात करना / मैसेज करना - दंडनीय

- हैंड-फ्री / ब्लूटूथ / कार के स्पीकर से बात करना - इस धारा में दंडनीय नहीं बताया गया

**4. क्यों है यह फर्क ज़रूरी?**

हाथ में फोन पकड़ने से एक हाथ स्टीयरिंग से हट जाता है, नज़र सड़क से हटती है, रिएक्शन टाइम बढ़ जाता है। हैंड-फ्री में दोनों हाथ स्टीयरिंग पर रहते हैं। इसीलिए कानून ने दोनों में फर्क किया है।

**5. यह छूट लापरवाही की छूट नहीं है:** हैंड-फ्री दंडनीय नहीं है, इसका मतलब यह नहीं कि गाड़ी चलाते समय लंबी बातचीत सुरक्षित है। ध्यान भटकना तब भी खतरनाक है।

**भाग 1** - संसद में क्या पूछा गया, क्या जवाब मिला? लोकसभा में सांसद श्री हिबी ईडन ने सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री से पूछा -

>(a) क्या धारा 184(c) हैंड-फ्री कम्युनिकेशन फीचर के इस्तेमाल को दंडित करती है?

>(b) यदि हां, तो विवरण क्या है?

मंत्री श्री नितिन जयराम गडकरी ने (a) और (b) दोनों का एक साथ जवाब दिया -

>No Sir, Section 184(c) of the Motor Vehicles (Amendment) Act, 2019 penalises the use of hand-held communication devices while driving Motor Vehicles.

अर्थात - नहीं, धारा 184(c) गाड़ी चलाते समय हाथ में पकड़े जाने वाले संचार उपकरणों के इस्तेमाल को दंडित करती है।

**भाग 2 - चालकों के लिए सीधी जानकारी**

इन बातों का ध्यान रखें -

- गाड़ी चलाते समय फोन हाथ में लेकर बात न करें

- फोन हाथ में लेकर मैसेज, वीडियो, रील न देखें

- अगर बात ज़रूरी है तो गाड़ी सुरक्षित जगह रोककर बात करें

- हैंड-फ्री का इस्तेमाल करें तो भी बात छोटी रखें, ध्यान सड़क पर रखें

- चालान से बचने के लिए नहीं, जान बचाने के लिए नियम मानें

**भाग 3** - पुलिस / चालान को लेकर भ्रम क्यों? कई बार चालक कहते हैं - "मैं तो हैंड-फ्री पर था, फिर चालान क्यों?"

इस लेख का उद्देश्य यही भ्रम दूर करना है। सरकार का संसद में दिया गया जवाब ही सबसे बड़ा आधिकारिक प्रमाण है कि धारा 184(c) हैंड-हेल्ड पर लागू होती है, हैंड-फ्री पर नहीं।

फिर भी, मौके पर स्थिति, अन्य धाराएं और खतरनाक ड्राइविंग के नियम अलग से लागू हो सकते हैं। इसलिए सबसे सुरक्षित तरीका यही है - गाड़ी चलाते समय फोन से दूरी बनाए रखें।

**संपादकीय टिप्पणी** - कानून जानना भी सुरक्षा है परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक का मानना है कि हर चालक को कानून की सही जानकारी होनी चाहिए।

गलत जानकारी से गलत चालान होता है और गलत जानकारी से ही हादसा भी होता है।

**आज का संकल्प -**

फोन हाथ में नहीं, ध्यान सड़क पर।

हैंड-फ्री भी ज़रूरत पर ही, सुरक्षा सबसे पहले।

**- संजय कुमार बाठला,**
**प्रधान संपादक, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक**

***नोट:*** *यह लेख लोकसभा में दिए गए आधिकारिक उत्तर के आधार पर जनहित में जानकारी हेतु प्रकाशित है। किसी विशेष चालान / मामले में संबंधित राज्य के परिवहन विभाग / यातायात पुलिस के नियमों की पुष्टि अवश्य करें।*

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF ROAD TRANSPORT AND HIGHWAYS

LOK SABHA
UNSTARRED QUESTION NO. 1837
ANSWERED ON 29TH JULY, 2021

THE MOTOR VEHICLES (AMENDMENT) ACT, 2019

1837. SHRI HIBI EDEN:

Will the Minister of ROAD TRANSPORT AND HIGHWAYS
सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री
be pleased to state:

(a) whether Section 184 (c) of the Motor Vehicles (Amendment) Act, 2019 penalises the use of hand-free communication features in motor vehicles; and

(b) if so, the details thereof?

ANSWER

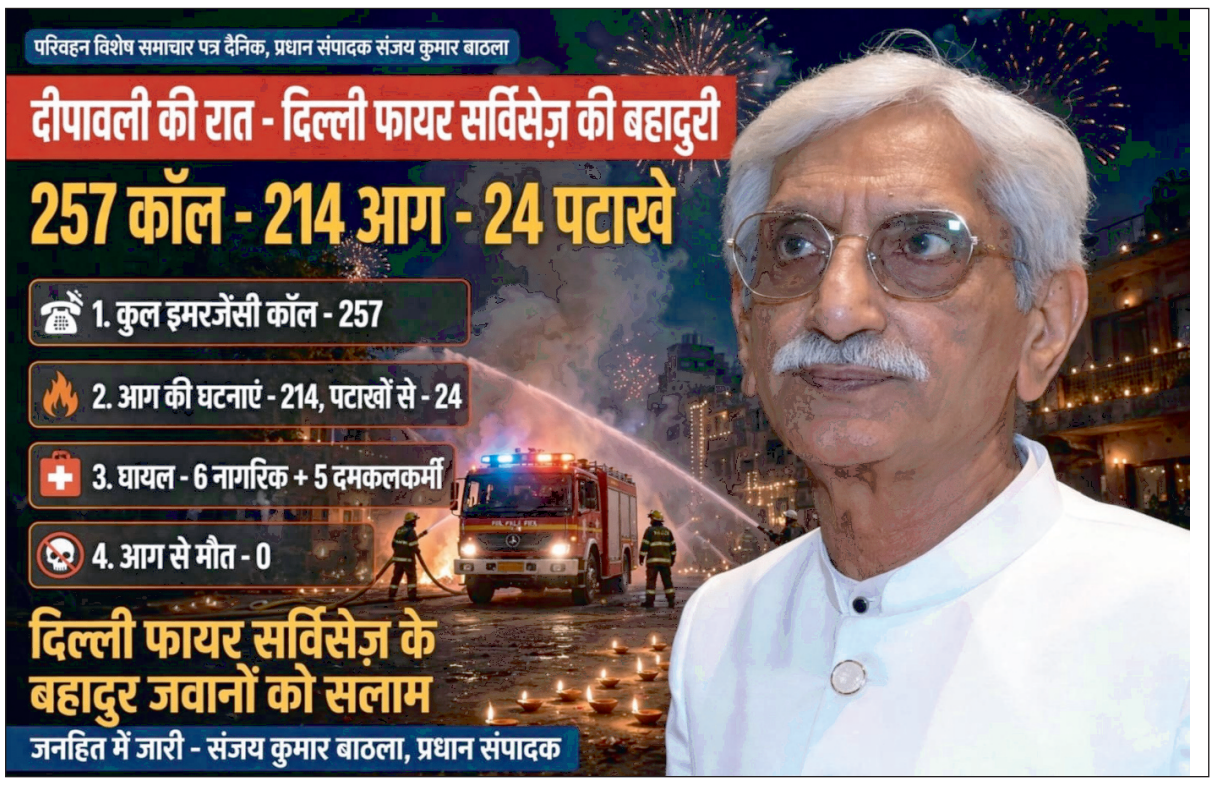
THE MINISTER OF ROAD TRANSPORT AND HIGHWAYS

(SHRI NITIN JAIRAM GADKARI)

(a) and (b) No Sir, Section 184(c) of the Motor Vehicles (Amendment) Act, 2019 penalises the use of hand-held communication devices while driving Motor Vehicles.

*****

# बीसलपुर-भुता-बरेली हाईवे अब फोरलेन बनेगा - सांसद जितिन प्रसाद की बड़ी पहल, 32 KM के लिए 50 करोड़ का प्रस्ताव शासन को भेजा




NH-730B पर 24 घंटे हजारों वाहनों का दबाव, जाम और ब्लैक स्पॉट्स पर हादसे | पहले सिर्फ चौड़ीकरण की थी प्रक्रिया, अब फोरलेन का रास्ता साफ | मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से भी की गई सिफारिश

प्रकाशनार्थ विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र पीलीभीत - बरेली

बीसलपुर-भुता-बरेली नेशनल हाईवे (NH-730B) को फोरलेन बनाने का रास्ता साफ हो गया है। पीलीभीत के लोकप्रिय सांसद एवं केंद्रीय राज्य मंत्री श्री जितिन प्रसाद जी ने जनता की परेशानी को देखते हुए इस मार्ग को फोरलेन कराने की पैरवी की है।

वर्षों पुरानी मांग अब पूरी होने की ओर है।

तथ्य एक नज़र में - बिंदु - विवरण

हाईवे बीसलपुर-भुता-बरेली नेशनल हाईवे, NH-730B

लंबाई 32 किलोमीटर

लागत लगभग 50 करोड़ रुपये

पहल पीलीभीत सांसद एवं केंद्रीय राज्य मंत्री श्री जितिन प्रसाद

जानकारी दी देवस्वरूप पटेल, प्रांतीय संरक्षक, क्रांतिकारी विचार मंच उत्तर प्रदेश एवं किसान नेता

सिफारिश मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी से भी की गई

स्थिति प्रस्ताव तैयार कर शासन को भेज दिया गया

**मुख्य बिंदु**

1. पहले सिर्फ चौड़ीकरण, अब फोरलेन: पहले इस मार्ग के केवल चौड़ीकरण की प्रक्रिया चल रही थी। लेकिन दबाव और हादसों को देखते हुए अब फोरलेन बनाने का फैसला हुआ।

2. 24 घंटे हजारों वाहनों का दबाव: इस हाईवे पर 24 घंटे हजारों छोटे-बड़े वाहनों का दबाव रहता है। सैकड़ों गांवों के लोगों का आवागमन इसी मार्ग से होता है।

3. जाम और ब्लैक स्पॉट्स पर हादसे: मंडरा, सुमन, रसूला, अहरोला जैसे ब्लैक स्पॉट्स पर लगातार दुर्घटनाएं हो रही थीं। यही इस मांग की सबसे बड़ी वजह बनी।

4. सांसद जी के निर्देश पर प्रस्ताव तैयार: सांसद जी ने PWD नेशनल हाईवे खंड के अधिकारियों को जनता को सुगम और सुरक्षित यातायात दिलाने के लिए फोरलेन बनाने के निर्देश दिए थे। निर्देश के क्रम में विभाग द्वारा 32 KM का लगभग 50 करोड़ का प्रस्ताव तैयार कर शासन को भेज दिया गया।

5. मुख्यमंत्री से भी सिफारिश: केंद्रीय राज्य मंत्री श्री जितिन प्रसाद जी ने इस प्रस्ताव को जल्द स्वीकृत कराने के लिए माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी से भी सिफारिश की है।

भाग 1 - क्यों जरूरी था फोरलेन? बीसलपुर से बरेली का यह मार्ग सिर्फ एक सड़क नहीं है, यह सैकड़ों गांवों की लाइफलाइन है।

किसान, छात्र, व्यापारी, मरीज - सब इसी मार्ग से बरेली जाते हैं। लेकिन सिंगल / संकरी सड़क पर ओवरटेक, जाम और हादसे रोज की कहानी बन गए थे।

ब्लैक स्पॉट्स पर तो लोग जान हथेली पर लेकर गुजरते थे।

भाग 2 - क्या बदलेगा फोरलेन बनने से? किसान नेता देवस्वरूप पटेल ने कहा - उम्मीद है कि अन्य सड़कों की तरह बीसलपुर-बरेली फोरलेन सड़क भी जल्द स्वीकृत होगी।

**इसके बनने से -**

- बीसलपुर से नाथ नगरी बरेली, कमिश्नरी और महानगर तक आना-जाना बेहद सुगम हो जाएगा

- यात्रा सुरक्षित होगी, समय बचेगा

- जाम से मुक्ति मिलेगी

- व्यापार और किसानों को सीधा लाभ मिलेगा

**संपादकीय टिप्पणी** - जनहित की सड़क परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक का मानना है कि सड़क सिर्फ ईंट-पत्थर नहीं होती, वह विकास की रीढ़ होती है।

बीसलपुर-भुता-बरेली फोरलेन वर्षों पुरानी मांग थी। सांसद जी की पहल से यह मांग अब स्वीकृति की ओर बढ़ चली है।

इस जनहितैषी कार्य के लिए पीलीभीत सांसद श्री जितिन प्रसाद जी का आभार।

**- संजय कुमार बाठला,**
**प्रधान संपादक, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक**

# मृत्यु के बाद के सात मिनट: क्या इंसान अपने प्रियजनों की आवाज़ें सुन सकता है?



● डॉ. विजय गर्ग



जब हृदय धड़कना बंद कर देता है, तो मस्तिष्क तक रक्त और ऑक्सीजन की आपूर्ति बाधित हो जाती है। परिणामस्वरूप मस्तिष्क की गतिविधियां तेजी से कम होने लगती हैं। वर्ष 2016 में प्रकाशित एक वैज्ञानिक समीक्षा के अनुसार, रक्त संचार अचानक बंद होने के बाद अधिकांश मामलों में मस्तिष्क की मापी जा सकने वाली विद्युत गतिविधियां लगभग 30 सेकंड के भीतर समाप्त हो जाती हैं। हालांकि, तंत्रिका तंत्र से जुड़ी कुछ प्रतिक्रियाएं थोड़े अधिक समय तक बनी रह सकती हैं।

मृत्यु मानव जीवन का सबसे बड़ा सत्य है, फिर भी इससे जुड़े अनेक सवाल आज भी मनुष्य के मन में जिज्ञासा पैदा करते हैं। इनमें से एक बेहद भावनात्मक सवाल यह है कि क्या मृत्यु के बाद भी कुछ समय तक मानव मस्तिष्क सक्रिय रहता है? क्या मरता हुआ व्यक्ति अपने आसपास बैठे रोते हुए परिवार के सदस्यों की आवाजें सुन सकता है? क्या वह अपने प्रियजनों के दुख को महसूस करता है, लेकिन जवाब देने में असमर्थ रहता है?

एक प्रचलित धारणा है कि मृत्यु के बाद मस्तिष्क सात मिनट तक जीवित रहता है और इस दौरान व्यक्ति अपने पूरे जीवन की यादों को दोबारा देखता है। सुनने में यह विचार बेहद रोचक और भावनात्मक लगता है, लेकिन यह समझना आवश्यक है कि विज्ञान इस बारे में वास्तव में क्या कहता है।

**क्या मृत्यु के बाद मस्तिष्क सात मिनट तक जीवित रहता है?**

वैज्ञानिक शोध के अनुसार, यह दावा करना सही नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति का मस्तिष्क मृत्यु के बाद अनिवार्य रूप से सात मिनट तक सक्रिय रहता है। यह एक प्रचलित धारणा है, लेकिन इसके समर्थन में कोई निर्णायक वैज्ञानिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

जब हृदय धड़कना बंद कर देता है, तो मस्तिष्क तक रक्त और ऑक्सीजन की आपूर्ति बाधित हो जाती है। परिणामस्वरूप मस्तिष्क की गतिविधियां तेजी से कम होने लगती हैं। वर्ष 2016 में प्रकाशित एक वैज्ञानिक समीक्षा के अनुसार, रक्त संचार अचानक बंद होने के बाद अधिकांश मामलों में मस्तिष्क की मापी जा सकने वाली विद्युत गतिविधियां लगभग 30 सेकंड के भीतर समाप्त हो जाती हैं। हालांकि, तंत्रिका तंत्र से जुड़ी कुछ प्रतिक्रियाएं थोड़े अधिक समय तक बनी रह सकती हैं।

यहां एक महत्वपूर्ण अंतर समझना आवश्यक है। हृदय गति रुकना (Cardiac Arrest) और मस्तिष्क मृत्यु (Brain Death) एक जैसी स्थितियां नहीं हैं। हृदय गति रुकने के बाद समय पर सीपीआर (CPR) और अन्य चिकित्सकीय उपचारों से कई बार रक्त संचार दोबारा शुरू करके व्यक्ति की जान बचाई जा सकती है। लेकिन मस्तिष्क मृत्यु एक अपरिवर्तनीय स्थिति है, जिसमें मस्तिष्क और ब्रेन स्टेम के सभी कार्य स्थायी रूप से बंद हो जाते हैं।

**क्या मरता हुआ व्यक्ति अपने प्रियजनों की आवाज़ें सुन सकता है?**

इस सवाल का विज्ञान ने अभी तक पूरी तरह उत्तर नहीं दिया है, लेकिन कुछ शोध परिणाम बेहद दिलचस्प हैं।

वर्ष 2020 में Scientific Reports नामक वैज्ञानिक पत्रिका में प्रकाशित एक अध्ययन में पैलिएटिव केयर (जीवन के अंतिम चरण में दी जाने वाली देखभाल) प्राप्त कर रहे उन मरीजों के मस्तिष्क की गतिविधियों का अध्ययन किया गया, जो जीवन के अंतिम घंटों में अचेत या लगभग अनुत्तरदायी अवस्था में थे।

इलेक्ट्रोएन्सेफेलोग्राफी (EEG) तकनीक के माध्यम से शोधकर्ताओं ने पाया कि कुछ मरीजों का मस्तिष्क आवाज़ों में होने वाले बदलावों के प्रति प्रतिक्रिया दे रहा था, जबकि वे बाहर से कोई प्रतिक्रिया नहीं दे रहे थे।

इस शोध से संकेत मिलता है कि जीवन के अंतिम चरण में भी कुछ समय तक आवाज़ों को ग्रहण करने की क्षमता बनी रह सकती है।

हालांकि, इसका यह अर्थ नहीं है कि व्यक्ति हर शब्द को समझ रहा था या परिवार के सदस्यों के रोने और दुख को पूरी चेतना के साथ महसूस कर रहा था। आवाज़ के प्रति मस्तिष्क की प्रतिक्रिया और उस आवाज़ को सचेत रूप से समझना दो अलग-अलग बातें हैं।

**मृत्यु के निकट मस्तिष्क के अंदर क्या होता है?**

मृत्यु के निकट पहुंचने पर मस्तिष्क में कई प्रकार के परिवर्तन होते हैं। ऑक्सीजन की कमी, रक्त संचार में गिरावट और तंत्रिका कोशिकाओं की कार्यप्रणाली में बदलाव के कारण व्यक्ति की चेतना प्रभावित हो सकती है।

कुछ अध्ययनों में हृदय गति रुकने के आसपास मस्तिष्क में थोड़े समय के लिए असामान्य विद्युत गतिविधियां देखी गई हैं। वैज्ञानिक इस बात का अध्ययन कर रहे हैं कि क्या इन परिवर्तनों का निकट-मृत्यु अनुभवों (Near-Death Experiences) से कोई संबंध है।

हालांकि, अभी तक यह प्रमाणित नहीं हुआ है कि ऐसी विद्युत गतिविधियां व्यक्ति के अंतिम विचारों, यादों या चेतन अनुभवों को दर्शाती हैं।

मस्तिष्क की गतिविधियों, चेतना और मृत्यु के अनुभव के बीच संबंध आज भी वैज्ञानिक अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण विषय है।

परिवार के सदस्यों को क्या करना चाहिए?

**ये वैज्ञानिक निष्कर्ष हमें एक महत्वपूर्ण मानवीय संदेश भी देते हैं।**

जब कोई व्यक्ति जीवन के अंतिम चरण में हो और बोलने या प्रतिक्रिया देने में असमर्थ हो, तब भी परिवार के सदस्यों को उससे प्यार और सम्मान के साथ बात करते रहना चाहिए।

उसका हाथ पकड़ना, प्यार भरे शब्द कहना, उसे सांत्वना देना और जीवन की सुंदर यादें साझा करना परिवार के सदस्यों को भी भावनात्मक सहारा दे सकता है। भले ही हमें यह पता न हो कि वह व्यक्ति हमारी बातें सुन या समझ पा रहा है या नहीं, लेकिन प्रेम और संवेदना की ऐसी अभिव्यक्तियां अंतिम क्षणों को अधिक अर्थपूर्ण बना सकती हैं।

**विज्ञान और मानवीय संवेदनाओं का संगम**

मृत्यु शारीरिक जीवन का अंत है, लेकिन यादें, रिश्ते और भावनाएं पीछे रह जाने वाले लोगों के जीवन में बनी रहती हैं। विज्ञान आज भी यह समझने का प्रयास कर रहा है कि जीवन के अंतिम क्षणों में मानव मस्तिष्क किस प्रकार कार्य करता है और चेतना कब पूरी तरह समाप्त होती है।

हमें यह नहीं मानना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति मृत्यु के बाद सात मिनट तक अपने परिवार के सदस्यों की आवाज़ें सुनता है। इस दावे का कोई निर्णायक वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। हालांकि, शोध यह अवश्य संकेत देते हैं कि जीवन के अंतिम चरण में सुनने की क्षमता और मस्तिष्क की गतिविधियों के बारे में हमारी समझ अभी अधूरी है।

अंततः एक महत्वपूर्ण बात हमेशा याद रखनी चाहिए कि जब तक हमारे अपने हमारे बीच हैं, हमें उन्हें प्यार के दो शब्द कहने के लिए अंतिम क्षणों की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए। क्योंकि जीते जी व्यक्त किया गया प्रेम, मृत्यु के बाद कहे गए हजारों शब्दों से कहीं अधिक मूल्यवान होता है।

**सेवानिवृत्त प्राचार्य। प्रख्यात वैज्ञानिक**
**स्ट्रीट कौर चंद, एमएचआर,**
**मलोट, पंजाब – 152107**




# मिठास का जाल: क्या चीनी के विकल्प हमारी मीठा खाने की इच्छा बढ़ा सकते हैं?



डॉ. विजय गर्ग

आजकल स्वास्थ्य के प्रति जागरूक लोगों में चीनी का सेवन कम करने का रुझान बढ़ रहा है। इस उद्देश्य से कई लोग चीनी की जगह आर्टिफिशियल स्वीटनर या चीनी के विकल्पों का इस्तेमाल करने लगे हैं। चाय, कॉफी, ठंडे पेय पदार्थों और मिठाइयों में इस्तेमाल होने वाले ये स्वीटनर कम या बिना कैलोरी के मीठे स्वाद का अनुभव कराते हैं। लेकिन एक महत्वपूर्ण सवाल उठता है: क्या ये मीठे पदार्थ हमें चीनी से बचाने के बजाय मीठा खाने की इच्छा और बढ़ा सकते हैं?

स्वीटनर कई प्रकार के होते हैं। इनमें एस्पार्टेम, सुक्रालोज, सैकरीन और स्टीविया जैसे पदार्थ शामिल हैं। ये जीभ पर मौजूद मीठे स्वाद को महसूस करने वाले रिसेप्टर्स को सक्रिय करते हैं, लेकिन इनमें से अधिकांश पदार्थ चीनी की तरह कैलोरी या ग्लूकोज प्रदान नहीं करते।

वैज्ञानिकों के अनुसार मीठे स्वाद और शरीर को मिलने वाली ऊर्जा के बीच एक जटिल संबंध है। जब हम बिना कैलोरी वाला मीठा पदार्थ खाते हैं, तो मस्तिष्क को मिठास का संकेत मिलता है, लेकिन शरीर को अपेक्षित ऊर्जा नहीं मिलती। कुछ शोधकर्ताओं का मानना है कि इससे कुछ लोगों में मीठी चीजें खाने की इच्छा प्रभावित हो सकती है। हालांकि, इस बात के पुख्ता वैज्ञानिक प्रमाण नहीं हैं कि सभी स्वीटनर हर व्यक्ति में चीनी खाने की लालसा बढ़ाते हैं।

कुछ अध्ययनों से संकेत मिले हैं कि मीठे स्वाद की बार-बार आदत पड़ने से व्यक्ति मीठी चीजों की ओर अधिक आकर्षित हो सकता है। दूसरी ओर, कुछ शोध बताते हैं कि जब स्वीटनर का इस्तेमाल चीनी की जगह किया जाता है, तो वे कुल कैलोरी की मात्रा कम करने में मदद कर सकते हैं। इसलिए इनके प्रभाव को समझने के लिए व्यक्ति के खान-पान, जीवनशैली और स्वास्थ्य की स्थिति को भी ध्यान में रखना जरूरी है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने वर्ष 2023 में गैर-शर्करायुक्त मिठास देने वाले पदार्थों के लंबे समय तक इस्तेमाल को शरीर का वजन घटाने या गैर-संचारी बीमारियों के खतरे को कम करने का विश्वसनीय तरीका नहीं माना। इसकी सिफारिश का मुख्य उद्देश्य भोजन में समग्र रूप से मीठे स्वाद की आदत को कम करना है। यह सिफारिश व्यक्तिगत चिकित्सा आवश्यकताओं के लिए नहीं है। मधुमेह के रोगियों को अपने डॉक्टर की सलाह के अनुसार ही आहार का चयन करना चाहिए।

स्वीटनर का इस्तेमाल करते समय एक और बात याद रखनी चाहिए। केवल किसी खाद्य पदार्थ का 'शुगर-फ्री' होना उसे पूरी तरह स्वास्थ्यवर्धक नहीं बना देता। कई पैक किए गए खाद्य पदार्थों में वसा, नमक या अन्य ऐसे तत्व हो सकते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए अच्छे नहीं होते।

स्वस्थ जीवन के लिए सबसे अच्छा तरीका यह है कि धीरे-धीरे मीठे की कुल मात्रा कम की जाए। चाय या कॉफी में कम चीनी डालना, मीठे पेय पदार्थों की जगह पानी का इस्तेमाल करना और फलों के माध्यम से प्राकृतिक मिठास का आनंद लेना अच्छी आदतें हैं। ताजे फलों में मौजूद फाइबर और अन्य पोषक तत्व उन्हें मीठे पेय पदार्थों की तुलना में बेहतर विकल्प बनाते हैं।

अंत में, यह समझना जरूरी है कि स्वास्थ्य का रहस्य केवल चीनी की जगह किसी दूसरे मीठे पदार्थ का इस्तेमाल करने में नहीं, बल्कि मीठा खाने की अपनी आदत को संतुलित करने में है। स्वीटनर कई बार चीनी कम करने का साधन बन सकते हैं, लेकिन इनका असीमित उपयोग स्वस्थ जीवन का समाधान नहीं है। वास्तविक स्वस्थ विकल्प यही है कि हम अपनी जीभ को हर समय मिठास की मांग करने के बजाय प्राकृतिक और संतुलित भोजन का आदी बनाएं।

मिठास का स्वाद लें, लेकिन मिठास की आदत के गुलाम न बनें!

**डॉ. विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल। शैक्षिक स्तंभकार। प्रख्यात शिक्षाविद्**

# रैली से आगे: वादों से व्यावहारिक कार्रवाई तक

डॉ. विजय गर्ग

रैलियाँ, सार्वजनिक सभाएँ, प्रदर्शन और जागरूकता अभियान सामाजिक तथा लोकतांत्रिक अभिव्यक्ति के महत्वपूर्ण माध्यम हैं। ये लोगों को एकजुट करते हैं, समाज में जागरूकता पैदा करते हैं और नागरिकों को अन्याय, असमानता तथा सामाजिक समस्याओं के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठाने का अवसर प्रदान करते हैं। लेकिन किसी भी रैली की वास्तविक सफलता का आकलन उसमें शामिल भीड़, नारों की ऊँची आवाज़ या दिए गए भाषणों की संख्या से नहीं किया जा सकता। उसका वास्तविक महत्व इस बात में है कि सभा समाप्त होने के बाद क्या किया जाता है।

एक रैली कुछ घंटों के लिए उत्साह और जोश पैदा कर सकती है, लेकिन सार्थक बदलाव के लिए निरंतर प्रयास, प्रतिबद्धता और व्यावहारिक कार्रवाई की आवश्यकता होती है।

**शब्दों और कार्यों के बीच की दूरी**

आज के समाज में पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा, महिला सशक्तीकरण, नशाखोरी, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, सड़क सुरक्षा और सामाजिक समानता जैसे अनेक मुद्दों पर रैलियाँ आयोजित की जाती हैं। लोग बैनर उठाते हैं, नारे लगाते हैं और समाज में बदलाव लाने के वादे करते हैं। नेता महत्वाकांक्षी योजनाओं की घोषणा करते हैं और संगठन अपने सहयोग का आश्वासन देते हैं।

दुर्भाग्यवश, अनेक अभियान कार्यक्रम समाप्त होते ही अपनी गति खो देते हैं। समस्याएँ पहले की तरह बनी रहती हैं, वादे अधूरे रह जाते हैं और लोग धीरे-धीरे उस उद्देश्य को भूल जाते हैं जिसके लिए वे एकत्रित हुए थे।

यहाँ एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है: क्या हम समस्याओं का समाधान करने के लिए रैलियाँ आयोजित करते हैं या केवल उनके प्रति अपनी चिंता प्रदर्शित करने के लिए?

जागरूकता परिवर्तन की दिशा में पहला कदम है, लेकिन कार्रवाई के बिना जागरूकता के परिणाम सीमित ही रहते हैं।

**नारों से समाधान की ओर**

हर रैली के साथ एक व्यावहारिक कार्ययोजना जुड़ी होनी चाहिए। यदि नशे के विरुद्ध अभियान चलाया जाता है, तो उसके बाद परामर्श सेवाएँ, नशामुक्ति केंद्रों का सहयोग, परिवारों के लिए जागरूकता कार्यक्रम और युवाओं के लिए खेलकूद तथा रचनात्मक गतिविधियों के अवसर उपलब्ध करवाए जाने चाहिए।

इसी प्रकार, पर्यावरण संरक्षण के लिए आयोजित रैली का परिणाम पौधारोपण, कचरे का उचित वर्गीकरण, जल संरक्षण और प्रदूषण कम करने के प्रयासों के रूप में सामने आना चाहिए। केवल पौधे लगाना पर्याप्त नहीं है; उनकी नियमित देखभाल और जीवित रहना भी सुनिश्चित करना आवश्यक है।

यदि अभियान का उद्देश्य शिक्षा को बढ़ावा देना है, तो इसके परिणामस्वरूप बेहतर शैक्षिक अवसर, पुस्तकालय सुविधाएँ, डिजिटल अध्ययन सामग्री, छात्रवृत्तियाँ और आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को सहायता मिलनी चाहिए।

इसी तरह, महिलाओं की सुरक्षा के लिए चलाया गया अभियान केवल भाषणों तक सीमित नहीं रहना चाहिए। इसमें सुरक्षित सार्वजनिक स्थान, कानूनी जागरूकता, शिकायत दर्ज करवाने की आसान व्यवस्था और समान अवसर सुनिश्चित करने के प्रयास शामिल होने चाहिए।




संदेश बिल्कुल स्पष्ट है: प्रत्येक वादे के साथ उसे पूरा करने के लिए ठोस कार्रवाई भी होनी चाहिए।

**नेताओं और नागरिकों की जिम्मेदारी**

सामाजिक परिवर्तन की जिम्मेदारी केवल सरकारों या राजनीतिक नेताओं की नहीं है। इसके लिए शैक्षणिक संस्थानों, सामाजिक संगठनों, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों, सामुदायिक समूहों और आम नागरिकों की भागीदारी भी आवश्यक है।

नेताओं को समझना चाहिए कि जनता का विश्वास वादों से नहीं, बल्कि कार्यों और परिणामों से प्राप्त होता है। संगठनों को अपने उद्देश्य स्पष्ट करने चाहिए, जिम्मेदारियाँ निर्धारित करनी चाहिए और अपनी प्रगति की जानकारी नियमित रूप से जनता तक पहुँचानी चाहिए।

नागरिकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्हें अपनी भागीदारी केवल कार्यक्रमों में शामिल होने या सोशल मीडिया पर तस्वीरें साझा करने तक सीमित नहीं रखनी चाहिए। वे स्वयंसेवा, संसाधनों का दान, सही जानकारी का प्रसार और जरूरतमंद लोगों की सहायता करके अपना योगदान दे सकते हैं।

लगातार किए जाने वाले छोटे-छोटे व्यक्तिगत प्रयास भी सामूहिक रूप से बड़े बदलाव ला सकते हैं।

**अभियानों में जवाबदेही सुनिश्चित करना**

एक सफल अभियान के उद्देश्य स्पष्ट और उसके परिणाम मापने योग्य होने चाहिए। आयोजकों को स्वयं से कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न पूछने चाहिए:

- हम किस विशेष समस्या का समाधान करना चाहते हैं?
- अभियान के बाद कौन-कौन से व्यावहारिक कदम उठाए जाएंगे?
- इन कदमों को लागू करने की जिम्मेदारी किसकी होगी?
- किन संसाधनों और सहयोग की आवश्यकता होगी?
- प्रगति और परिणामों का मूल्यांकन कैसे किया जाएगा?

नियमित समीक्षा बैठकें, सार्वजनिक प्रगति रिपोर्ट और समुदाय की भागीदारी जवाबदेही सुनिश्चित करने में मदद कर सकती हैं। तकनीक और सोशल मीडिया का उपयोग गतिविधियों की निगरानी, उपलब्धियों को साझा करने और अधिक लोगों को भागीदारी के लिए प्रेरित करने में भी किया जा सकता है।

हमें केवल यह नहीं गिनना चाहिए कि रैली में कितने लोग शामिल हुए, बल्कि यह भी देखना चाहिए कि कितने लोगों के जीवन में सुधार आया, कितनी समस्याओं का समाधान हुआ और कितने सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए।

**छोटे लेकिन निरंतर प्रयासों की शक्ति**

हर सामाजिक समस्या के समाधान के लिए बड़े आंदोलन की आवश्यकता नहीं होती। कई बार सार्थक बदलाव एक छोटी-सी पहल से शुरू होता है। किसी शिक्षक द्वारा गरीब बच्चे की सहायता करना, युवाओं के समूह द्वारा सार्वजनिक स्थान की सफाई करना, नागरिकों द्वारा रक्तदान शिविर आयोजित करना या स्वयंसेवकों द्वारा बुजुर्गों की सहायता करना समाज के लिए स्थायी लाभ पैदा कर सकता है।

इन गतिविधियों की ओर शायद बड़ी भीड़ या मीडिया का ध्यान न जाए, लेकिन समाज पर इनका प्रभाव अस्थायी सार्वजनिक प्रदर्शनों से कहीं अधिक हो सकता है।

प्रचार से अधिक महत्वपूर्ण निरंतरता है। एक छोटा प्रयास यदि नियमित रूप से किया जाए, तो वह एक बार आयोजित किए गए भव्य कार्यक्रम से अधिक मूल्यवान सिद्ध हो सकता है।

**निष्कर्ष: रैली को नई शुरुआत बनाइए**

रैलियों में समाज को जागृत करने, लोगों को एकजुट करने और उपेक्षित मुद्दों की ओर ध्यान आकर्षित करने की क्षमता होती है। केवल इसलिए उनकी आलोचना नहीं होनी चाहिए कि वे सार्वजनिक सभाएँ हैं। बल्कि उनके उद्देश्य को जिम्मेदारी, प्रतिबद्धता और कार्यान्वयन से जोड़कर अधिक प्रभावशाली बनाने की आवश्यकता है।

किसी अभियान की वास्तविक परीक्षा उस समय शुरू होती है जब बैनर हटा दिए जाते हैं, माइक बंद हो जाते हैं और भीड़ अपने घरों को लौट जाती है। उसके बाद क्या किया जाता है, यही तय करता है कि कार्यक्रम सार्थक था या केवल प्रतीकात्मक।

हमें खोखले वादों की जगह प्रतिबद्ध व्यक्तियों, अस्थायी आयोजनों की जगह टिकाऊ पहलों और निरर्थक नारों की जगह मापने योग्य उपलब्धियों की आवश्यकता है।

रैली किसी आंदोलन की मंजिल नहीं होनी चाहिए, बल्कि सार्थक परिवर्तन की शुरुआत होनी चाहिए। किसी भी अभियान की वास्तविक सफलता इस बात में नहीं है कि हम कितनी ऊँची आवाज़ में अपनी बात कहते हैं, बल्कि इस बात में है कि हम दूसरों के जीवन में कितना प्रभावशाली सुधार लाते हैं।

**सेवानिवृत्त प्राचार्य। प्रख्यात वैज्ञानिक**
**स्ट्रीट कौर चंद, एम.एच.आर.**

## परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक - पर्व विशेष

# भैया दूज - भाई-बहन के पवित्र प्रेम, विश्वास और रक्षा का महापर्व

यम द्वितीया पर बहन के तिलक से भाई को मिलता है दीर्घायु का वरदान, यमराज–यमुना और श्रीकृष्ण–सुभद्रा की कथा से लेकर सरल शास्त्रोक्त विधि तक – जानिए क्यों इस दिन बहन के हाथ का भोजन अमृत समान माना जाता है

**- प्रस्तुति : संपादकीय विभाग, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक**

**- मूल प्रस्तुति : केके छाबड़ा**

**मुख्य तथ्य – एक दृष्टि में**

- पर्वः भैया दूज, यम द्वितीया

- तिथिः कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि

- प्रतीकः भाई-बहन का पवित्र प्रेम, विश्वास, लंबी आयु और रक्षा की कामना

- मुख्य कथाः यमराज और देवी यमुना की कथा, भगवान श्रीकृष्ण और सुभद्रा की कथा

- मुख्य विधिः तिलक, आरती, कलावा, गोला, मिष्ठान, बहन के हाथ का सात्विक भोजन, भाई का उपहार

- विशेष परंपराः दूर रहने पर चंद्रमा को भाई मानकर अर्घ्य और तिलक

- संदेशः तिलक केवल माथे पर नहीं, दिल पर लगता है - रिश्ता निभाने का वचन है

1. भैया दूज क्या है? - पहले सीधा अर्थ समझिए भैया दूज कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को मनाया जाता है।

यह पर्व भाई-बहन के पवित्र प्रेम, विश्वास और एक-दूसरे की लंबी आयु व रक्षा की कामना का प्रतीक है।

दीपावली के बाद आने वाला यह पर्व दीपों की रोशनी को रिश्तों की गर्माहट में बदल देता है।

रक्षाबंधन में बहन भाई को राखी बांधती है, भैया दूज में बहन भाई को तिलक लगाती है।

राखी रक्षा का धागा है, तिलक आशीर्वाद का टीका है।

दोनों का भाव एक ही है - भाई-बहन एक-दूसरे के लिए जिएं, एक-दूसरे की रक्षा करें।

2. यमराज और देवी यमुना की कथा - यम द्वितीया क्यों कहा जाता है? भैया दूज मनाने के पीछे दो प्रमुख पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं।

पहली कथा सबसे प्राचीन और सबसे भावुक है। सूर्य देव के पुत्र यमराज और पुत्री यमुना आपस में भाई-बहन हैं।

यमुना जी अपने भाई यमराज को अक्सर भोजन के लिए आमंत्रित करती थीं, लेकिन यमराज अपने कार्यभार के कारण जा नहीं पाते थे।

कार्तिक शुक्ल द्वितीया के दिन यमराज अचानक अपनी बहन यमुना के घर पहुंचे।

बहन यमुना भाई को देखकर अत्यंत प्रसन्न हुईं।

उन्होंने यमराज को आदरपूर्वक आसन पर बैठाया, तिलक किया और अपने हाथों से स्वादिष्ट भोजन कराया।

यमुना के इस स्नेह से यमराज इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने यमुना से वरदान मांगने को कहा।

**यमुना जी ने वर मांगा –**

हे भ्राता! आप प्रतिवर्ष इस दिन मेरे घर आएं और जो बहन इस दिन अपने भाई को तिलक कर भोजन कराए, उस भाई को आपकी प्रताड़ना - अकाल मृत्यु या यमलोक के भय - से मुक्ति मिले।

यमराज ने यह वरदान दिया और तभी से इस तिथि को यम द्वितीया भी कहा जाने लगा।

मान्यता है - इस दिन जो भाई अपनी बहन के घर जाकर तिलक करवाता है और उसके हाथ का बना भोजन करता है, उसे दीर्घायु और आरोग्य का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

इसलिए भैया दूज केवल त्योहार नहीं, यम के भय से मुक्ति का वरदान है।

3. भगवान श्रीकृष्ण और सुभद्रा की कथा - विजय तिलक का भाव

दूसरी कथा भगवान श्रीकृष्ण और उनकी बहन सुभद्रा से जुड़ी है।

जब भगवान श्रीकृष्ण ने नरकासुर नामक राक्षस का वध किया, तो वे अपनी बहन सुभद्रा से मिलने पहुंचे।

सुभद्रा ने भाई श्रीकृष्ण के लौटने की खुशी में -

- दीप जलाए
- आरती उतारी
- मस्तक पर विजय तिलक लगाया
- उन्हें माखन-मिश्री व मिष्ठान खिलाया

माना जाता है कि इसी भाव के साथ बहनें अपने भाई के कल्याण के लिए यह पर्व मनाती हैं।

बहन का तिलक भाई की विजय का तिलक है।

जैसे सुभद्रा ने श्रीकृष्ण की विजय पर तिलक लगाया था, वैसे ही हर बहन अपने भाई की जीवन की हर लड़ाई में विजय की कामना करती है।

4. भैया दूज मनाने की सरल व शास्त्रोक्त विधि - चरण दर चरण

क. तैयारी और बैठक व्यवस्था

- भाई के बैठने के लिए उत्तर या पूर्व दिशा की ओर मुख करके लकड़ी का पाटा - चौकी रखें
- चौकी के नीचे चावल के आटे या रंगों से एक छोटा चौक बना सकते हैं
- चौकी को फूल, दीप और रंगोली से सजाएं

ख. तिलक और अक्षत

- भाई को आसन पर बैठाकर उसके सिर पर रुमाल या कोई वस्त्र ढकें




- बहन रोली, चंदन और अक्षत - बिना टूटे हुए चावल - मिलाकर भाई के माथे पर तिलक लगाएं

- तिलक लगाते समय भाई की लंबी आयु, सुख, समृद्धि की कामना करें

तिलक का अर्थ है - बहन कह रही है, तेरे माथे पर मेरी दुआ का टीका है, तुझे कोई बुरी नजर न लगे।

ग. आरती और रक्षा सूत्र

- घी का दीपक जलाकर भाई की प्रेमपूर्वक आरती उतारें
- उसकी सुख, समृद्धि व लंबी आयु की कामना करें
- भाई की कलाई पर कलावा - मौली बांधें

कलावा वह धागा है जो कहता है - जब तक यह धागा है, बहन की दुआ तेरे साथ है।

घ. सूखा नारियल - गोला और मिष्ठान

- बहनें भाई की हथेली में पान का पत्ता, सुपारी, बताशा और सूखा नारियल - गोला देती हैं
- गोला भेंट करना भाई की दीर्घायु का प्रतीक माना जाता है
- इसके बाद भाई को मिठाई खिलाएं

ङ. भोजन और उपहार

- भाई को बहन के हाथ का बना सात्विक भोजन अवश्य करना चाहिए
- परंपरा के अनुसार इस दिन भाई को अपने घर के बजाय बहन के घर भोजन करना श्रेष्ठ माना गया है
- भाई अपनी बहन के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद ले
- प्रेमस्वरूप उपहार या शगुन भेंट करे

भाई का उपहार कीमत से नहीं, प्रेम से बड़ा होता है।

बहन को लगता है - मेरा भाई मुझे भूला नहीं, वह मेरा सम्मान करता है।

5. यदि बहन दूर हो तो क्या करें? - दूरी प्रेम में बाधा नहीं यदि बहन दूर रहती हो और प्रत्यक्ष मिलना संभव न हो, तो परंपरा में भी समाधान है।

- बहनें चंद्रमा को भाई का रूप मानकर अर्घ्य व तिलक देती हैं
- भाई के नाम का दीपक जलाती हैं
- भाई की लंबी आयु की कामना करती हैं

इसका अर्थ है - प्रेम दूरी से नहीं रुकता।

जहां दिल से याद किया जाए, वहां तिलक पहुंच जाता है।

आज मोबाइल और वीडियो कॉल के युग में भी बहनें दूर बैठे भाई को वीडियो पर तिलक लगाती हैं, आरती दिखाती हैं।

भाव वही है, माध्यम बदल गया है।

6. भैया दूज आज क्यों जरूरी है? आज भाई-बहन अक्सर अलग-अलग शहरों में रहते हैं।

- नौकरी की वजह से दूरी
- शादी के बाद जिम्मेदारियां
- समय की कमी

ऐसे में भैया दूज एक बहाना है मिलने का, बात करने का, पुरानी यादें ताजा करने का।

यह पर्व हमें याद दिलाता है -

- भाई-बहन का रिश्ता खून का नहीं, दिल का है
- बचपन की लड़ाई, एक-दूसरे का टिफिन छीनना, मां से शिकायत करना - यही तो प्रेम था
- बड़े होकर भी बहन को भाई की चिंता रहती है, भाई को बहन की फिक्र रहती है

भैया दूज कहता है - साल में एक दिन तो भाई-बहन के नाम कर दो।

**7. संपादकीय टिप्पणी –**

तिलक माथे पर नहीं, दिल पर लगता है परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक का मानना है कि भैया दूज केवल एक रस्म नहीं है, यह एक वचन है।

बहन का तिलक कहता है - मैं तेरी लंबी उम्र की दुआ करती हूं।

भाई का उपहार कहता है - मैं तेरी रक्षा का वचन देता हूं।

**आज संकल्प लें –**

- हम भाई-बहन केवल त्योहार पर नहीं, हर दिन एक-दूसरे का हाल पूछेंगे
- हम बहन की इज्जत को अपनी इज्जत मानेंगे
- हम भाई की तकलीफ में साथ खड़े रहेंगे
- हम दूरी को बहाना नहीं बनाएंगे, प्रेम को निभाएंगे

क्योंकि तिलक मिट जाता है, मिठाई खत्म हो जाती है।

लेकिन भाई-बहन का प्रेम कभी मिटता नहीं।

सभी भाइयों-बहनों को भैया दूज - यम द्वितीया की हार्दिक शुभकामनाएं।

यमुना मैया और यमराज की कृपा से सबको दीर्घायु, आरोग्य और सुख-समृद्धि मिले।

**– संजय कुमार बाठला, प्रधान संपादक**

## परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक - संस्कृति व शिक्षा विशेष - संपादकीय

# त्योहार रोटी भी लाते हैं, रोजगार भी - हमारी सांस्कृतिक विभिन्नता सुंदरता का प्रतीक

भाषण कला से प्रेम भी फैल सकता है, ईर्ष्या भी – बस प्रयास करें कि कोई कान कच्चा न रहे, सभी परिपक्व बनें, कभी अध्यापक बनें तो कभी शिक्षार्थी

**- प्रस्तुति : संपादकीय विभाग, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक**

- प्रेरणा : जनहित में साझा की गई एक पंक्ति - हमारी सांस्कृतिक विभिन्नता सुंदरता का प्रतीक है

मुख्य तथ्य - एक दृष्टि में

- विषयः त्योहार, कारोबार, रोजगार और शिक्षा का संबंध

- मुख्य संदेशः त्योहार अच्छे हैं, वे कारोबार बढ़ाते हैं, रोजगार को गति देते हैं, अनेकों घरों में रोटी लाते हैं

- चेतावनीः भाषण कला में पारंगत व्यक्ति शब्दों से प्रेम, ईर्ष्या, भाईचारे या पक्षपात को रंग दे सकता है

- समाधानः काटने और बांटने वाली गंदी राजनीति पर प्रहार करें, शिक्षा का सच्चा प्रसार करें

- संपादकीय दृष्टिकोणः सभी को परिपक्व बनना होगा, कभी अध्यापक बनकर सिखाना होगा, कभी शिक्षार्थी बनकर सीखना होगा

**1. त्योहार केवल दीया नहीं, रोटी भी है**

हम अक्सर त्योहार को केवल पूजा, छुट्टी और मिठाई समझते हैं।

लेकिन इस पंक्ति ने दूसरी सच्चाई याद दिलाई -

त्योहार अच्छे हैं।

कारोबार बढ़ाते हैं।

रोजगार को गति देते हैं।

अनेकों घरों में रोटी लाते हैं।

जब दीवाली आती है, तो कुम्हार के घर दीया बिकता है।

जब होली आती है, तो रंग वाले के घर रंग बिकता है।

जब ईद आती है, तो दर्जी के घर सिलाई आती है।

जब क्रिसमस आता है, तो मोमबत्ती वाले के घर रोशनी आती है।

त्योहार का अर्थ केवल मंदिर, मस्जिद, चर्च और गुरुद्वारे तक सीमित नहीं है।

त्योहार का अर्थ बाजार, कारखाना, ठेला और दुकान तक भी है।

एक त्योहार से लाखों हाथों को काम मिलता है।

एक त्योहार से करोड़ों घरों में चूल्हा जलता है।

इसलिए त्योहारों का विरोध करना, उन्हें काटना-छांटना, उन्हें छोटा करना - यह केवल धर्म का नुकसान नहीं है, यह रोजगार का भी नुकसान है।

**2. बस केवल इतना करें कि... - लेखक की सबसे बड़ी सीख**

लेखक कहता है -

बस केवल इतना करें कि शिक्षा का सच्चा प्रसार करें।

यह पंक्ति छोटी है, लेकिन अर्थ बहुत बड़ा है।

शिक्षा का अर्थ केवल किताब पढ़ना नहीं है।

शिक्षा का अर्थ है - सही को सही कहना, गलत को गलत समझना।

सच्ची शिक्षा क्या करती है?

- वह प्रश्न पूछना सिखाती है, अंधा विश्वास नहीं
- वह जोड़ना सिखाती है, तोड़ना नहीं
- वह रोजगार के लायक बनाती है, केवल डिग्री नहीं देती
- वह अपने धर्म पर गर्व करना और दूसरे धर्म का सम्मान करना - दोनों सिखाती है

यदि शिक्षा सच्ची होगी, तो कारोबार भी सच्चा होगा, रोजगार भी टिकाऊ होगा।

**3. काटने और बांटने वाली गंदी राजनीति पर प्रहार करें**

लेखक की दूसरी बड़ी बात -

काटने और बांटने वाली गंदी राजनीति पर प्रहार करें।

काटने और बांटने की राजनीति क्या करती है?

- वह भाई को भाई से लड़ाती है
- वह पड़ोसी को पड़ोसी का दुश्मन बनाती है
- वह त्योहार को वोट में बदल देती है
- वह रोटी के प्रश्न को धर्म के झगड़े में उलझा देती है

गंदी राजनीति का इलाज क्या है?

गाली से नहीं, शिक्षा से।

जब जनता पढ़ी-लिखी होगी, परिपक्व होगी, तो वह भाषण के जाल में नहीं फंसेगी।

वह पूछेगी - तुमने काटने की बात तो कर दी, रोटी का क्या किया?

तुमने बांटने की बात तो कर दी, रोजगार का क्या किया?

प्रहार का अर्थ हिंसा नहीं है।

प्रहार का अर्थ है - सच से, शिक्षा से, एकता से उसका विरोध करना।

**4. भाषणकर्ता भाषण कला में होता है पारंगत... - शब्दों का जादू समझिए**

यह पंक्ति इस लेख की सबसे गहरी पंक्ति है।

भाषणकर्ता भाषण कला में होता है पारंगत.. वह शब्दों से प्रेम, ईर्ष्या, भाईचारे या पक्षपात की दे सकता है रंगत..




भाषण एक कला है।

एक ही शब्द से दो काम हो सकते हैं -

- एक ही शब्द से प्रेम फैल सकता है, उसी शब्द से नफरत भी
- एक ही शब्द से भाईचारा बढ़ सकता है, उसी शब्द से पक्षपात भी
- एक ही शब्द से देश जुड़ सकता है, उसी शब्द से देश टूट भी सकता है

शब्दों में रंग होता है।

बोलने वाला उस रंग को तय करता है।

कोई नेता कहे - हम सब एक हैं, तो प्रेम फैलेगा।

कोई नेता कहे - वे और हम अलग हैं, तो ईर्ष्या फैलेगी।

इसलिए लेखक कहता है -

लेकिन प्रयास करें कि सभी कान कच्चे ना रहें.. सभी परिपक्व, बच्चे ना रहें...

कच्चा कान क्या है?

जो सुने, बिना सोचे मान ले।

जो अफवाह को सच समझ ले।

जो भाषण सुनकर तुरंत भड़क जाए।

परिपक्व कान क्या है?

जो सुने, सोचे, जांचे, फिर माने।

जो शब्दों के पीछे की मंशा को समझे।

जो प्रेम और पक्षपात में फर्क कर सके।

लेखक चाहता है कि देश में कच्चे कानों वाले बच्चे न रहें, परिपक्व नागरिक बनें।

**5. गर कुछ कर सकते हो तो... – सच्चा और सुंदर कर्तव्य क्या है?**

लेखक अंत में कहता है -

गर कुछ कर सकते हो तो.. सच्चा और सुंदर कर्तव्य निभा दो, यदा कदा अध्यापक बनों और सभी को अच्छे शिक्षार्थी बना दो...

यह पंक्ति हर नागरिक के लिए है।

- यदि आप शिक्षक हैं, तो केवल किताब मत पढ़ाइए, एकता भी पढ़ाइए
- यदि आप व्यापारी हैं, तो केवल मुनाफा मत कमाइए, रोजगार भी दीजिए
- यदि आप नेता हैं, तो केवल भाषण मत दीजिए, शिक्षा भी दीजिए
- यदि आप पत्रकार हैं, तो केवल खबर मत दीजिए, समझ भी दीजिए
- यदि आप माता-पिता हैं, तो केवल बच्चों को बड़ा मत कीजिए, उन्हें परिपक्व भी बनाइए

यदा कदा अध्यापक बनों -

कभी-कभी हमें सिखाना भी चाहिए।

बाजार में खड़े होकर बताना चाहिए - त्योहार से रोटी कैसे आती है।

मोहल्ले में बताना चाहिए - काटने-बांटने से किसका नुकसान होता है।

परिवार में बताना चाहिए - प्रेम और पक्षपात में क्या फर्क है।

और सभी को अच्छे शिक्षार्थी बना दो -

और कभी-कभी हमें सीखना भी चाहिए।

दूसरे के त्योहार से सीखना, दूसरे के धर्म से सीखना, दूसरे के अनुभव से सीखना।

जो समाज केवल सिखाता है, वह अहंकारी हो जाता है।

जो समाज केवल सीखता है, वह पराजित हो जाता है।

जो समाज सिखाना और सीखना - दोनों जानता है, वही महान बनता है।

6. हमारी सांस्कृतिक विभिन्नता सुंदरता का प्रतीक है - इस पंक्ति का अर्थ दाईं ओर पीले रंग में लिखी पंक्ति इस पूरे लेख का सार है -

हमारी सांस्कृतिक विभिन्नता सुंदरता का प्रतीक है।

भारत में –

- कोई दीवाली पर दीया जलाता है, कोई ईद पर सेवईं खिलाता है
- कोई होली पर रंग लगाता है, कोई क्रिसमस पर मोमबत्ती जलाता है
- कोई गुरुद्वारे में लंगर खिलाता है, कोई मंदिर में प्रसाद बांटता है

यह विभिन्नता कमजोरी नहीं है, यही सुंदरता है।

जैसे बगीचे में एक ही फूल हो तो बगीचा सुंदर नहीं लगता।

अनेक रंगों के फूल हों तो बगीचा सुंदर लगता है।

भारत भी ऐसा ही बगीचा है।

इस बगीचे को काटने-बांटने वाले लोग गंदी राजनीति करते हैं।

इस बगीचे को सींचने वाले लोग सच्ची शिक्षा का प्रसार करते हैं।

**7. संपादकीय टिप्पणी** - त्योहार, कारोबार और शिक्षा - तीनों एक साथ चलेंगे तभी देश चलेगा परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक का मानना है कि इस छोटी सी कविता में पूरे भारत का भविष्य छिपा है।

**पहला** - त्योहार को बचाना हैः क्योंकि त्योहार से कारोबार है, कारोबार से रोजगार है, रोजगार से रोटी है।

**दूसरा** - शिक्षा को सच्चा बनाना हैः

क्योंकि सच्ची शिक्षा ही गंदी राजनीति को पहचानती है, और परिपक्व नागरिक बनाती है।

**तीसरा** - भाषण को समझना हैः क्योंकि शब्दों में रंग है। कोई प्रेम का रंग देगा, कोई ईर्ष्या का। हमें प्रेम वाला रंग चुनना है।

**चौथा** - अध्यापक और शिक्षार्थी - दोनों बनना हैः कभी सिखाना है, कभी सीखना है। तभी हम कच्चे कानों वाले बच्चे नहीं, परिपक्व नागरिक बनेंगे।

**आज संकल्प लें –**

- हम अपने त्योहार पर गर्व करेंगे, दूसरे के त्योहार का सम्मान करेंगे
- हम अपने कारोबार को ईमानदारी से बढ़ाएंगे, दूसरे को रोजगार देंगे
- हम गंदी राजनीति का विरोध शिक्षा से करेंगे, गाली से नहीं
- हम भाषण सुनेंगे, लेकिन परिपक्वता से जांचेंगे

हम कभी अध्यापक बनेंगे, कभी शिक्षार्थी बनेंगे

क्योंकि हमारी सांस्कृतिक विभिन्नता ही हमारी सुंदरता है।

इसे काटना नहीं, संवारना है।

**– संजय कुमार बाठला, प्रधान संपादक**

# एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था ने दीपावली की संध्या पर एक दीया शहीदों के नाम से 251 दीये जलाकर शहीदों को श्रद्धांजलि दी

**परिवहन विशेष न्यूज**

एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था अध्यक्ष योगेन्द्र कुमार साहू सदस्य मनीष साहू के नेतृत्व में संस्था के माध्यम से भारतीय सेना के शहीद जवानों के सम्मान में दीपावली की शुभ संध्या पर एक दीया शहीदों के नाम से संस्था पदाधिकारियों ने हल्द्वानी नैनीताल रोड स्थित शहीद चंद्रशेखर मिश्रा पार्क में 251 दीये जलाकर भारतीय सेना के शहीद जवानों को श्रद्धासुमन श्रद्धांजलि दी

इस दौरान एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था मार्गदर्शक खेमराज साहू मार्गदर्शिका मीना जोशी ने संयुक्त रूप से कहा की भारतीय सेना के जवान अपनी जान की परवाह न करते हुए भारत एवं भारतवासियों को हमेशा सुरक्षित रखते है क्योंकि भारतीय सेना के जवान हजारों फुट की ऊंचाई पर अपनी हड्डियाँ गलाकर दुश्मनों की हर हरकत पर पैनी निगाह रखते हुए दुश्मनों को मुंहतोड़ जवाब देकर दुश्मनों को संभलने का मौका भी नहीं देते है तब जाकर हम अपने घरों में सुरक्षित रहते है और तब हम अपने सारे त्योहारों को हर्ष उल्लास पूरी खुशी के साथ भयमुक्त होकर मना पाते है इसलिए भारतीय सेना के शहीद जवानों के बलिदान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता इसीलिए एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था भारतीय सेना के शहीद जवानों के सम्मान में एक दीया शहीदों के नाम से दीपावली पर 251 दीये जलाकर शहीद जवानों को श्रद्धांजलि देकर उनके प्रति श्रद्धा भाव प्रकट कर उनके बलिदान को हमेशा याद रखती है और यह हम सभी भारतीयों का परम कर्तव्य है इस दौरान शहीदों को श्रद्धांजलि देने में संस्था अध्यक्ष योगेन्द्र कुमार साहू समाजसेवी हेमन्त कुमार साहू मार्गदर्शिका मीना जोशी ललिता कपाड़ी योगिता बनोला सुनीता तिवारी ममता खत्री गिरीश चन्द्र लोहानी खेमराज साहू मनीष साहू कनिष्का कुमारी नवल आर्या संदीप यादव सुशील राय प्रयाग दत्त जोशी सूरज मिस्त्री दीपक कुमार सूरज कुम्हार मुकेश कुमार आदि लोग उपस्थित रहे।



परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक -धर्म व संस्कृति विशेष - संपादकीय

# गोवर्धन पूजा - जब गोबर में भगवान दिखे और अन्न में आशीर्वाद मिला

## दिवाली के अगले दिन गोवर्धन महाराज की पूजा, अन्नकूट का भोग और गोवंश की सेवा - जानिए क्यों श्रीकृष्ण ने इंद्र की पूजा छोड़कर पहाड़ की पूजा करवाई

- प्रस्तुति : संपादकीय विभाग, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

**मुख्य तथ्य - एक दृष्टि में**

- पर्वः गोवर्धन पूजा, जिसे अन्नकूट पूजा भी कहा जाता है

- समयः दिवाली के अगले दिन, कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को

- मुख्य देवताः भगवान श्रीकृष्ण के रूप में गोवर्धन पर्वत

- पूजा की सामग्रीः गाय के गोबर से बना गोवर्धन, फूल, दीप, अन्न, दूध, दही, मक्खन, फल और सब्जियां

- मुख्य संदेशः प्रकृति की पूजा करो, गाय की सेवा करो, अन्न का सम्मान करो, अहंकार छोड़ो

- विभिन्न स्थानों पर गोबर, फूल, रंग और अन्न से बनाए गए गोवर्धन महाराज और श्रीनाथ जी के सुंदर स्वरूप, और अन्नकूट का भव्य भोग

**1. पहले उसे समझिए**

- कहीं फर्श पर गाय के गोबर से गोवर्धन महाराज की आकृति बनाई गई है, हाथ में गोवर्धन पर्वत उठाए हुए

- कहीं फूलों, रंगों और माला से श्रीनाथ जी का श्रृंगार किया गया है, हाथ में कमल, बगल में बांसुरी

- कहीं गोबर से ही पूरे गोवर्धन पर्वत का स्वरूप बनाया गया है, आसपास गाय, बछड़े और गोपी-ग्वाले

- कहीं बीच में गोवर्धन जी विराजमान हैं और चारों ओर अन्न, मिठाई, फल, सब्जी, दूध, दही से सजा अन्नकूट का पहाड़ लगा है

- कहीं मंदिर में चांदी के सिंहासन पर श्रीनाथ जी का भव्य दर्शन हो रहा है

ये सभी दृश्य एक ही बात कहते हैं - हमारे यहां भगवान पत्थर में ही नहीं, गोबर में भी हैं, अन्न में भी हैं, पहाड़ में भी हैं, गाय में भी हैं।

**2. गोवर्धन पूजा क्यों होती है? - कथा को समझिए बहुत समय पहले ब्रज के लोग इंद्र की पूजा करते थे।**

इंद्र को वर्षा का देवता माना जाता था। ब्रजवासी सोचते थे कि इंद्र प्रसन्न होगा, तभी वर्षा होगी, तभी खेती होगी, तभी गायों को चारा मिलेगा।

**तब नन्हे श्रीकृष्ण ने कहा -**

इंद्र की पूजा क्यों? पूजा तो गोवर्धन पर्वत की करो, जो हमें घास देता है, फल देता है, गायों को चरने की जगह देता है, वर्षा के जल को रोककर हमें जीवन देता है।

ब्रजवासियों ने श्रीकृष्ण की बात मानी। उन्होंने इंद्र की पूजा छोड़कर गोवर्धन पर्वत की पूजा की, अन्न का भोग लगाया।

इंद्र को क्रोध आ गया। उसने मूसलाधार वर्षा शुरू कर दी। ब्रज में बाढ़ आ गई।

तब श्रीकृष्ण ने अपनी छोटी उंगली पर पूरे गोवर्धन पर्वत को उठा लिया। ब्रजवासी, गायें, बछड़े - सब उसके नीचे आ गए। सात दिन तक वर्षा होती रही, लेकिन किसी को एक बूंद भी नहीं लगी।

अंत में इंद्र का अहंकार टूट गया। उसने श्रीकृष्ण से क्षमा मांगी।

तभी से गोवर्धन पूजा शुरू हुई।

यह पूजा केवल पर्वत की पूजा नहीं है।

यह अहंकार के टूटने और प्रकृति की जीत की पूजा है।

**3. गोबर से भगवान क्यों बनाते हैं? - सबसे बड़ा रहस्य कई लोग पूछते हैं - गोबर से भगवान क्यों बनाते हैं? गोबर तो गंदा होता है।**

हमारे पूर्वज कहते थे - गोबर गंदा नहीं, पवित्र है।

- गाय का गोबरः घर को लीपने, आंगन को शुद्ध करने, खेत को उपजाऊ बनाने के काम आता है

- गोबर से बना गोवर्धनः यह बताता है कि भगवान को पाने के लिए सोना-चांदी नहीं चाहिए, श्रद्धा चाहिए

- गरीब की पूजाः जिसके पास मूर्ति खरीदने के पैसे नहीं, वह भी गोबर से भगवान बना सकता है, यही हमारी संस्कृति की महानता है

गोबर से बने गोवर्धन महाराज को देखिए - चेहरे पर मुस्कान, गले में गेंदे की माला, हाथ में पर्वत।

यह मूर्ति नहीं, भाव है।

गोबर में भी भगवान दिख जाए, वही सच्ची भक्ति है।

**4. अन्नकूट क्या है? - अन्न का पहाड़ क्यों लगाते हैं? गोवर्धन पूजा को अन्नकूट पूजा भी कहा जाता है।**

**अन्नकूट का अर्थ है - अन्न का पहाड़।**

इस दिन घर-घर में, मंदिर-मंदिर में कई तरह के अन्न, सब्जी, दाल, चावल, रोटी, पूड़ी, मिठाई, फल, दूध, दही, मक्खन बनाकर भगवान को भोग लगाया जाता है।

बीच में गोवर्धन जी हैं, चारों ओर कटोरियों में भरा अन्न ही अन्न है।

अन्नकूट के पीछे तीन संदेश हैं -

क. अन्न का सम्मान करोः अन्न को बर्बाद मत करो, थाली में उतना ही लो जितना खा सको। अन्न ही जीवन है।

ख. किसान का सम्मान करोः जो अन्न हम खाते हैं, वह किसान के पसीने से आता है। अन्नकूट किसान के प्रति कृतज्ञता है।

ग. बांटकर खाओः अन्नकूट का भोग केवल भगवान को नहीं चढ़ाया जाता, बाद में सबको प्रसाद के रूप में बांटा जाता है। यही हमारी संस्कृति है - पहले बांटो, फिर खाओ।

**5. गाय की पूजा क्यों? - गोवर्धन और गोवंश का संबंध गोवर्धन पूजा के दिन गाय, बैल और बछड़ों की भी पूजा होती है।**

- गाय को माला पहनाई जाती है

- उसे गुड़, चारा, रोटी खिलाई जाती है

- उसके पैरों में रंग लगाया जाता है

- उसके माथे पर तिलक लगाया जाता है

क्यों?

क्योंकि गाय केवल पशु नहीं है।

- दूध देती हैः बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक का पोषण करती है

- गोबर देती हैः खेत को खाद देता है,




मिट्टी की पूजा। आज हम पहाड़ काट रहे हैं, नदी गंदी कर रहे हैं, पेड़ काट रहे हैं। गोवर्धन पूजा हमें रोकती है - प्रकृति को मत काटो, उसे पूजो।

ख. अहंकार से मुक्तिः इंद्र का अहंकार टूटा था। आज का इंद्र कौन है? हमारा अहंकार, हमारा पैसा, हमारी ताकत। गोवर्धन पूजा कहती है - अहंकार छोड़ो, विनम्र बनो।

ग. अन्न की बर्बादी रोकनाः आज शादी, पार्टी में अन्न बर्बाद होता है। अन्नकूट कहता है - अन्न को भगवान मानो, उसे फेंको मत।

घ. गांव और शहर को जोड़नाः गोवर्धन पूजा गांव की पूजा है। शहर में रहकर भी जब हम गोबर से गोवर्धन बनाते हैं, तो हम अपनी जड़ों से जुड़ते हैं।

**7. घर में गोवर्धन पूजा कैसे करें? - सरल विधि**

सुबह -

- घर के आंगन या पूजा स्थान को साफ करें

- गाय के गोबर से गोवर्धन पर्वत की आकृति बनाएं, हाथ में छोटा पर्वत भी बनाएं

- फूल, माला, दीप से सजाएं

**दोपहर -**

- घर में बने अन्न, सब्जी, दूध, दही, मक्खन का भोग लगाएं

- गाय को चारा, गुड़, रोटी खिलाएं

- परिवार के साथ मिलकर आरती करें

**शाम -**

- प्रसाद सबको बांटें

- बचे हुए अन्न को जरूरतमंदों को दें

- पौधा लगाएं, प्रकृति की सेवा का संकल्प लें

**सावधानी** - गोबर से पूजा के बाद हाथ अच्छी तरह साबुन से धोएं। बच्चों को गोबर खाने से बचाएं। अन्न को स्वच्छता से बनाएं।

**8. संपादकीय टिप्पणी** - पहाड़ उठाने वाला हाथ छोटा था, लेकिन भाव बड़ा था परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक का मानना है कि गोवर्धन पूजा केवल एक कथा नहीं है, यह जीवन का दर्शन है।

श्रीकृष्ण ने पर्वत उठाया, लेकिन उन्होंने अहंकार को गिराया।

उन्होंने बताया कि भगवान स्वर्ग में नहीं, तुम्हारे आसपास की प्रकृति में है।

- जो पहाड़ तुम्हें घास देता है, वही भगवान है

- जो गाय तुम्हें दूध देती है, वही भगवान है

- जो अन्न तुम्हें जीवन देता है, वही भगवान है

गोबर, फूल, अन्न से बने गोवर्धन महाराज को देखकर यही लगता है -

हमारे पूर्वजों ने भगवान को मंदिर में कैद नहीं किया, उन्होंने उसे हर घर के आंगन में उतार दिया।

**आज संकल्प लें -**

हम प्रकृति को काटेंगे नहीं, पूजेंगे।

हम अन्न को फेंकेंगे नहीं, बांटेंगे।

हम गाय की सेवा करेंगे, उसका सम्मान करेंगे।

हम अहंकार को गिराएंगे, विनम्रता को उठाएंगे।

क्योंकि जो समाज गोवर्धन को पूजता है, वह कभी भूखा नहीं रहता।

जो समाज अन्न को भगवान मानता है, वह कभी अन्न की कमी से नहीं मरता।

गोवर्धन महाराज की जय हो।

अन्नकूट महाप्रसाद की जय हो।

**- संजय कुमार बाठला, प्रधान संपादक**

# भोग छप्पन, श्रद्धा अपार : दिवाली का अनोखा उपहार


गोवर्द्धन दास बिन्नाणी "राजा बाबू"

हमारे सनातन धर्मानुसार दीपावली के पाँच दिनों तक मनाये जाने वाले त्यौहारों के दौरान अन्नकूट विशेष तौर पर मनाया जाता है।सम्पूर्ण विश्व में हिन्दू धर्म को मानने वाले लोग इस त्यौहार यानि दीवाली को धूम धाम से तो मनाते ही हैं साथ ही साथ अन्नकूट महोत्सव का भी आयोजन विशेष तौर पर सभी जगह पूरे उत्साह ,उमँग व श्रद्धा के साथ गोवर्धन पूजा वाले दिन किया जाता है।इसी कारण ही अन्नकूट दीपावली त्यौहार का एक प्रमुख भाग है। आप सभी के ध्याननार्थ राजस्थान प्रदेश के नाथद्वारा स्थित श्रीनाथजी के मन्दिर में मनाया जाने वाला अन्नकूट महोत्सव पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। अनेक विदेशी इस अन्नकूट महोत्सव के अवलोकनार्थ हर साल नाथद्वारा आते हैं।

जैसा ऊपर उल्लेखित किया है यह अन्नकूट त्यौहार दीवाली या लक्ष्मी पूजा के अगले दिन और भैया दूज से ठीक एक दिन पहले मनाया जाता है। अन्नकूट के त्यौहार में प्रभु श्रीकृष्ण को को छप्पन भोग का प्रसाद चढ़ाया जाता है ।ऐसी मान्यता है कि प्रभु श्रीकृष्ण को खाने में जो-जो सामग्रियाँ पसन्द हैं उन सभी को भोग स्वरुप अर्पित करने से प्रभु श्रीकृष्ण प्रसन्न होते हैं साथ ही भक्तों को मन चाहा वर भी प्राप्त होता है।

अष्ट पहर भोजन करने वाले बालकृष्ण प्रभु को अर्पित किए जाने वाले छप्पन भोग के पीछे की मान्यता अनुसार जब इन्द्र के प्रकोप से सारे व्रज को बचाने के लिए प्रभु श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को उठाया था, तब लगातार सात दिन तक प्रभु ने अन्न जल ग्रहण नहीं किया।आठवें दिन जब प्रभु ने देखा कि अब इन्द्र की वर्षा बन्द हो गई है, तभी सभी व्रजवासियो को गोवर्धन पर्वत से बाहर निकल जाने को कहा।इन सात दिनों तक, दिन में आठ प्रहर भोजन करने वाले व्रज के नन्दलाल कन्हैया का लगातार सात दिन तक भूखा रहना उनके व्रज वासियों के साथ साथ मैया यशोदा के लिए बड़ा ही कष्टप्रद समय रहा। प्रभु के प्रति अपनी अनन्य श्रद्धा भक्ति दिखाते हुए सभी व्रजवासियो सहित यशोदा जी ने सात दिन और अष्ट पहर के हिसाब से ७X८=५६ व्यंजनो का भोग बाल कृष्ण को लगाया।

सामान्यतया छप्पन भोग का मतलब छप्पन वस्तुओं का भोग लगाना समझते हैं जबकि वैष्णवों के यहाँ लगने वाले छप्पन भोग की



निम्नलिखित सूची से स्पष्ट होता है कि छप्पन भोग में पचास प्रकार के भोज्य पदार्थ/पकवान एवं छः तरह के षटरस व्यन्जन का भोग ठाकुर जी को अर्पित किया जाता है -

०१ भक्त/भर्त (भात),
०२ सूप (दाल),
०३ प्रलेह (चटनी),
०४ सदिका (कढ़ी),
०५ दधिशाकज्या (दही शाक की कढ़ी),
०६ सिखरिणी (सिखरन),
०७ अवलेह (शरबत),
०८ बालका (बाटी),
०९ इक्षु खेरिणी (मुरब्बा),
१० त्रिकोण शरा (शर्करा युक्त),
११ बटक (बड़ा),
१२ मधु शीर्षक (मठरी),
१३ केणिका/फेणिका (फेनी),
१४ परिष्टश्च (पूरी),
पारिषितश्च
१५ शतपत्र (खजला),
१६ सधिद्रक (घेवर),
१७ चक्राम (मालपुआ),
१८ चिल्डिका (चोला),
१९ सुधाकुंडलिका (जलेबी),
२० धृतपूर (मेसू),
२१ वायुपूर (रसगुल्ला),
२२ चन्द्रकला (पगी हुई),
२३ दधि (महारायता),
२४ स्थूली (थूली),
२५ कर्पूरनाड़ी (लौंगपूरी),
२६ खंड मंडल (खुरमा),
२७ गोधूम (दलिया),
२८ पारिखा (तवा पुडी),
२९ सुफलाढया (सौंफ युक्त),
३० दधिरूप (बिलसारू),
३१ मोदक (लड्डू),
३२ शाक (साग),
33 सौधान (अधानौ अचार),
३४ मंडका (मोठ),
३५ पायस (खीर)
३६ दधि (दही),
३७ गोघृत,
३८ हैयंगपीनम (मक्खन),
३९ मण्डूरी (मलाई),
४० कूपिका (रबड़ी),
४१ पर्पट (पापड़),
४२ शक्तिका (सीरा),
४३ लसिका (लस्सी),
४४ सुवत/सबूत (मेवा बाटी),
४५ संघाय (मोहन),
४६ सुफला (सुपारी),
४७ सिता (इलायची),
४८ फल,
४९ ताम्बूल, (पान),
५० मोहन भोग (सेन्धा नमक),
५१ लवण (नमकीन पदार्थ),
५२ कषाय (कसैले पदार्थ),
५३ मधुर (मीठे पदार्थ),
५४ तिक्त,तीवत (तीखे पदार्थ),
५५ कटु (कडवे पदार्थ),
५६ अम्ल,अमल (खट्टे पदार्थ)

श्रीवल्लभाचार्य जी के आठ शिष्यों में से एक, भक्ति काल के सगुण भक्ति शाखा के कृष्ण-भक्ति उपशाखा के महान ब्रज भाषा वाले कवि, प्रसिद्ध सन्त, और संगीतकार जन्मांध भक्त सूरदास जी ने अन्नकूट का इस प्रकार बखान किया है-

गोवर्धन सिर तिलक चढ़ायौ,मेटि इंद्र ठकुराइ।अन्नकूट ऐसो रचि राख्यौ,गिरि की उपमा पाइ। —सूर०, १०।८२।२.

आखिर में आप सभी प्रबुद्ध पाठकों को यह बताना चाहता हूँ कि सनातन धर्म की मान्यतानुसार अन्नकूट को मनाने से व्यक्ति को आशीर्वाद स्वरूप लम्बी उम्र के साथ आरोग्य तो मिलता ही है साथ ही साथ देवी अन्नपूर्णा की परिवार पर कृपा हो जाने से को भोजन की कमी का सामना कभी भी नहीं करना पड़ता है।

**गोवर्द्धन दास बिन्नाणी 'राजा बाबू'**
**जय नारायण व्यास कॉलोनी,बीकानेर**

## हत्या मामले में बढ़ी मुश्किलें: कोर्ट में आत्मसमर्पण के बाद जेल भेजे गए पूर्व BJD सांसद



**मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा**

**भूबनेश्वर** : ओडिशा के पूर्व बीजेडी राज्यसभा सांसद एन. भास्कर राव की कानूनी मुश्किलें बढ़ गई हैं। पूर्व पार्षद भागीरथी मलांगी की लंबे समय से लंबित हत्या के मामले में आखिरकार भास्कर राव ने अदालत में आत्मसमर्पण कर दिया है। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश और दो सप्ताह की समयसीमा समाप्त होने के बाद आज उन्होंने रायगढ़ा SDJM कोर्ट में पेश होकर सरेंडर किया। इसके बाद उन्हें जेल भेज दिया गया। जानकारी के अनुसार, 10 दिसंबर 2010 को रायगढ़ा के पूर्व पार्षद भागीरथी मलांगी की हत्या कर दी गई थी। उनका शव आंध्र प्रदेश के एक बांध से बरामद हुआ था। इस हत्याकांड में मृतक के भाई ने एन. भास्कर राव समेत छह लोगों की संलिप्तता का आरोप लगाया था। बाद में यह मामला अदालत तक पहुंचा। बताया जाता है कि भास्कर राव नियमित रूप से अदालत में पेश नहीं हो रहे थे, जिसके कारण मामले की सुनवाई आगे बढ़ाने में परेशानी हो रही थी। गिरफ्तारी से बचने के लिए उन्होंने हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया था, जहां से उन्हें जमानत मिल गई थी। बाद में यह मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा। सुप्रीम कोर्ट ने बार-बार जमानत दिए जाने पर आपत्ति जताते हुए भास्कर राव को SDJM कोर्ट में आत्मसमर्पण करने का निर्देश दिया था। इसके लिए उन्हें दो सप्ताह का समय भी दिया गया था। निर्धारित समयसीमा समाप्त होने के बाद उन्होंने अदालत में आत्मसमर्पण किया, जिसके बाद उन्हें जेल भेज दिया गया।

## स्वस्थ मंत्री इरफान पर सियासी विवाद चरम पर ,भाजपा नेता, मंत्रीओ पर भी काउंटर एफआईआर

### जगन्नाथपुर थाने में एफआईआर कराते कांग्रेस के कार्यकर्ता



**कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड**

**रांची,** स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी को लेकर सियासी विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा है. भाजपा नेताओं द्वारा इरफान अंसारी पर प्राथमिकी दर्ज कराने के बाद अब झारखंड कांग्रेस के नेताओं ने भी जगरनाथपुर थाना में कई भाजपा नेताओं के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराने के लिए आवेदन दिया है. भाजपा नेताओं पर प्राथमिकी दर्ज कराने पहुंचे जेपीसीसी के प्रतिनिधिमंडल का आरोप है कि भाजपा नेताओं की ओर से स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी के खिलाफ लगातार जातिसूचक और अपमानजनक टिप्पणियां की जा रही हैं. उन्हें बांग्लादेशी घुसपैठिया कहकर संबोधित किया गया और उनके बयानों को तोड़-मरोड़कर पेश करके समाज को गुमराह करने की कोशिश की गई है. साथ ही कांग्रेस नेताओं ने भाजपा के नेताओं पर युवाओं को उकसाने का भी आरोप लगाया है. जगन्नाथपुर थाना को दिए आवेदन में जिन नेताओं पर प्राथमिकी दर्ज कर बीएनएस की धाराओं के अनुसार कार्रवाई करने की मांग की गई है. उसमें केंद्रीय मंत्री संजय सेठ, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष आदित्य साहू, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष दीपक प्रकाश, पूर्व मंत्री भानु प्रताप शाही समेत अन्य भाजपा नेताओं के नाम शामिल है. आलोक दुबे, कुमार राजा, सोमनाथ मुंडा और रियाज अंसारी के नेतृत्व में पहुंचे प्रतिनिधिमंडल ने संबंधित नेताओं के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की मांग की है. झारखंड भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष दीपक प्रकाश ने शुक्रवार 06 नवंबर को रांची के अरगोड़ा थाना में राज्य के स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी के खिलाफ शिकायत देकर एफआईआर दर्ज करने की मांग की थी. इस शिकायत में मंत्री पर देश की संप्रभुता, एकता और अखंडता को खतरे में डालने, विभिन्न समूहों के बीच वैमनस्य बढ़ाने, आपराधिक धमकी देने और शांति भंग करने के इरादे से बयान देने का आरोप लगाया था. दीपक प्रकाश की ओर से किये गए शिकायत में कहा गया कि इरफान अंसारी ने 5 नवंबर 2026 को एक वीडियो जारी कर सार्वजनिक तौर पर दावा किया कि 40 लाख युवा सड़कों पर उतरने के लिए तैयार हैं।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

# आज का साइबर सुरक्षा विचारः हर मोबाइल उपयोगकर्ता को सतर्क रहना चाहिए


पिंकी कुंडू

सुरक्षित स्मार्टफोन ही साइबर अपराधों के विरुद्ध आपकी पहली रक्षा पंक्ति है।

स्मार्टफोन आज हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं। इनमें हमारी व्यक्तिगत, वित्तीय तथा व्यावसायिक जानकारी संग्रहीत रहती है। लेकिन यही कारण है कि दुनिया भर में साइबर अपराधियों के लिए स्मार्टफोन सबसे आसान और संवेदनशील लक्ष्य बनते जा रहे हैं। Every Mobile May Be At Risk Of Cyber Attack शीर्षक से प्रकाशित एक समाचार रिपोर्ट के अनुसार, Hyderabad Police ने चेतावनी दी है कि साइबर अपराधी दुर्भावनापूर्ण ऐप्स (Malicious Apps), स्पाइवेयर तथा फिशिंग अभियानों के माध्यम से संवेदनशील जानकारी चुराने और वित्तीय धोखाधड़ी करने का प्रयास कर रहे हैं।

स्मार्टफोन पर प्रमुख साइबर खतरे

1. मालवेयर (Malware)

मालवेयर ऐसे दुर्भावनापूर्ण एप्लिकेशन होते हैं जो उपयोगी टूल के रूप में दिखाई देते हैं, लेकिन इनका उद्देश्य आपकी व्यक्तिगत जानकारी चुराना, भ्रामक विज्ञापन दिखाना या आपके डिवाइस की सुरक्षा को कमजोर करना होता है। अज्ञात या अनधिकृत स्रोतों से APK फाइल डाउनलोड करने से मालवेयर संक्रमण का खतरा काफी बढ़ जाता है।

2. स्पाइवेयर (Spyware)

स्पाइवेयर एक ऐसा खतरनाक सॉफ्टवेयर है जो उपयोगकर्ता की जानकारी के बिना उसकी गतिविधियों पर निगरानी रखता है। यह संदेश, संपर्क सूची, फोटो, लोकेशन, ब्राउज़िंग हिस्ट्री और अन्य संवेदनशील जानकारी तक पहुँच प्राप्त कर सकता है।

3. फिशिंग (Phishing)

साइबर अपराधी बैंक खाते, पार्सल डिलीवरी, पुरस्कार जीतने या अकाउंट सत्यापन से संबंधित फर्जी संदेश भेजते हैं। इन संदेशों में दिए गए लिंक नकली वेबसाइटों पर ले जाते हैं, जहाँ उपयोगकर्ता के पासवर्ड, OTP और बैंकिंग




विवरण चोरी कर लिए जाते हैं।

सुरक्षित रहने के 07 साइबर सुरक्षा उपाय

1. ऑटो-डाउनलोड बंद रखें

अपने मोबाइल में मीडिया फाइलों और एप्लिकेशनों का स्वचालित डाउनलोड बंद रखें, ताकि कोई संदिग्ध या दुर्भावनापूर्ण सामग्री स्वतः इंस्टॉल न हो सके।

2. केवल आधिकारिक ऐप स्टोर से ही ऐप डाउनलोड करें

हमेशा Google Play Store या Apple App Store जैसे विश्वसनीय प्लेटफॉर्म से ही एप्लिकेशन डाउनलोड करें।

3. अज्ञात स्रोतों से APK फाइल इंस्टॉल न करें

मैसेज, ईमेल, सोशल मीडिया या किसी अविश्वसनीय वेबसाइट से प्राप्त APK फाइलों को कभी इंस्टॉल न करें।

4. OTP, पासवर्ड या बैंकिंग जानकारी कभी साझा न करें

कोई भी बैंक, सरकारी एजेंसी या सेवा प्रदाता फोन कॉल, संदेश या ईमेल के माध्यम से OTP या पासवर्ड नहीं मांगता।

5. किसी लिंक पर क्लिक करने से पहले उसकी जांच करें

अज्ञात या संदिग्ध स्रोतों से प्राप्त लिंक को खोलने से पहले उसकी प्रामाणिकता अवश्य जांचें।

6. मोबाइल ऑपरेटिंग सिस्टम और ऐप्स को अपडेट रखें

नियमित सुरक्षा अपडेट आपके मोबाइल को नई कमजोरियों और साइबर खतरों से सुरक्षित रखते हैं।

7. विश्वसनीय मोबाइल सुरक्षा समाधान का उपयोग करें

अपने डिवाइस में भरोसेमंद एंटीवायरस और मोबाइल सुरक्षा सॉफ्टवेयर इंस्टॉल करें तथा उन्हें नियमित रूप से अपडेट रखें।

याद रखें

क्लिक करने से पहले सोचें।

भरोसा करने से पहले सत्यापन करें।

साइबर अपराधियों के निशाना बनाने से पहले अपने मोबाइल को सुरक्षित करें

साइबर जागरूक बनें

सुरक्षित रहें डू दूसरों को भी जागरूक करें।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023